7·3 v2

दि-सन्धि—कोई भी स्वर परे आने पर ए को ऐ को आय्, ओ को अव् और औ को आव् हो जाता अयादि-सन्धि कहा जाता है । जैसे:—हरे+ हरयिह । विष्णो+इह=विष्णविह । नै+अकः= ः । गुरौ+उत्सुकः=गुरावुत्सुकः ।

(१) द्विवचन के ई, ऊ, ए के स्थान में और अमी ...ा अमू के ई, ऊ के स्थान में कभी कोई सन्धि नहीं होती जैसे :—मुनी एतौ । गुरू इमौ । बाले इमे । अमी अत्र । अमू अत्र ।

(२) यदि पहले पद के अन्त में 'अ' अथवा 'ओ' हो और इसके परे ह्रस्व 'अ' हो तो अयादि सन्धि ... अपितु परे का ह्रस्व अ ही उड़ जाता है और ... पहचान के लिये ए, ओ के बाद (ऽ) ऐसा चिह्न ... जाता है । जैसे :—हरे+अव=हरेऽव । को+अत्र= कोऽत्र

(३) स्वर-सन्धियों में और भी कुछ सन्धियां होती हैं जो अप्रसिद्ध और अनावश्यक होने के कारण नहीं लिखी गईं ।

अभ्यास

सन्धिच्छेद कीजिए :—

प्रतीक्षा । महाशयः । मही...

वध्वागमनम् । जनौघः । श्रियायाकांक्षा । दयानन्दः । दध्यत्र । परमेश्वरः ।

सन्धि कीजिए :—

दिल्ली + ईश्वरः । लता + इव । सती+आगता । वन+औषधिः । गो+आनयनम् । मधु+आनय । नर+ईश ।

व्यञ्जन सन्धि

दो व्यञ्जनों के संयोग से दो व्यञ्जनों में या एक व्यञ्जन में कुछ विकार हो जाता है । कभी कभी स्वर परे होने पर भी व्यञ्जन में कुछ विकार हो जाता है । कहीं कहीं किसी भी व्यञ्जन [illegible] विकार न होकर स्वर और व्यञ्जन के बीच में एक नया ही [illegible] आ जाता है । इस प्रकार व्यञ्जन के विकार को [illegible] सन्धि कहते हैं । व्यञ्जनों का ही दूसरा नाम हल् है, इस लिये व्यञ्जन-सन्धि को हल् सन्धि भी कहते हैं ।

इस के कई भेद हैं; परन्तु मुख्य मुख्य यहां बतलाये जाते हैं ।

(१) क्, च्, ट्, त्, प् को स्वर, अन्तस्थ, अथवा किसी भी वर्ग का तीसरा, चौथा अक्षर परे आने पर अपने [illegible]ने वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है, जैसे :—

[illegible] [illegible]रे होने पर :—प्राक्+उक्तम्=प्रागुक्तम् ।

[illegible] [illegible]नः । विराट्+अयम्=विरा-

इयम्, तत्+इच्छति=तदिच्छति। ककुप्+ईशः
=ककुबीशः —

(ख) अन्तस्थ या ह परे होने पर :—सुवाक्+याति=
सुवाग् याति। अच्+रहितः=अज् रहितः। सम्राट्+
लक्षितः=सम्राड्लक्षितः। जगत्+विजयी=जगद्
विजयी। अप्+लाभः=अब्लाभः।

(ग) तीसरा या चौथा अक्षर परे होने पर :—दिक्+
गजः=दिग्गजः। तत्+भाति=तद्भाति।

(२) क् च् ट् त् प् के परे ह के आने पर ह को पहले वर्ण के
वर्ग का चौथा अक्षर हो जाता है और पहले अक्षर को
अपने वर्ग का तीसरा अक्षर हो जाता है। जैसे, प्राक्+
हसति=प्राग्घसति। तत्+हितम्=तद्धितम् इत्यादि।

(३) पद के अन्त में आये 'म्' को व्यञ्जन परे होने पर
अनुस्वार होता है। जैसे—देशम्+रक्षति=देशं रक्षति

(४) (क) अनुस्वार से परे किसी भी वर्ग का पहला, दूसरा,
तीसरा, चौथा अक्षर होने पर अनुस्वार को आगे आने
वाले वर्ण के वर्ग का पांचवां अक्षर हो जाता है।

जैसे—व्यायामं+कुरु=व्यायामङ्कुरु। देशं+भज=
देशम्भज।

स्मरणीय—एक ही पद के भीतर अनुस्वार अशुद्ध होता
है। जैसे—गंगा, कंठ, पंडित, कांति। इनके स्थान में

गङ्गा, कण्ठ, पण्डित, कान्ति, इसी प्रकार शुद्ध होता है।

(५) त् अथवा न् से ल परे होने पर त् या न् को भी ल् हो जाता है। जैसे—तत् + लाभः = तल्लाभः। परन्तु इस में न् को अनुनासिक ल् (लँ) होता है। जैसे—महान् + लोभः = महाल्ँ लोभः।

(६) म या न के परे होने पर पहले के व्यञ्जन को अपने वर्ग का पाँचवां अक्षर विकल्प से होता है।
जैसे—उत् + मत्तः = उन्मत्तः। प्राक् + नमति = प्राङ् नमति।

(७) स् से श अथवा चवर्ग परे हो तो 'स्' को 'श्' हो जाता है। जैसे—रामस् + शेते = रामश्शेते। हरिस् + चकार = हरिश्चकार। इसी प्रकार तवर्ग से परे श या चवर्ग होने पर तवर्ग को चवर्ग हो जाता है। जैसे—तन् + शक्नोति = तच्शक्नोति। तत् + चित्रम् = तच्चित्रम्।
स्मरणीय—इन दोनों प्रकार की सन्धियों का एक ही नाम श्चुत्व संधि है।

(८) छत्व संधि—तवर्ग से परे श को छ् हो जाता है और इस से पूर्व तवर्ग को साथ ही चवर्ग हो जाता है। जैसे:—
अस्मत् + शत्रुः = अस्मच्छत्रुः। तत् + श्रुत्वा = तच्छ्रुत्वा

(९) (क) स् से ष् अथवा टवर्ग परे होने पर स् को ष् होता है। जैसे—ग्रामस् + षष्ठः = ग्रामष्षष्ठः। देवस् + टीकते = देवष्टीकते।

(ख) तवर्ग से परे टवर्ग आने पर तवर्ग को भी (संख्या क्रम से)

टवर्ग हो जाता है। जैसे—तत्+टीका=तट्टीका। उद्+डीयते=उड्डीयते।

(१०) ह्रस्व स्वर से अथवा पदान्त में दीर्घ स्वर से परे छ आने पर छ से पूर्व च् आ जाता है। जैसे—वृक्ष+छाया=वृक्षच्छाया। लता+छाया=लताच्छाया।

स्मरणीय—ह्रस्व स्वर से परे छ आने पर अवश्य और दीर्घ स्वर से परे छ आने पर अपनी इच्छा से छ से पूर्व च् जोड़ा जायेगा।

(११) ह्रस्व स्वर से परे न् हो और उस से परे कोई भी स्वर हो तो न् को द्वित्व हो जाता है। जैसे—पठन्+आसते=पठन्नासते।

(१२) पद के अन्त के न् को च्, छ्, ट्, ठ्, त्, थ् परे होने पर अनुस्वार अथवा अनुनासिक हो जाता है और क्रम से च्, छ् से पूर्व नया श् और ट्, ठ् से पूर्व नया ष् तथा त् थ् से पूर्व नया स् आ जाता है। जैसे—तान्+चतुरान्=तांश्चतुरान् अथवा ताँश्चतुरान्। सुचरितान्+छात्रान्=सुचरितांश्छात्रान् अथवा सुचरिताँश्छात्रान्। महान्+टङ्कारः=महांष्टङ्कारः अथवा महाँष्टङ्कारः।

(१३) व्यञ्जन र् से र् परे होने पर पहले र् का लोप होता है और उससे पूर्व स्वर को दीर्घ होता है। जैसे निर्+रसम्=नीरसम्। अन्तर+राष्ट्रम्=अन्ताराष्ट्रम्। विधुर+राजते=विधूराजते।

स्मरणीय—ह्रस्व अ से परे प्रायः अव्ययों के र् का ही लोप होता है।

णत्व विधान

(१३) (क)—र् ष् अथवा ऋ ॠ से परे एक ही पद में यदि न आ जाये और बीच में किसी भी अक्षर का व्यवधान (अन्तर) न हो तो न को ण—ण् हो जाता है। जैसे—चतुर्+नाम=चतुर्णाम्। कृष्+नः=कृष्णः। ऋ+नम्=ऋणम्।

(ख) र् ष् ऋ ॠ इनके आगे और न के बीच यदि कोई स्वरवर्ण, कवर्गीय वर्ण, पवर्गीय वर्ण, अनुस्वार अथवा य् व् ह् इन में से कोई वर्ण बैठा भी हो या मिलकर इनमें से दो तीन वर्ण बैठे भी हों तब भी न् को ण हो जाता है। जैसे—रामेण। वर्ष्मणा। ब्रह्मण्यम्। कार्पण्यम्। रुग्णः। वृष्णः।

स्मरणीय—(क) पद के अन्त के न को ण् नहीं होता। जैसे—रामान्, नरान् नृन्, पितृन्।

(ख) र् ष् या ऋ ॠ पहले पद में हो और न दूसरे पद में हो तो भी न् को ण् नहीं होगा। जैसे राम+नाम =रामनाम। पुरुष+नायकः=पुरुषनायकः।

(ग) चवर्ग, टवर्ग, तवर्ग, ल, श, स इन में से किसी वर्ण का व्यवधान (अन्तर) होने पर न् को ण् नहीं होगा। जैसे—कर्त्तनम, अर्चना, रसेन।

षत्व विधान

(१४) आकार से अतिरिक्त कोई स्वर, य्, र्, ल्, व्, ह्,

और कवर्ग से परे प्रत्यय के स् को ष् हो जाता है।

जैसे—हरि+सु=हरिषु । रामे+सु=रामेषु । चतुर+सु =चतुर्षु ।

अभ्यास

(१) सन्धिच्छेद कीजिए:—

तदस्मि, मनागिदम्, प्राग्भारः, जगदीशः, परिव्राडयम्, विद्वद्दया, सम्पद्दर्पः, मातरं वन्दे, फलम्भक्षयति, तन्मयम्, अवाङ्मुखः, सञ्चरति; विद्युच्छक्तिः; विपच्चक्रम्; विपच्छाया; देवप्षोडशः; धनुष्टङ्कारः उड्डीनः; राजच्छत्रम्, जगन्नाथः, कस्मिंश्चित्, विद्वच्छासकः, बलवांष्टङ्कः, गच्छंस्तीर्णः, अरी राजा, तदपि, तदापि, तदिव, तदेव, तदैव।

(२) सन्धि कीजिये—

वाक्+इयम्, तत्+इदम्, सम्यक्+उक्तम, पतत्+इदम्' सम्राट्+अग्रे, विद्वन्+दर्शनम्, नृत्यत्+हस्ती, रामम्+सेवते, देवं+भजते, तत्+मात्रम्, प्राक्+मुखः, देवस्+शक्तः. पुनस्+चिरम्, विपत्+शोधनम्, सम्पत्+चारः, भवत्+शरणम् तमस्+टंकणम्, तस्य+छेकः, गच्छत्+अस्ति, तान्+चकार, पतिर्+राजा, विद्वान्+तस्मै, शास्त्रा+नि, देवे+सु, वि+समम्।

विसर्ग सन्धि

किसी वर्ण के पीछे आने वाले दो बिन्दुओं को विसर्ग ...ते हैं। इन बिन्दुओं के स्थान में किसी स्वर या व्यञ्जन के

संयोग से जो विकार होता है, वह **विसर्ग-सन्धि** कहलाता है। इस के मुख्य **चार** भेद हैं :—

(१) ओत्व सन्धि (२) लोप सन्धि (३) ऊष्म सन्धि और (४) रेफ सन्धि।

१. ओत्व सन्धि के दो प्रकार हैं :—

(क) विसर्ग के आगे पीछे ह्रस्व 'अ' आने पर विसर्ग को 'ओ' हो जाता है और आगे पीछे के दोनों 'अ' उड़ जाते हैं। जैसे—जवाहरलालः+अवदत्=जवाहरलालोऽवदत्। सः+अत्र =सोऽत्र। पटेलः+अयम्=पटेलोऽयम्॥

स्मरणीय—इस सन्धि में लुप्त हुए परले 'अ' की स्मृति के लिये (ऽ) ऐसा चिह्न उसके स्थान में लगा देने का क्रम है, जो अत्यन्त आवश्यक नहीं।

(ख) पूर्व ह्रस्व 'अ' हो और आगे किसी भी वर्ग के तीसरे, चौथे, पांचवें अक्षर अथवा य्, र्, ल् व् ह् आएं तो बीच के विसर्ग को 'ओ' हो जाता है। जैसे—राजेन्द्रः+भाषते=राजेन्द्रो भाषते। मालवीयः+ययौ=मालवीयो ययौ। सीतारामः+हसति= सीतारामो हसति।

स्मरणीय—सदा ह्रस्व 'अ' से परे के विसर्ग को ही 'ओ' होता है।

(२) लोप सन्धि—

(क) ह्रस्व अ से परे भिन्न स्वर आने पर और दीर्घ आ से परे कोई भी स्वर या वर्गों के तीसरे, चौथे, पांचवें वर्ण तथा य्, र्, ल्, व्, ह् आने पर बीच के विसर्ग का लोप

हो जाता है, जैसे—शंकरदेव+आयाति=शंकरदेव: आयाति। रवीन्द्र:+इह=रवीन्द्र इह। नरा:+आयान्ति=नरा आयान्ति। जना:+गच्छन्ति=जना गच्छन्ति। पण्डिता:+यान्ति=पण्डिता यान्ति।

स्मरणीय— यह लोप स् के विसर्ग का होता है। र् के विसर्ग को कोई भी वर्ण परे आने पर प्राय: फिर र् ही हो जाता है।

जैसे—प्रात:+आयाति= प्रातरायाति। पुन:+गच्छति =पुनर्गच्छति।

(ख) स: और एष: के विसर्ग का भी व्यञ्जन परे आने पर सदा लोप हो जाता है। जैसे—स:+रमते=स रमते। एष:+ गच्छति=एष गच्छति।

(३) ऊष्म सन्धि :—

विसर्ग को च, छ, श परे आने पर श् हो जाता है।
विसर्ग को ट, ठ, ष परे आने पर ष् हो जाता है।
विसर्ग को त, थ, स परे आने पर स् हो जाता है।

इसको ऊष्म सन्धि कहते हैं। जैसे—लोक:+चतुर:= लोकश्चतुर:। पण्डित:+टीकते=पण्डितष्टीकते। मृग:+ तरति=मृगस्तरति। रोग:+शत्रु:=रोगश्शत्रु। अनित्य: +संसार:=अनित्यस्संसार:।

स्मरणीय—श, ष, स, परे आने पर विसर्ग को श् ष् स् विकल्प से होता है।

(४) रेफ सन्धि—

'अ', 'आ' से भिन्न किसी भी स्वर से परे विसर्ग को र् हो जाता है। यदि परे वर्गों के तीसरे, चौथे, पांचवें अक्षर अथवा य, र, ल, व और ह हों।

जैसे—कविः+आयाति=कविरायाति, शम्भुः+गच्छति=शम्भुर्गच्छति।

स्मरणीय——क; ख; प; फ; परे होने पर सदा विसर्ग ही रहते हैं। उन्हें कोई विकार नहीं होता।

अभ्यास

(१) सन्धिच्छेद कीजिए :—

रामोऽत्र; देवोऽयम; धर्मो विजयते; पुनश्च; सुन्दरोजन; राम आशङ्कते; जवाहर आद्रियते; राजपुत्रा इमे, बाला गच्छन्ति; देशभक्ता विजयन्ते; स वदति; एष राजा; इतस्ततः; प्रायश्चित्तम्; हरिश्शङ्करोतु; देवस्सर्वतः; देवस्तीर्णः। हरिर्जयति। प्रभुराज्ञापयति। मनोरथः; मनोहरः; मनोविनोदः; यशोदा।

(२) सन्धि कीजिये—

जनः+असौ; देशभक्तः+अयम राघवेन्द्रः+युध्यते; सुभाषः+व्यजयत; बालाः+आगच्छन्ति; [illegible]यकाः+इमाः; देवाः+उपरि; पण्डिताः+विदन्ति; सः+[illegible]ात; एषः+देवः; प्रभोः+शरणम्; प्रणामाः+सन्तु; [illegible]भः+तनोति प्रभुः+वदति। तैः+अपि; निः+रसः; [illegible]र; दुः+गमः; निः+[illegible]; निः+चलः; दुः+[illegible] [illegible]नः+बलः,

भानुः+जीवयति, शत्रुः+चलति ।

(३) शुद्ध कीजिए—रामो करोति शङ्करो पठति, पितरो आगच्छन्ति, गृहारिमे, मनुष्यार्गच्छन्ति, सो पठति, एषो नमति ।

द्वितीय खण्ड

प्रथम अध्याय

शब्द परिचय

जो सुनने में आये, उसे ध्वनि कहते हैं। बोलने की भाषा ऐसी बहुत सी ध्वनियों के मेल से ही बनती है। बोलने में जिन२ मूल-ध्वनियों का उच्चारण होता है, लिखने में उन २ का परिचय कराने के लिये कुछ चिह्न या संकेत नियत हैं, जिन्हें वर्ण या अक्षर कहते हैं। ऐसी ही एक या अनेक ध्वनियों के अथवा वर्णों के मेल से जो रूप बन जाता है वह "शब्द" कहलाता है। जैसे—'राम' शब्द र्, आ, म् अ, इन चार मूल-ध्वनियों या वर्णों के मेल से बना है।

ये शब्द दो प्रकार के होते हैं, (१) सार्थक शब्द, (२) निरर्थक शब्द।

(१) काश्मीर, जम्मू, दिल्ली, जवाहर आदि का कुछ अर्थ है अतः ये सार्थक शब्द हैं।

(२) बिल्ली की म्याऊँ म्याऊँ या कौवे के कांव कांव का कुछ अर्थ नहीं है, अतः ऐसे शब्द निरर्थक शब्द हैं।

व्याकरण का विषय सार्थक शब्द ही होते हैं, अतः इस व्याकरण में भी 'सार्थक शब्द' का ही वर्णन किया जायेगा।

संस्कृत भाषा के मुख्य शब्द तीन ही प्रकार के हैं (१) सुवन्त (२) तिङन्त और (३) अव्यय। तिङन्त और अव्यय का वर्णन आगे किया जायेगा। अभी सुवन्त शब्दों के रूप बताए जाते हैं।

सुबन्त प्रकरण

सुबन्त शब्द तीन प्रकार के होते हैं। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण।

जवाहर लाल, गोपाल स्वामी; इन्द्रप्रस्थ, काश्मीर, ये किसी के नाम हैं। ऐसे शब्द जो किसी का नाम हों, संज्ञा शब्द होते हैं, अर्थात् जिस शब्द से किसी वस्तु, गुण या जगह का बोध हो, उसे संज्ञा कहते हैं।

हम, तुम, वह आदि के वाचक अस्मद्, युष्मद्, तद् आदि शब्दों को सर्वनाम कहते हैं। इनका वर्णन आगे आएगा। गुण, कर्म आदि के वाचक रक्तः पीतः मधुरः, मूर्खः, चञ्चलः, आदि शब्द विशेषण कहलाते हैं। इनका भी सविस्तार वर्णन आगे किया जाएगा।

विशेषण शब्दों के साथ कुछ और ध्वनि या ध्वनियां जोड़ने पर और उन शब्दों में कुछ विकार आने पर एक नए प्रकार के संज्ञा शब्द बन जाते हैं। इनको भाव वाचक संज्ञा शब्द कहते हैं। जैसे स्वतन्त्रस्य भावः = स्वातन्त्र्यम्। मधुरस्य भावः = माधुर्यम्, सरलस्य भावः = सरलता। मूर्खस्य भावः = मूर्खत्वम्। लघोः भावः = लघिमा इत्यादि।

अभ्यास

(१) शब्द किसे कहते हैं ?

(२) शब्द कितने तरह के होते हैं ?

(३) संस्कृत शब्द के मुख्य भेद कितने हैं ?

(४) भाववाचक संज्ञा किसे कहते हैं ।

लिंग

कृष्णः (गीता का उपदेशक, अर्जुन का मित्र), कृष्णा (द्रौपदी पाण्डवों की भार्य्या), कृष्णं वस्त्रम् (काला कपड़ा) इन तीन स्थानों में एक ही कृष्ण शब्द के तीन विभिन्न रूप हो गये हैं। पहले रूप में यह शब्द एक पुरुष को जतलाता है, दूसरे रूप में एक स्त्री को और तीसरे रूप में एक ऐसी चीज़ को जो न तो पुरुष है न स्त्री। पुरुष स्त्री या उन दोनों से विलक्षण किसी चीज़ को कहने के कारण ही एक कृष्ण शब्द के तीन अलग २ रूप हो गये हैं।

जब कोई शब्द पुरुष को जतलाए तब उस के उस रूप को पुँल्लिङ्ग कहते हैं। जब किसी स्त्री को जतलाए तब उसे स्त्रीलिङ्ग कहते हैं। जब दोनों से अलग किसी चीज़ को जतलाए तो उसे नपुँसक लिङ्ग कहते हैं।

संस्कृत भाषा का हर एक शब्द-(अव्यय और तिङन्तों के विना) किसी न किसी लिङ्ग में अवश्य रहता है और उस २ लिङ्ग के अनुसार उस के रूपों में बहुत परिवर्तन हो जाता है। परन्तु संस्कृत भाषा के बहुत से शब्दों में लिङ्ग की पहिचान के लिए ऊपर लिखे लक्षण पूरे नहीं उतरते। इस भाषा में एक शब्द स्त्रीवाचक होने पर भी पुँल्लिङ्ग अथवा नपुंसकलिङ्ग हो जाता है।

जैसे—'दार' शब्द स्त्री वाचक होने पर भी पुँल्लिङ्ग और 'कलत्र' शब्द नपुंसकलिङ्ग माना जाता है।

अतः संस्कृत भाषा में लिङ्ग का निश्चय करने के लिए कोई निश्चित नियम नहीं है। प्रयोग के अनुसार ही शब्द के लिङ्ग का निश्चय कर लेना पड़ता है। क्योंकि शब्द अपने प्रयोग-सम्बन्धी स्वभाव से ही विशेष लिङ्ग का होता है।

विभक्ति

'वृक्षौ फलतः' (दो वृक्ष फलते हैं) इस वाक्य में 'वृक्ष' नाम और फल' धातु है। 'वृक्ष' नाम से परे 'औ' और 'फल' धातु से परे 'तः' आ गया है। ये दोनों विभक्तियां हैं। संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, अव्यय इन सब को प्रातिपदिक कहते हैं। इन प्रातिपदिकों के परे और धातु से परे जो औ, तः आदि शब्दांश आ जाते हैं, उन्हीं का नाम विभक्ति है।

विभक्तियां सुप् और तिङ् नाम से दो तरह की होती

हैं। संज्ञा, सर्वनाम और विशेषण, इन तीनों तरह के प्रातिपदिकों से परे जो विभक्तियां आती हैं, उन्हें 'सुप्' विभक्तियां कहते हैं और धातु से परे जो विभक्तियां आती हैं वे तिङ् विभक्तियां कहलाती हैं। तिङ् विभक्तियों का आगे वर्णन किया जायेगा। सुप' विभक्तियां **आठ** प्रकार की हैं। जैसे—

१ प्रथमा २ द्वितीया ३ तृतीया ४ चतुर्थी
५ पञ्चमी ६ षष्ठी ७ सप्तमी ८ सम्बोधन

वचन 'नर' (एक मनुष्य) 'नरौ' (दो मनुष्य) 'नराः' (बहुत से मनुष्य)—यहां एक ही 'नर' शब्द अलग २ रूपों में हो कर एक, दो या बहुत मनुष्यों को जतलाता है। इस तरह जिस रूप में शब्द एक, दो या बहुत को जतलावे उसे वचन कहते हैं। एक को जतलाने वाला **एकवचन**, दो को जतलाने वाला **द्विवचन** और बहुतों को जतलाने वाला **बहुवचन** होता है।

१. संस्कृत भाषा में भी शब्द बिना विभक्ति के बोला या लिखा नहीं जाता। इसलिए अव्ययों के बाद भी विभक्ति अवश्य लानी पड़ती है. परन्तु बाद में उस का लोप या लुक् हो जाता है। अतः अव्यय भी वस्तुतः सुबन्तों ही के भीतर गिने जा सकते हैं। इस तरह वस्तुतः संस्कृत शब्द दो ही प्रकार के हैं। (१) सुबन्त और (२) तिङन्त। और भी कई शब्दों के बाद विभक्ति का लोप हो जाता

है। जैसे—राजा दधि मधु बाला।

२. सम्बोधन को प्रथमा विभक्ति की ही एक किस्म होने पर भी सुविधा के विचार से अलग गिना गया है।

प्रथमा, द्वितीया आदि सभी विभक्तियों में ये तीनों वचन होते हैं। इस प्रकार सभी विभक्तियों के तीन भेद हो जाते हैं❀।

विभक्तियों के मूल रूप अर्थ

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन	अर्थ
प्रथमा	स्	औ	अस्	० ० ०
द्वितीया	अम्	औ	अस्	को
तृतीया	आ	भ्याम्	भिस्	से, द्वारा
चतुर्थी	ए	भ्याम्	भ्यस्	को, के लिए, वास्ते
पञ्चमी	अस्	भ्याम्	भ्यस्	से
षष्ठी	अस्	ओस्	आम्	का, के, की
सप्तमी	इ	ओस्	सु	में, पर
सम्बोधन	स्	औ	अस्	हे, रे, (ये शब्द के पूर्व लगते हैं)

❀अध्यापकों से निवेदन है कि उदाहरणों द्वारा ही विभक्तियों का बोध कराएँ, खालिस विभक्तियों का शिक्षण न करें।

स्मर्तव्य—ये विभक्तियों के मूल (स्थूल) हैं। लिङ्ग के अनुसार या शब्द के अनुसार इन में परिवर्तन भी हो जाता है जो समय समय पर बताया जाएगा।

कारक

'देव! रामः धर्माय हस्तेन विप्राय यज्ञे गृहात् स्वां गां ददाति' (हे देव! राम धर्म के लिए हाथ से ब्राह्मण को यज्ञ में घर से अपनी गौ दे रहा है)

ऊपर के वाक्य में "ददाति" क्रिया है, जिस का अर्थ "देता है" है और बाकी सभी शब्दों का इसी से सम्बन्ध है। जैसे कौन देता है? रामः—(कर्त्ता)। किस से देता है? हाथ से (करण)। किस को देता है? ब्राह्मण को (सम्प्रदान)। किस के लिए देता है? धर्म के लिए (सम्प्रदान)। किस में देता है? यज्ञ में (अधिकरण)। कहां से देता है? घर से (अपादान)। क्या देता है? गौ (कर्म)।

इस प्रकार जिन शब्दों का अपने अर्थ द्वारा क्रिया के साथ सम्बन्ध हो, अथवा जो शब्द क्रिया की जिज्ञासा या प्रश्न को पूरा करें, उन्हें 'कारक' कहते हैं। इन का विभक्तियों के साथ गहरा सम्बन्ध है, अतः विभक्तियों के साथ साथ इनका जानना जरूरी है।

कारक छः होते हैं। १ कर्ता, २ कर्म, ३ करण, ४ सम्प्रदान ५ अपादान, ६ अधिकरण।

१ कर्ता—जो किसी काम को करे। ऊपर के वाक्य में राम दे रहा है, अतः वह कर्ता है। कर्ता में प्रायः प्रथमा विभक्ति आती है।

२ कर्म—काम के द्वारा जिसे किया जाये अर्थात् जिस पर क्रिया का असर हो, या जिस पर क्रिया का फल पड़े। गौ दी गई, उस पर 'देना' क्रिया का असर पड़ा, अतः वह (गौ) कर्म कारक है। कर्म कारक में प्रायः द्वितीया विभक्ति आती है।

३ करण—जिसके द्वारा क्रिया की जाए अर्थात् जो क्रिया का साधन हो। हाथ से गौ दी गई, अतः हाथ करण कारक है। करण कारक में तृतीया विभक्ति आती है।

४ सम्प्रदान—जिसको कोई चीज़ दी जाये। ब्राह्मण को गौ दी गई, अतः 'ब्राह्मण' सम्प्रदान कारक है। जिसके लिये काम किया जाए उसे भी सम्प्रदान कहते हैं। जैसे 'धर्माय' सम्प्रदान कारक है। सम्प्रदान कारक में चतुर्थी विभक्ति आती है।

५ अपादान—जिससे कोई भी चीज़ अलग हो। घर से गौ अलग हुई, अतः घर 'अपादान' कारक है। इस में पंचमी विभक्ति आती है।

६ अधिकरण—जिस में (जहां) क्रिया की जाए। यज्ञ में गौ दी गई, अतः यज्ञ 'अधिकरण' कारक है। इस में सप्तमी विभक्ति आती है।

इस प्रकार ६ विभक्तियां ऊपर लिखे अनुसार ६ कारकों में देती हैं। षष्ठी विभक्ति दो चीज़ों का आपस में सम्बन्ध बताती है।

जैसे स्वस्य (रामस्य) गौः। अपनी (राम की) गौ, इस में राम और गौ का सम्बन्ध मालूम होता है। षष्ठी का क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं होता, अतः षष्ठी कारक विभक्ति नहीं, इसे सम्बन्ध विभक्ति कहते हैं।

इसी प्रकार सम्बोधन विभक्ति केवल किसी को बुलाने के काम में आती है। इसका भी क्रिया के साथ सम्बन्ध नहीं होता, अतः यह भी कारक विभक्ति नहीं है।

स्पष्टता के लिए कारक में कौन सी विभक्ति आती है और उसका क्या अर्थ होता है, यह बात चित्र द्वारा समझाई जाती है—

कारक	विभक्ति	अर्थ
१. कर्ता	प्रथमा	ने
२. कर्म	द्वितीया	को
३. करण	तृतीया	द्वारा
४. सम्प्रदान	चतुर्थी	के लिये (को)
५. अपादान	पञ्चमी	से
६. सम्बन्ध	षष्ठी	का, के, की
७. अधिकरण	सप्तमी	में, पर
८. सम्बोधन	प्रथमा	रे, अरे, ओ

स्मर्तव्य—विभक्ति के अर्थों में तृतीया और पञ्चमी दोनों का 'से' अर्थ बताया जाता है। इन में सन्देह उत्पन्न होता है कि किस 'से' में तृतीया और किस 'से' में पञ्चमी करें, अतः स्मरण रखना चाहिए कि जिसके ज़रिये कोई काम होता हो उस 'से' में तृतीया विभक्ति आती है, जैसे—हाथ से देता है; तो हाथ में तृतीया (हस्तेन ददाति)। जहां एक चीज़ का दूसरी चीज़ से अलग होना पाया जाये, उस 'से' में पञ्चमी आती है। जैसे—वृक्ष से पत्ता गिरता है; तो वृक्ष के साथ पञ्चमी आयेगी (वृक्षात्पत्रं पतति)। इसी प्रकार द्वितीया के 'को' का और चतुर्थी के 'को' का भी अन्तर स्मरण रखना चाहिए। जैसे—जिस में क्रिया का फल पैदा हो; उस 'को' वाले शब्द में द्वितीया। 'काष्ठं छिनत्ति' (लकड़ी को चीरता है)। जिस को कोई वस्तु दी जाए उस 'को' में चतुर्थी (विप्राय ददाति) ब्राह्मण को देता है।

बाला = बाले = बालाः
बालाम् = बाले = बालाः
बालया = बालाभ्याम् = बालाभिः
बालायै = " = बालाभ्यः
बालायाः = " = बालाभ्यः
बालायाः = बालयोः = बालानाम्

द्वितीय खण्ड

द्वितीय अध्याय

अजन्त शब्द रूपावली

नर, बाला, मणि, नदी, भानु, वधू, पितृ, गौ, नौ, इस प्रकार जिन के अन्त में स्वर आते है ऐसे शब्द कई प्रकार के हैं। उनमें भी कोई शब्द पुँल्लिङ्ग में, कोई स्त्रीलिङ्ग में और कोई नपुंसक लिङ्ग में होते हैं। इन सभी प्रकार के शब्दों के प्रथमा, द्वितीया आदि विभक्तियों; या कर्त्ता, कर्म आदि कारकों में अलग २ प्रकार के रूप बन जाते हैं इसी तरह जिन के अन्त में व्यञ्जन आते हैं, ये शब्द भी बहुत तरह के हैं। जैसे—राजन्, किम्, भवत्; युष्मद्, अस्मद्। इन के भी रूप कारकों याने विभक्तियों के अनुसार भिन्न २ प्रकार के हो जाते हैं। संस्कृत भाषा सीखने के लिए उन सभी शब्दों के रूप जानने आवश्यक हैं, जो अब बतलाये जायेंगे। उन सभी शब्दों में पहले ह्रस्व अकारान्त नर शब्द के रूप, उसकी विभक्तियां और उनके अर्थ दिए जाते हैं।

अकारान्त पुँल्लिग 'नर' शब्द के रूप

कारक विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
कर्ता प्रथमा	नरः (एक मनुष्य)	नरौ (दो मनुष्य)	नराः (बहुत मनुष्य)
कर्म द्वितीया	नरम् (एक मनुष्य को)	नरौ (दो मनुष्यों को)	नरान् (बहुत मनुष्यों को)
करण तृतीया	नरेण (एक मनुष्य द्वारा)	नराभ्याम् (दो मनुष्यों द्वारा)	नरैः (बहुत मनुष्यों द्वारा)
सम्प्रदान चतुर्थी	नराय (एक मनुष्य के लिए)	नराभ्याम् (दो मनुष्यों के लिए)	नरेभ्यः (बहुत मनुष्यों के लिए)
अपादान पञ्चमी	नरात्-नराद् (एक मनुष्य से)	नराभ्याम (दो मनुष्यों से)	नरेभ्यः (बहुत मनुष्यों से)
सम्बन्ध षष्ठी	नरस्य (एक मनुष्य का)	नरयोः (दो मनुष्यों का)	नराणाम् (बहुत मनुष्यों का)
अधिकरण सप्तमी	नरे (एक मनुष्य में)	नरयोः (दो मनुष्यों में)	नरेषु (बहुत मनुष्यों में)
सम्बोधन प्रथमा	हे नर ! (हे मनुष्य)	हे नरौ !! (हे दो मनुष्यो)	हे नराः !!! (हे बहुत मनुष्यो)

इसी तरह अकारान्त-पुँल्लिंग सभी शब्दों के रूप चलेंगे।

अकारान्त पुँल्लिङ्ग कुछ शब्द और अर्थ

देशः = देश	गजः = हाथी	वृक्षः = वृक्ष
नृपः = राजा	अश्वः = घोड़ा	मृगः = हिरण
नगः = पर्वत	सिंहः = शेर	छात्रः = विद्यार्थी
वर्णः = रंग	मेघः = बादल	शुकः = तोता
राजमार्गः = सड़क	प्रासादः = महल	बालः = लड़का
नायकः = नेता	सेवकः = नौकर	विज्ञः = पण्डित
पिशुनः = सूचक, चुगलखोर	आचार्यः = गुरु	विहगः = पक्षी
ज्वरः = बुखार	करः = हाथ	पादः = पांव

ह्रस्व अकारान्त नपुंसकलिंग शब्द

नपुंसकलिङ्ग शब्दों के रूप जानने से पहिले उनके विषय में कुछ साधारण नियम समझ लेने आवश्यक हैं, अतः वे नियम पहले दिये जाते हैं।

१. नपुंसक लिङ्ग में अकारान्त शब्दों के परे प्रथमा, विभक्ति के एक वचन में भी 'अम्' आता है, 'स' नहीं।

२. दूसरे (इकारान्त, उकारान्त आदि) शब्दों के प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के एक वचन में कोई प्रत्यय नहीं रहता।

३. अकारान्त शब्दों के परे प्रथमा के द्विवचन में औ के स्थान में ई आता है।

४. दूसरे (इकारान्त, ईकारान्त, आदि) शब्दों में प्रथमा

विभक्ति के द्विवचन में 'न' आता है।

५. प्रथमा विभक्ति के वहुवचन में 'अस्' के वजाय 'नि' आता है और 'नि' से पहले स्वर को दीर्घ हो जाता है।

६. नपुंसक लिङ्ग में दीर्घ स्वरान्त कोई भी शब्द नहीं आता या रहता।

७. जो प्रथमा विभक्ति में रूप होंगे वे ही द्वितीया विभक्ति में भी होंगे। (प्रथमा, द्वितीया विभक्ति के रूपों में कोई भेद नहीं होता)।

८. अकारान्त शब्दों के तृतीया विभक्ति से लेकर रूप अकारान्त पुँल्लिग शब्दों के समान ही होंगे।

स्मर्तव्य—ये नियम स्वरान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के लिये ही कहे गये हैं। व्यञ्जनान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों में ये सब लागू नहीं होंगे। उदाहरण के तौर पर एक नपुंसक लिङ्ग शब्द के रूप नीचे दिये जाते हैं—

अकारान्त नपुंसकलिंग 'पुस्तक' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
द्वितीया	पुस्तकम्	पुस्तके	पुस्तकानि
तृतीया	पुस्तकेन	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकैः
चतुर्थी	पुस्तकाय	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः
पञ्चमी	पुस्तकात्-द्	पुस्तकाभ्याम्	पुस्तकेभ्यः

षष्ठी	पुस्तकस्य	पुस्तकयोः	पुस्तकानाम्
सप्तमी	पुस्तके	पुस्तकयोः	पुस्तकेषु
सम्बोधन	[हे] पुस्तक !	[हे] पुस्तके !!	[हे] पुस्तकानि !!!

इसी तरह नीचे लिखे अकारान्त नपुंसक लिङ्ग शब्दों के रूप भी होते हैं।

रत्नम्=रत्न	विषम्=ज़हर	पठनम्=पढ़ना
धनम्=धन	आलस्यम्=आलस्य	मुखम्=मुंह
ज्ञानम्=ज्ञान	गृहम्=घर	हृदयम्=दिल
फलम्=फल	हितम्=लाभदायक	पापम्=पाप
पुण्यम्=पुण्य	जीवनम्=जीना	दानम्=दान
मूल्यम्=कीमत	अन्नम्=खाना [भोजन]	जलम्=पानी

*अभ्यास

(१) इन शब्दों की विभक्तियां, वचन और अर्थ बताइये—गजस्य, आचार्येभ्यः, विहगान्, पादौ, विज्ञैः, करयोः, सेवकानाम्, राजमार्गे, नायकम्, वर्णात्, सूचकेन, नगेषु, देशाय, मुखम्, हृदयानि, फलानि, ज्ञानम्, धनम्, आलस्येन।

(२) आगे दिये शब्दों के सब विभक्तियों में उच्चारण

---

*अध्यापकों से निवेदन है कि 'उच्चारण'—रूपावली रटवाने का प्रयत्न न करके अनुवाद के क्रम-गत अभ्यासों से ही शब्दों के उच्चारण समझायें।

कीजिए—प्रासाद, नृप, मृग, वृक्ष, विष, पाप, जल, मूल्य, मार्ग, धर्म, अन्न, जीवन।

संस्कृत में अनुवाद कीजिये :—

कृष्ण की पुस्तक, छात्र के साथ, बालक के लिये, धन की इच्छा, बल के लिये, मोहन के घर में, शिव के मन्दिर में, छात्रों के समूह में, बालकों के साथ।

इकारान्त पुंल्लिंग 'मुनि' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	मुनिः (एक साधु)	मुनी (दो साधु)	मुनयः (बहुत साधु)
द्वितीया	मुनिम् (एक साधु को)	मुनी (दो साधुओं को)	मुनीन् (बहुत साधुओं को)
तृतीया	मुनिना (एक साधु द्वारा)	मुनिभ्याम् (दो साधुओं द्वारा)	मुनिभिः (बहुत साधुओं द्वारा)
चतुर्थी	मुनये (एक साधु के लिए)	मुनिभ्याम् (दो साधुओं के लिए)	मुनिभ्यः (बहुत साधुओं के लिए)
पञ्चमी	मुनेः (एक साधु से)	मुनिभ्याम (दो साधुओं से)	मुनिभ्यः (बहुत साधुओं से)
षष्ठी	मुनेः [एक साधु का]	मुन्योः [दो साधुओं का	मुनीनाम् [बहुत साधुओं का]

सप्तमी	मुनौ	मुन्योः	मुनिषु
	[एक साधु में]	[दो साधुओं में]	[बहुत साधुओं में]
सम्बोधन	[हे] मुने	[हे] मुनी	[हे] मुनयः
	[हे] साधु	[हे] दो साधुओ	[हे] बहुत साधुओ

इसी प्रकार सभी इकारान्त पुँल्लिङ्ग शब्दों के रूप चलेंगे।

कुछ पुँल्लिग इकारान्त शब्द और अर्थ

अग्निः=आग	नृपतिः=राजा	गिरिः=पहाड़
पाणिः=हाथ	पतिः=स्वामी	हरिः=विष्णु
ऋषिः=साधु	उदधि=समुद्र	मणिः=रत्न
विधिः=भाग्य	निधिः=खज़ाना	असिः=तलवार
अतिथिः=मेहमान	रश्मिः=किरण	तिथिः=दिन
अरिः=शत्रु	कविः=कवि	व्याधिः=बीमारी

नोट—पुँल्लिङ्ग में सब इकारान्त शब्दों के ऐसे ही रूप होते हैं। परन्तु सखि और पति शब्दों के रूपों में कुछ भेद हैं, जिन के रूप नीचे बताये जाते हैं।

इकारान्त 'सखि' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	सखा	सखायौ	सखायः
	[एक मित्र]	[दो मित्र]	[बहुत मित्र]
द्वितीय	सखायाम्	सखायौ	सखीन्

तृतीया	सख्या	सखिभ्याम्	सखिभिः
चतुर्थी	सख्ये	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
पञ्चमी	सख्युः	सखिभ्याम्	सखिभ्यः
षष्ठी	सख्युः	सख्योः	सखीनाम्
सप्तमी	सख्यौ	सख्योः	सखिषु
सम्बोधन	[हे] सखे	[हे] सखायौ	[हे] सखायः
	[हे[मित्र,	[हे] दो मित्रो,	[हे] वहुत मित्रो

इकारान्त 'पति' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	पतिः	पती	पतयः
द्वितीया	पतिम्	पती	पतीन्
तृतीया	पत्या	पतिभ्याम्	पतिभिः
चतुर्थी	पत्ये	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
पञ्चमी	पत्युः	पतिभ्याम्	पतिभ्यः
षष्ठी	पत्युः	पत्योः	पतिनाम्
सप्तमी	पत्यौ	पत्योः	पतिषु
सम्बोधन	[हे] पते	[हे] पती	[हे] पतयः

स्मर्तव्य—यदि पति शब्द समास के अन्त में आए, जैसे 'भूपति' 'नृपति' इत्यादि शब्दों में हैं, तो इसके रूप मुनि की तरह ही होंगे।

इकारान्त नपुँसक लिंग 'वारि' शब्द के रूप

प्रथमा	वारि	वारिणी	वारीणि
द्वितीया	वारि	वारिणी	वारीणि
तृतीया	वारिणा	वारिभ्याम्	वारिभिः
चतुर्थी	वारिणे	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
पञ्चमी	वारिणः	वारिभ्याम्	वारिभ्यः
षष्ठी	वारिणः	वारिणोः	वारीणाम्
सप्तमी	वारिणि	वारिणोः	वारिषु
सम्बोधन	(हे) वारि ! (हे वारे)	(हे) वारिणी !	(हे) वारीणि

इसी तरह नपुँसक लिङ्ग में इकारान्त शब्दों के रूप होते हैं।

कुछ इकारान्त शब्द और अर्थ

अव्याधि = स्वस्थ, सुरभि = सुगन्धिवाला अनादि = आदि हीन ।

परन्तु दधि (दही) अक्षि (आंख), अस्थि (हड्डी) इन के रूपों में कुछ भेद हैं।

इकारान्त नपुंसक लिंग 'दधि' शब्द के रूप

प्रथमा	दधि	दधिनी	दधीनि
द्वितीया	दधि	दधिनी	दधीनि

तृतीया	दध्ना	दधिभ्याम्	दधिभिः
चतुर्थी	दध्ने	दधिभ्याम	दधिभ्यः
पञ्चमी	दध्नः	दधिभ्याम्	दधिभ्यः
षष्ठी	दध्नः	दध्नोः	दध्नाम्
सप्तमी	दध्नि, दधनि	दध्नोः	दधिषु
सम्बोधन	हे दधे, हे दधि !	हे दधिनी !!	हे दधीनि !!!

इसी तरह अस्थि और अक्षि शब्दों के रूप जानने चाहिएं। जैसे—अक्षि-तृतीया = अक्ष्णा, चतुर्थी = अक्ष्णे इत्यादि।

अभ्यास

(१) इन शब्दों की बिभक्तियां, वचन और अर्थ बताइये—

अग्नये, नृपतेः, गिरी, हरये, पाणी, पतिभ्यः, ऋषिभिः, वारिणे, विष्ण्वोः, दध्नाम्, अतिथीन्, अक्ष्णा, अरिभ्याम्, उदधीनाम्, निधिषु, अस्थीनि, रश्मी, कव्यः, सख्या, पत्युः।

(२) इन शब्दों के रूप लिखिये—

अतिथि—५मी १ व०, असि—२ या बहु०, यति—६ष्ठी बहु, निधि—७मी द्विवचन, रश्मि—५मी १ व०, विधि—६ष्ठी १ व०, पाणि—७मी बहु० और ३ या १व०।

(३) शुद्ध कीजिये—

अतिथ्ये नमः, अरिणां गृहम्, मम अक्ष्णौ, यतिस्य कुटीरम्, द्वे अस्थीनि, अग्नीभिः दग्धम्।

(४) संस्कृत में अनुवाद कीजिये—

राजा के नौकर, ऋषियों के आश्रमों में, जल के स्वाद में, कवियों के वचनों को, दही के पात्र में, मित्रों के लिए दूध।

उकारान्त पुंल्लिग 'गुरु' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	गुरुः	गुरू	गुरवः
द्वितीया	गुरुम्	गुरू	गुरून्
तृतीया	गुरुणा	गुरुभ्याम्	गुरुभिः
चतुर्थी	गुरवें	गुरुभ्याम्	गुरुंभ्यः
पञ्चमी	गुरोः	गुरुभ्याम्	गुरुभ्यः
षष्ठी	गुरोः	गुर्वोः	गुरूणाम्
सप्तमी	गुरौ	गुर्वोः	गुरुषु
सम्बोधन	[हे] गुरो !	[हे] गुरू !!	[हे] गुरवः !

इसी तरह उकारान्त पुंल्लिंग प्रभु, भानु, शिशु, वायु, रिपु, मनु, रघु, बाहु आदि शब्दों के रूप बनेंगे।

उकारान्त 'वस्तु' शब्द नपुंसकलिंग के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
द्वितीया	वस्तु	वस्तुनी	वस्तूनि
तृतीया	वस्तुना	वस्तुभ्याम्	वस्तुभिः
चतुर्थी	वस्तुने	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
पञ्चमी	वस्तुनः	वस्तुभ्याम्	वस्तुभ्यः
षष्ठी	वस्तुनः	वस्तुनोः	वस्तूनाम्
सप्तमी	वस्तुनि	वस्तुनोः	वस्तुषु

सम्बोधन हे वस्तु, हे वस्तो ! हे वस्तुनी !! हे वस्तूनि !!!

वस्तु शब्द के रूपों को देख कर निश्चय हो जायेगा कि इस के रूपों और वारि शब्द के रूपों में कोई भी अन्तर नहीं है। केवल उ और इ का ही दोनों में भेद है।

कुछ उकारान्त नपुंसकलिंग शब्द और उनके अर्थ—

मधु=शहद, वस्तु=चीज़, अश्रु=आंसू, जानु=घुटना, तालु=तालू।

अभ्यास

(१) रूप बताइए—

गुरु-६ष्ठी एकवचन, प्रभु-४र्थी १ व०, वायु-५मी १ व०, मनु-३या बहु व०, रिपु-२या द्विव०; बाहु-७मी द्विव०, साधु-२या बहुव०, वस्तु-४र्थी १ व०, मधु-७मी १ व०, अश्रु-६ष्ठी द्विव०, तालु--७मी १ व०।

(२) इन के अर्थ बताइये और विभक्ति तथा वचन भी बताइए :—

शिशुभिः, वाय्वोः, साधोः, शम्भौ, मनुना, रघुः, भानवः, शिशुभ्याम, बाहूनाम्, भानवे, रिपोः, वस्तूनि, अश्रुणः, वसुनोः, मधूनाम, तालुने, जानुनी।

ऋकारान्त शब्द

ऋकारान्त शब्दों के प्रथमा विभक्ति के एक वचन में ऋ के स्थान में 'आ' आ जाता है और उसके परे कोई विभक्ति नहीं रहती। जैसे—दाता, पिता, माता।

ऋकारान्त शब्दों में प्रथमा विभक्ति के द्विवचन, बहुवचन और द्वितीया के एकवचन, द्विवचन इन चारों स्थानों में ऋ को आर् हो जाता है, परन्तु कुछ शब्दों में ऋ को अर् होता है। ये शब्द थोड़े से ही हैं। जैसे—पितृ, मातृ, भ्रातृ, देवृ, जामातृ, दुहितृ। बाकी ऋकारान्त शब्दों को ऊपर कहे गए स्थानों में आर् ही होगा।

ऋकारान्त पुल्लिग 'दातृ' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	दाता	दातारौ	दातारः
२या	दातारम्	दातारौ	दातॄन्
३या	दात्रा	दातृभ्याम्	दातृभिः
४र्थी	दात्रे	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
५मी	दातुः	दातृभ्याम्	दातृभ्यः
६ष्ठी	दातुः	दात्रोः	दातॄणाम्
७मी	दातरि	दात्रोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातः !	हे दातारौ ! !	हे दातारः !

नीचे लिखे शब्दों के रूप इसी तर होंगे—

नेतृ (नेता) कर्तृ (करने वाला) गन्तृ (जाने वाला) हन्तृ (मारने वाला) धातृ (पालने वाला) श्रोतृ (सुनने वाला) वक्तृ (वोलने वाला) होतृ (हवन करने वाला) नप्तृ (पोता)।

'पितृ' (पिता) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	पिता	पितरौ	पितरः
२या	पितरम्	पितरौ	पितॄन्
३या	पित्रा	पितृभ्याम्	पितृभिः
४र्थी	पित्रे	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
५मी	पितुः	पितृभ्याम्	पितृभ्यः
६ठी	पितुः	पित्रोः	पितॄणाम्
७मी	पितरि	पित्रोः	पितृषु
सम्बोधन	हे पितः !	हे पितरौ ! !	हे पितरः ! ! !

इसी तरह मातृ (माई) भ्रातृ (भाई) जामातृ (जँवाई) देवृ (देवर) नृ (मनुष्य) दुहितृ (वेटी) शब्दों के रूप पितृ शब्द के समान ही चलेंगे। 'मातृ' का द्वितीया बहुवचन में 'मातॄः' बनेगा, 'मातॄन्' नहीं। इसी तरह दुहितृ का रूप दुहितॄः बनेगा।

स्मर्तव्य—स्त्रीलिंग में सभी ऋकारान्त शब्दों के आगे ई

आ जाता है और ऋ को र् हो जाता है। जैसे—दातृ का दात्री, धातृ का धात्री, नेतृ का नेत्री आदि—अतः ऋकारान्त शब्दों के स्त्रीलिंग के रूप ईकारान्त नदी आदि की तरह चलेंगे।

ऋकारान्त नपुंसकलिंग 'दातृ' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	दातृ	दातृणी	दातृणि
२या	दातृ	दातृणी	दातृणि
३या	दातृणा	दातृभ्याम्	दातृभिः
४र्थी	दातृणे	”	दातृभ्यः
५मी	दातृणः	”	”
६ष्ठी	दातृणः	दातृणोः	दातृणाम्
७मी	दातृणि	दातृणोः	दातृषु
सम्बोधन	हे दातृ, हे दातः !	हे दातृणी !!	हे दातृणि !!!

ओकारांत पुंल्लिंग 'गो' शब्द के रूप (बैल या गाय)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	गौः	गावौ	गावः
२या	गाम्	गावौ	गाः
३या	गवा	गोभ्याम्	गोभिः

४र्थी	गवे	गोभ्याम्	गोभ्यः
५मी	गोः	,,	,,
६ष्ठी	गोः	गवोः	गवाम्
७मी	गवि	,,	गोषु
सम्बोधन	हे गौः	हे गावौ	हे गावः

स्मर्तव्य—गौ शब्द के स्त्रीलिंग में भी इसी तरह रूप रहेंगे।

आकारान्त, ईकारान्त, ऊकारान्त, पुंल्लिग शब्दों के रूप अनावश्यक और कठिन होने के कारण नहीं लिखे गये हैं।

अभ्यास

(१) इन शब्दों की विभक्तियाँ, वचन तथा अर्थ बताइये—दातरि, पित्रोः, भ्रातॄन्, देत्रा, नुः, जामातरम्, पित्रे, दातृ, भ्रातुः, नेतॄणाम्, कर्ता, हन्तृभ्यः, श्रोत्रोः, होतरि, वक्तुः, नप्तुः; दातृणोः, गवाम्, गाः, गवा।

(२) रूप बताइये :—

पितृ—चतुर्थी बहु व०, हन्तृ—३या द्विव०, गन्तृ—५मी द्विवचन, नेतृ—३या १ व०, जामातृ—५मी १ व०, धातृ—६ष्ठी १ व०, नृ—१ मा १ व०, देवृ,—१ मा बहुव०, दातृ—नपुंस० २या बहुव०, गो—५मी १ व०,

(३) शुद्ध कीजिये :—

पितृणा, भ्रातरोः, हन्तरौ, गवाभ्याम् श्रोतृणे।

(४) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

पिता के आदेश से, पति के दो भाइयों में, हवन करने वाला,

गो के बछड़ों को। मारने वालों के द्वारा। दो भाइयों का परस्पर विरोध। दाता के लिए दान।

स्त्रीलिंग शब्दों के रूप

स्त्रीलिंग के शब्द भी स्वरान्त और व्यञ्जनान्त, दोनों तरह के होते हैं। उन में से व्यञ्जनान्तों में पुंल्लिंग के शब्दों से प्रायः कुछ अन्तर नहीं आता। स्वरान्त, स्त्रीलिंग शब्दों के रूप नीचे दिये जाते हैं—

स्मर्तव्य—ह्रस्व अकारान्त स्त्रीलिङ्ग कोई शब्द नहीं होता।

आकारान्त स्त्रीलिंग 'बाला' (लड़की) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	बाला	बाले	बालाः
२या	बालाम्	बाले	बालाः
३या	बालया	बालाभ्याम्	बालाभिः
४र्थी	बालायै	बालाभ्याम्	बालाभ्यः
५मी	बालायाः	"	"
६ष्ठी	बालायाः	बालयोः	बालानाम्
७मी	बालायाम्	बालयोः	बालासु
सम्बोधन	हे बाले !	हे बाले ! !	हे बालाः ! ! !

इसी तरह के कुछ आकारन्त स्त्रीलिंग नीचे लिखे शब्दों के रूप होंगे

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
गंगा = एक नदी	लता = बेल	आज्ञा = हुक्म
वितस्ता = जेहलम नदी	रेखा = लकीर	क्रीड़ा = खेल
चन्द्रभागा = चनाब नदी	कथा = कहानी	निशा = रात
पाठशाला = स्कूल	विद्या = इलम	सभा = सभा
शाला = मकान	पूजा = पूजा	चिन्ता = फिकर

अभ्यास

(१) विद्यया सुखम् । चन्द्रभागायाः जलं शीतलम् । वितस्तायां कमलानि । गुरोः आज्ञा । निशासु कथा भवन्ति । सभायै पाठशालायाम् अवकाशः ।

ऊपर लिखे वाक्यों का अर्थ लिखिये ।

(२) रेखाः, क्रीड़ायाः, कथया, शा[illegible]ाः, निशानाम्, विद्यां, सभाम्, वितस्तायै ।

ऊपर लिखे रूप किस किस विभक्ति के और किस किस वचन के हैं ?

(३) शुद्ध कीजिए—

आज्ञास्य, चिन्ताेम, लतेभ्य, पाठशालैः, गङ्गान, पूजेषु ।

(४) संस्कृत में अनुवाद कीजिए—

वितस्ता का जल ठण्डा है। आर्य गङ्गा में नहाते हैं। चिन्ता से मनुष्य कमजोर हो जाता है। मनोहर सभाओं में जाता है।

इकारान्त 'मति' (बुद्धि) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	मतिः	मती	मतयः
२ या	मतिम्	,,	मतीः
३ या	मत्या	मतिभ्याम्	मतिभिः
४ थी	मत्यै-मतये	,,	मतिभ्यः
५ मी	मत्याः-मतेः	,,	,,
६ ष्ठी	,, ,,	मत्योः	मतीनाम्
७ मी	मत्याम्-मतौ	,,	मतिषु
सम्बोधन	हे मते !	हे मती ! !	हे मतयः !!!

इसी प्रकार नीचे लिखे शब्दों के रूप होंगे

शब्द अर्थ	शब्द अर्थ	शब्द अर्थ
नीतिः=नीति	वृत्तिः=जीविका	सम्पत्तिः=धन
गतिः=चलना, चाल	कीर्तिः=यश	आपत्तिः=दुःख, आपदा

ईकारान्त 'नदी' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	नदी	नद्यौ	नद्यः
२ या	नदीम्	,,	नदीः
३ या	नद्या	नदीभ्याम्	नदीभिः
४ थीं	नद्यै	,,	नदीभ्यः
५ मी	नद्याः	,,	,,
६ ष्ठी	नद्याः	नद्योः	नदीनाम्
७ मी	नद्याम्	नद्योः	नदीषु
सम्बोधन	हे नदि !	हे नद्यौ !!	हे नद्यः !!!

लक्ष्मी शब्द के भी रूप इसी तरह रहेंगे केवल प्रथमा के एक वचन के अन्त में विसर्ग रहेगा-लक्ष्मीः । इस प्रकार ईकारान्त स्त्रीलिंग पुत्री, नारी, जननी, दासी, गौरी, सखी, पुरी, देवी, दात्री, राज्ञी आदि शब्दों के रूप नदी शब्द की भांति होंगे । परन्तु ईकारान्तों में स्त्री शब्द के रूप इस से भिन्न ढंग से होंगे।

ईकारान्त 'स्त्री' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	स्त्री	स्त्रियौ	स्त्रियः
२ या	स्त्रियम्-स्त्रीम्	,,	स्त्रियः-स्त्रीः
३ या	स्त्रिया	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभिः

४ थी	स्त्रियै	स्त्रीभ्याम्	स्त्रीभ्यः
५ मी	स्त्रियाः	"	"
६ ष्ठी	"	स्त्रियोः	स्त्रीणाम्
७ मी	स्त्रियाम्	"	स्त्रीषु
सम्बोधन	हे स्त्रि !	हे स्त्रियौ !!	हे स्त्रियः !!!

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए :—

धनिक की पुत्रियां । देवी का वर । दासी का कपड़ा। सखी से बातचीत । जननी का प्यार । नगरी का सुकाल। लक्ष्मी का मान । विद्या से यश ।

(२) शुद्ध कीजिए :—

नारिसु गुणाः वर्तन्ते । गौरीयै पुष्पाणि । सख्यः वस्त्रः राज्ञिना फलानि दत्तानि । पुरीयां धनिकः सन्ति ।

उकारान्त 'धेनु' शब्द के रूप

१ मा	धेनुः	धेनू	धेनवः
२ या	धेनुम्	,,	धेनूः
३ या	धेन्वा	धेनुभ्याम	धेनभिः
४ थी	धेन्वै, धेनवे	,,	धेनुभ्यः
५ मी	धेन्वा-धेनोः	,,	,,
६ ठी	,, ,,	धेन्वोः	धेनूनाम्
७ मी	धेन्वाम्-धेनौ	,,	धेनुषु
सम्बोधन	हे धेनो !	हे धेनू !!	हे धेनवः !!!

ऊकारान्त 'वधू' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	वधूः	वध्वौ	वध्वः
२ या	वधूम्	,,	वधूः
३ या	वध्वा	वधूभ्याम्	वधूभिः
४ थी	वध्वै	वधूभ्याम्	वधूभ्यः
५ मी	वध्वाः	,,	,,
६ ठी	,,	वध्वोः	वधूनाम्
७ मी	वध्वाम्	,,	वधूषु
सम्बोधन	हे वधु !	हे वध्वौ !!	हे वध्वः !!!

इसी प्रकार से श्वश्रू:, चमू (सेना) वामोरू—(सुन्दर ज
वाली) आदि शब्दों के रूप बनेंगे।

ऋकारान्त शब्दों में मातृ शब्द पुँल्लिङ्ग के रूप
शब्द के समान होंगे। केवल द्वितीया के बहुवचन में 'मा
बनेगा।

ऋकारान्त 'स्वसृ' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	स्वसा	स्वसारौ	स्वसार:
२ या	स्वसारम्	,,	स्वसृ:
३ या	स्वस्रा	स्वसृभ्याम्	स्वसृभि
४ र्थी	स्वस्रे	,,	स्वसृभ्य:
५ मी	स्वसु:	,,	,,
६ ष्ठी	,,	स्वस्रो:	स्वसृण
७ मी	स्वसरि	,,	स्वसृषु
सम्बोधन	हे स्वस: !	हे स्वसारौ !!	हे स्वसार

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए :—

गौ का दूध उत्तम होता है। बहिन की किताब पर
लिखता है। माता की पूजा। पिता से डर। गुरु की आज्ञा
रहना। बुद्धि में भ्रम। यश के लिए।

(२) अर्थ बताइए :—

मुनीनां शिशवः सुन्दराः। वधूभिः सह श्वश्रूः याति। पुर्यां बालानां पाठशालाः सन्ति। बालायै पुस्तकं ददाति। विद्यया कीर्तिः भवति।

(२) शुद्ध कीजिये :—

रज्जुना, स्वसृन्, मातारौ, वधून् धेन्वे, बालिकाय स्त्रीन्, कन्यान्, पाठशालेषु नद्ये।

द्वितीय खण्ड

तृतीय अध्याय

व्यञ्जनान्त शब्द प्रकरण

जिन के अन्त में क् च् त् आदि व्यञ्जन हों, वे शब्द व्यञ्जनान्त होते हैं। इनके बहुत से भेद हैं। कुछ मुख्य मुख्य शब्दों के रूप और अर्थ यहां दिये जाते हैं।

चवर्गान्त शब्दों में 'पयोमुच्' (बादल) शब्द पुँल्लिङ्ग के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	पयोमुक्-ग्	पयोमुचौ	पयोमुचः
२ या	पयोमुचम्	"	"
३ या	पयोमुचा	पयोमुग्भ्याम्	पयोमुग्भिः
४ थी	पयोमुचे	"	पयोमुग्भ्यः
५ मी	पयोमुचः	"	"
६ ठी	"	पयोमुचोः	पयोमुचाम्
७ मी	पयोमुचि	"	पयोमुक्षु
सम्बोधन	हे पयोमुक्-ग्!	हे पयोमुचौ!!	हे पयोमुचः!!!

इसी तरह 'वणिज्' (बनिया) 'भिषज्' (हकीम) आदि जकारान्त शब्दों के रूप भी होते हैं। जैसे—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	वणिक्-ग्	वणिजौ	वणिजः
२या	वणिजम्	,,	,,
३या	वणिजा	वणिग्भ्याम्	वणिग्भिः
४र्थी	वणिजे	,,	वणिग्भ्यः
५मी	वणिजः	,,	,,
६ष्ठी	,,	वणिजोः	वणिजां
७मी	वणिजि	,,	वणिक्षु
सम्बोधन	हे वणिक्-ग् !	हे वणिजौ !!	हे वणिजः !!!

'भिषज्' (हकीम) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	भिषक्-ग्	भिषजौ	भिषजः
२या	भिषजम्	,,	,,
३या	भिषजा	भिषग्भ्याम्	भिषग्भिः
४र्थी	भिषजे	,,	भिषग्भ्यः
५मी	भिषजः	,,	,,
६ष्ठी	,,	भिषजोः	भिषजाम्
७मी	भिषजि	,,	भिषक्षु
सम्बोधन	हे भिषक्-ग् !	हे भिषजौ !!	हे भिषजः !!!

स्मर्तव्य —इन ऊपर लिखे व्यञ्जनान्त शब्दों के रूपों को देख कर यह सिद्धान्त जाना जा सकता है कि—

(१) व्यञ्जनान्त शब्दों के आगे प्रथमा विभक्ति के एक वचन में विभक्ति प्रायः नहीं रहती। (२) व्यञ्जनादि (भ्याम्, भिस्, भ्यस्) विभक्ति परे होने पर अन्तिम वर्ण को उसके वर्ग का सदा तीसरा अक्षर ही हो जायेगा।

नकारान्त पुंल्लिग 'राजन्' (राजा) शब्द के रूप

स्मर्तव्य— नकारान्त पुंल्लिङ्ग शब्दों में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में और भ्याम्, भिस्, सु इन व्यञ्जनादि विभक्तियों में न् उड़ जाता है और प्रथमा के तीन तथा द्वितीया के दो, कुल मिला कर पांच वचनों में न् से पूर्व 'अ' को दीर्घ 'आ' हो जाता है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	राजा	राजानौ	राजानः
२या	राजानम्	,,	राज्ञः
३या	राज्ञा	राजभ्याम्	राजभिः
४र्थी	राज्ञे	,,	राजभ्यः
५मी	राज्ञः	,,	,,
६ष्ठी	,,	राज्ञोः	राज्ञाम्
७मी	राज्ञि, राजनि	,,	राजसु
सम्बोधन	हे राजन्!	हे राजानौ!!	हे राजानः!!!

राजन् शब्द में द्वितीया बहुवचन से लेकर सभी स्वरादि विभक्तियों में न् से पूर्व अ भी उड़ गया है, परन्तु यदि 'अ' से पूर्व कोई संयुक्त अक्षर हो तो वह नहीं उड़ता। जैसे—महात्मन्, शर्मन् वर्मन् शब्दों में।

'महात्मन्' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	महात्मा	महात्मानौ	महात्मानः
२या	महात्मानम्	"	महात्मनः
३या	महात्मना	महात्मभ्याम्	महात्मभिः
४र्थी	महात्मने	"	महात्मभ्यः
५मी	महात्मनः	"	"
६ष्ठी	"	महात्मनोः	महात्मनाम्
७मी	महात्मनि	"	महात्मसु
सम्बोधन	हे महात्मन् !	हे महात्मानौ !!	हे महात्मानः !!!

नकारांत 'गुणिन्' (गुणवाला) शब्द (पुँल्लिङ्ग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	गुणी	गुणिनौ	गुणिनः
२या	गुणिनम्	"	"
३या	गुणिना	गुणिभ्याम्	गुणिभिः
४र्थी	गुणिने	"	गुणिभ्यः
५मी	गुणिनः		"

६ठी	गुणिनः	गुणिनोः	गुणिनाम्
७मी	गुणिनि	,,	गुणिषु
सम्बोधन	हे गुणिन् !	हे गुणिनौ !!	हे गुणिनः !!!

इसी तरह दण्डिन्, वाग्मिन्, यशस्विन्, धनिन् आदि के रूप होंगे।

'महत्' (बड़ा) शब्द (पुंल्लिङ्ग)

(१) ऐसे शब्दों में प्रथमा एकवचन में त् से पहले अ को आ हो जाता है, नया न् आ के बाद आ जाता है और त् उड़ जाता है।

(२) आगे प्रथमा के द्विवचन, बहुवचन में और द्वितीया के एकवचन, द्विवचन में भी आ हो जाता है। नया न् भी आ जाता है, परन्तु त् नहीं उड़ता, वह भी रहता है।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	महान्	महान्तौ	महान्तः
२या	महान्तम्	,,	महतः
३या	महता	महद्भ्याम्	महद्भिः
४र्थी	महते	,,	महद्भ्यः
५मी	महतः	,,	,,
६ठी	,,	महतोः	महताम्
७मी	महति	,,	महत्सु
सम्बोधन	हे महन् !	हे महान्तौ !!	हे महान्तः !!!

पुँल्लिङ्ग 'धीमत्' (बुद्धिमान्) शब्द

इस में त् के पहले अ को केवल प्रथमा एक वचन में ही आ होता है, बाकी बातें महत् के समान होंगी।

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	धीमान्	धीमन्तौ	धीमन्तः
२ या	धीमन्तम्	,,	धीमतः
३ या	धीमता	धीमद्भ्याम्	धीमद्भिः
४ थीं	धीमते	,,	धीमद्भ्यः
५ मी	धीमतः	,,	,,
६ ष्ठी	,,	धीमतोः	धीमताम्
७ मी	धीमति	,,	धीमत्सु
सम्बोधन	हे धीमन्!	हे धीमन्तौ !!	हे धीमन्तः !!!

इसी प्रकार बुद्धिमत्, धनवत्, श्रीमत्, भगवत् के रूप होंगे।

गच्छत्, पिबत्, कुर्वत्, पश्यत् आदि शब्दों के रूप भी धीमत् के समान ही होंगे, परन्तु इन में प्रथमा विभक्ति के एकवचन में भी त् से पूर्व अ को आ नहीं होगा, जैसे—

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	गच्छन्	गच्छन्तौ	गच्छन्तः
२ या	गच्छन्तम्	,,	गच्छतः
३ या	गच्छता	गच्छद्भ्याम्	गच्छद्भिः
४ थी	गच्छते	,,	गच्छद्भ्यः
५ मी	गच्छतः	,,	,,
६ ष्ठी	गच्छतः	गच्छतोः	गच्छताम्
७ मी	गच्छति	गच्छतोः	गच्छत्सु
सम्बोधन	हे गच्छन्!	हे गच्छन्तौ !!	हे गच्छन्तः !!!

अभ्यास

(१) संस्कृत बनाइये :—

दो महात्मा, गुणियों को, बादलों ने, बनियों ने, हकीमों राजा के लिए, बादल से, हकीम में, महात्मा के लिए, गुणी राजा को, बड़े के लिये, बुद्धिमान् में।

विभक्तियां, वचन और अर्थ बताइये :—

महताम्, यशस्विभिः, धनिनाम्, रात्रे, महात्मानम्, गुणि राजानौ, महति, भिषजा, पयोमुग्भ्याम्. वणिजः, वर्त्मना, शर्म दण्डिनम्; वाग्मिना।

(३) शुद्ध कीजिये :—

पयोमुचान्; महात्माय; गुणियोः; हे धीमान्, महान वाग्मीनाम्।

सकारान्त पुँल्लिंग 'चन्द्रमस्' [चन्द्रमा]

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	चन्द्रमा	चन्द्रमसौ	चन्द्रमसः
२ या	चन्द्रमसम्	"	चन्द्रमसः
३ या	चन्द्रमसा	चन्द्रमोभ्याम्	चन्द्रमोभिः
४ र्थी	चन्द्रमसे	"	चन्द्रमोभ्यः
५ मी	चन्द्रमसः	"	"
६ ष्ठी	"	चन्द्रमसोः	चन्द्रमसाम्
७ मी	चन्द्रमसि	"	चन्द्रमस्सु
सम्बोधन	हे चन्द्रमः !	हे चन्द्रमसौ !!	हे चन्द्रमसः !!!

पुंल्लिंग 'विद्वस्' शब्द [विद्वान्]

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
प्रथमा	विद्वान्	विद्वांसौ	विद्वांसः
द्वितीया	विद्वांसम्	"	विदुषः
तृतीया	विदुषा	विद्वद्भ्याम्	विद्वद्भिः
चतुर्थी	विदुषे	"	विद्वद्भ्यः
पञ्चमी	विदुषः	"	"
षष्ठी	"	विदुषोः	विदुषाम्
सप्तमी	विदुषि	"	विद्वत्सु
सम्बोधन	हे विद्वन् !	हे विद्वांसौ !!	हे विद्वांसः !

'युवन्' शब्द (पुँल्लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	युवा	युवानौ	युवानः
२ या	युवानम्	"	यूनः
३ या	यूना	युवभ्याम्	युवभिः
४ थीं	यूने	"	युवभ्यः
५ मी	यूनः	"	"
६ ष्ठी	यूनः	यूनोः	यूनाम्
७ मी	यूनि	यूनोः	युवसु
सम्बोधन	हे युवन्	हे युवानौ	हे युवानः

इसी प्रकार श्वन् और मघवन् के रूप बनेंगे।

'पथिन्' शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	पन्थाः	पन्थानौ	पन्थानः
२ या	पन्थानम्	पन्थानौ	पथः
३ या	पथा	पथिभ्याम्	पथिभिः
४ थीं	पथे	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
५ मी	पथः	पथिभ्याम्	पथिभ्यः
६ ष्ठी	पथः	पथोः	पथाम्
७ मी	पथि	पथोः	पथिषु
सम्बोधन	हे पन्थाः	हे पन्थानौ	हे पन्थानः

स्त्रीलिंग 'वाच्' (वाणी) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	वाक्-वाग्	वाचौ	वाचः
२या	वाचम्	,,	,,
३या	वाचा	वाग्भ्याम्	वाग्भिः
४र्थी	वाचे	,,	वाग्भ्यः
५मी	वाचः	,,	,,
६ष्ठी	,,	वाचोः	वाचाम्
७मी	वाचि	,,	वाक्षु
सम्बोधन	हे वाक्-वाग्	हे वाचौ	हे वाचः

इसी प्रकार 'स्रज्' (माला) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	स्रक्-ग्	स्रजौ	स्रजः
२या	स्रजम्	,,	,,
३या	स्रजा	स्रग्भ्याम्	स्रग्भिः
४र्थी	स्रजे	,,	स्रग्भ्यः
५मी	स्रजः	,,	,,
६ष्ठी	,,	स्रजोः	स्रजाम्
७मी	स्रजि	,,	स्रक्षु
सम्बोधन	हे स्रक्-ग्	हे स्रजौ	हे स्रजः

'सरित्'

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	सरित्-द्	सरितौ	सरितः
२या	सरितम्	"	"
३या	सरिता	सरिद्भ्याम	सरिद्भिः
४र्थी	सरिते	"	सरिद्भ्यः
५मी	सरितः	"	"
६ष्ठी	सरितः	सरितोः	सरिताम्
७मी	सरिति	"	सरित्सु
सम्बोधन	हे सरित्-द्	हे सरितौ	हे सरितः

स्त्रीलिंग 'दिश्' (दिशा) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	दिक्-ग्	दिशौ	दिशः
२या	दिशम्	"	"
३या	दिशा	दिग्भ्याम्	दिग्भिः
४र्थी	दिशे	"	दिग्भ्यः
५मी	दिशः	"	"
६ष्ठी	"	दिशोः	दिशाम्
७मी	दिशि	"	दिक्षु
सम्बोधन	हे दिक्-ग्	हे दिशौ	हे दिशः

नपुंसक लिंग 'नामन्' शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	नाम	नामनी	नामानि
२या	"	"	"
३या	नाम्ना	नामभ्याम्	नामभिः
४र्थी	नाम्ने	"	नामभ्यः
५मी	नाम्नः	"	"
६ष्ठी	"	नाम्नोः	नाम्नाम्
७मी	नाम्नि, नामनि	"	नामसु
सम्बोधन	हे नाम	हे नामनी	हे नामानि

नपुंसक लिंग 'कर्मन्' (काम) शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	कर्म	कर्मणी	कर्माणि
२या	"	"	"
३या	कर्मणा	कर्मभ्याम	कर्मभिः
४र्थी	कर्मणे	"	कर्मभ्यः
५मी	कर्मणः	"	"
६ष्ठी	"	कर्मणोः	कर्मणाम्
७मी	कर्मणि	"	कर्मसु
सम्बोधन	हे कर्म	हे कर्मणी	हे कर्माणि

'मनस्' (मन) शब्द के रूप (नपुंसक लिंग)

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१मा	मनः	मनसी	मनांसि
२या	"	"	"
३या	मनसा	मनोभ्याम्	मनोभिः
४र्थी	मनसे	"	मनोभ्यः
५मी	मनसः	"	"
६ष्ठी	"	मनसोः	मनसाम्
७मी	मनसि	"	मनःसु
सम्बोधन	हे मनः	हे मनसी	हे मनांसि

इसी प्रकार नपुंसक लिङ्ग सकारान्त पयस् (दूध या जल); यशस् (यश), तमस् (अंधेरा) आदि के रूप होंगे।

अभ्यास

(१) रूप बनाइये—चन्द्रस् ३ या बहुव०; विद्वस्—२ या बहुव०; युवन्—७मी १ व०; पथिन्—१ मा १ व०; वाच्—३ या द्विव०; स्रज्—७मी बहुव०; सरित्—३ या १ व०; दिश्—५ मी १ व०; नामन्—६ ष्ठी १ व०; कर्मन्—३ या द्वि व०; मनस्—२ या बहुव०; विद्वस्—३ या १ व०; मनस्—३ या द्वि व०।

(२) संस्कृत बनाइये—विद्वान् ने; चन्द्रमाओं से; जवानों का, रास्ते में, वाणी से, दो मालाओं के लिए, दो दिशाओं का, नाम में; कामों का; मन का।

(३) शुद्ध कीजिए—विद्वानेषु; चन्द्रमाभिः, नामयो; कर्मस्य; युवानेन, पथस्य, सरितायाम्।

द्वितीय खण्ड

चतुर्थ अध्याय

सर्वनाम

१. पटेलः चतुरः राजनीतिज्ञः, तेन समः अपरः कोऽपि न; तस्य दीर्घमायुः स्यात्।

२. पटेलः चतुरो राजनीतिज्ञः; पटेलेन समः अपरः कोऽपि न; पटेलस्य दीर्घमायुः स्यात्।

ऊपर दो प्रकार के वाक्य-समूह दिए गये हैं। इन दोनों का आशय एक ही है, 'पटेल' चतुर राजनीति के पण्डित हैं; उनके बराबर दूसरा कोई नहीं है; उनकी दीर्घायु हो।

एक अर्थ होने वाले होने पर भी उन में से पहला वाक्य सुन्दर है और दूसरा असुन्दर कहा जाता है। क्योंकि पहले वाक्य-समूह में 'पटेल' शब्द एक ही बार आया है। दुबारा तिबारा जब उसकी आवश्यकता हुई है तो उसे न बोल कर उसकी जगह 'तेन' और 'तस्य' कहा गया है।

दूसरे वाक्य-समूह में बार २ पटेल शब्द आता है; अतः दूसरा वाक्य-समूह पुनरुक्ति दोष के कारण असुन्दर है। इस प्रकार यह बात सुन्दर रचना के लिए आवश्यक है कि

संज्ञा शब्दों की पुनरुक्ति न की जाय । अपितु जब कभी दु
तिवारा उन को बोलने की आवश्यकता हो तो उन के
में कोई दूसरे शब्द जो कि ठीक बैठते हों, बोले जायें।

बस उन्हीं को—'जो संज्ञा, शब्दों की पुनरुक्ति से बचने
लिये संज्ञाओं के स्थान में बोले जायें— 'सर्वनाम' कहते हैं।

यह शब्द तीनों लिङ्गों में आते हैं, अतः मुख्य २ सर्वना
के तीनों लिङ्गों के रूप नीचे दिये जाते हैं। कई विभक्ति
वा वचनों में साधारण संज्ञाओं के रूपों से इनके रूपों में
अन्तर हो जाता है।

पुंल्लिङ्ग 'सर्व' सब शब्द

विभक्ति	कारक	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	कर्ता	सर्वः	सर्वौ	सर्वे
२ या	कर्म	सर्वम्	सर्वौ	सर्वान्
३ या	करण	सर्वेण	सर्वाभ्याम्	सर्वैः
४ थी	सम्प्रदान	सर्वस्मै	,,	सर्वेभ्यः
५ मी	अपादान	सर्वस्मात्-द्	,,	,,
६ ठी	सम्बन्ध	सर्वस्य	सर्वयोः	सर्वेषाम्
७ मी	अधिकरण	सर्वस्मिन्	,,	सर्वेषु

स्मर्तव्य—१. सर्वनाम के रूपों में—प्रथमा के बहुवचन
चतुर्थी, पञ्चमी, सप्तमी के एक वचनों में
षष्ठी के बहुवचन में ही साधारण शब्दों से

होता है।

२. सर्वनामों का प्रायः सम्बोधन नहीं होता।

स्त्रीलिंग 'सर्व' 'शब्द' के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	सर्वा	सर्वे	सर्वाः
२ या	सर्वाम्	सर्वे	सर्वाः
३ या	सर्वया	सर्वाभ्याम्	सर्वाभिः
४ थी	सर्वस्यै	सर्वाभ्याम्	सर्वाभ्यः
५ मी	सर्वस्याः	,,	सर्वाभ्यः
६ ष्ठी	सर्वस्याः	सर्वयोः	सर्वासाम्
७ मी	सर्वस्याम्	,,	सर्वासु

नपुंसकलिंग 'सर्व' शब्द के रूप

१ मा	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि
२ या	सर्वम्	सर्वे	सर्वाणि

नपुंसक लिङ्ग में बाकी विभक्तियों में पुँल्लिङ्ग के समान ही रूप होते हैं।

विश्व, कतर, कतम, अन्य, अन्यतर, इतर, पूर्व, पर, दक्षिण, उत्तर, अपर, अधर और एक इन सर्वनामों का भी सर्व शब्द के समान रूप-समूह होगा।

विशेष—कतर, कतम, अन्य, अन्यतर, इतर इन शब्दों के नपुंसक लिंग के प्रथमा और द्वितीया विभक्ति के

एक वचन में म् की जगह त आ जाता है। जैसे
कतरत्, कतमत्, अन्यतरत्, इतरत्।

व्यञ्जनान्त सर्वनाम

स्मर्त्तव्य—१. व्यञ्जनान्त सर्वनामों का अन्तिम व्यञ्जन (नपुंसकलिङ्ग प्रथमा, द्वितीया के एक वचन छोड़ कर) उड़ जाता है।

२. इदम् शब्द का अन्तिम व्यञ्जन 'म्' किसी भी लिङ्ग में नहीं उड़ता।

३. तद्, एतद् के 'त्' को प्रथमा के एकवचन में स् हो जाता है।

तद् 'वह' पुँल्लिंग			(निर्देश-बोधक)	तद् 'वह' स्त्रीलिंग		
सः	तौ	ते	प्रथमा	सा	ते	
तम्	तौ	तान्	२ या	ताम्	ते	
तेन	ताभ्याम्	तैः	३ या	तया	ताभ्याम्	
तस्मै	,,	तेभ्यः	४ थी	तस्यै	,,	
तस्मात्	,,	,,	५ मी	तस्याः	,,	
तस्य	तयोः	तेषाम्	६ ठी	,,	तयोः	
तस्मिन्	तयोः	तेषु	७ मी	तस्याम्	तयोः	

नपुंसकलिंग 'तद्' (वह) शब्द

१ मा	तत्-द्	ते	तानि
२ या	तत्-द्	ते	तानि

शेष पुलिङ्ग के समान होंगे।
इसी तरह यद्, एतद् शब्दों के रूप चलेंगे। जैसे—

'यद्' (जो) शब्द के रूप

पुल्लिङ्ग	यः	यौ	ये
स्त्रीलिङ्ग	या	ये	याः
नपुंसकलिङ्ग	यत्-द्	ये	यानि

'एतद्' (यह) शब्द के रूप

पुंल्लिङ्ग	एषः	एतौ	एते
स्त्रीलिङ्ग	एषा	एते	एताः
नपुंसकलिङ्ग	एतत्-द्	एते	एतानि

सर्वनाम 'इदम्' (यह) शब्द के रूप

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	अयम्	इमौ	इमे
२ या	इमम्	इमौ	इमान्
३ या	अनेन	आभ्याम्	एभिः
४ र्थी	अस्मै	,,	एभ्यः
५ मी	अस्मात्	,,	,,

६ ष्ठी	अस्य	अनयोः	एषाम्
७ मी	अस्मिन्	अनयोः	एषु

'इदम्'-स्त्रीलिंग

इयम्	इमे	इमाः	प्रथमा
इमाम्	इमे	इमाः	२ या
अनया	आभ्याम्	आभिः	३ या
अस्यै	,,	आभ्यः	४ थी
अस्याः	,,	,,	५ मी
,,	अनयोः	आसाम्	६ ष्ठी
अस्याम्	अनयोः	आसु	७ मी

'इदम्'-नपुंसकलिंग

प्रथमा	इदम्	इमे	इमानि
२ या	इदम्	इमे	इमानि

नपुंसकलिंग में—शेष रूप पुंलिंग के समान ही होंगे।

'किम' (कौन) शब्द प्रश्न बोधक।

स्मर्तव्य—नपुंसकलिङ्ग प्रथमा के एक वचन को छोड़ कर अन्यत्र सभी जगह किम् को 'क' हो जाता है और सर्व शब्द के समान ही रूप होंगे। जैसे—

पुंल्लिग किम् शब्द — स्त्रीलिंग किम् शब्द

कः	कौ	के	प्रथमा	का	के	काः
कम्	कौ	कान्	२ या	काम्	के	काः

आगे सर्व शब्द पुंल्लिङ्ग के समान रूप

आगे सर्व शब्द स्त्रीलिङ्ग के समान रूप

'किम्' शब्द नपुंसकलिंग

किम्	के	कानि	१ मा	शेष पुँल्लिङ्ग की तरह
किम्	के	कानि	२ या	

'अदस्' (वह) शब्द पुंल्लिग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	असौ	अमू	अमी
२ या	अमुम्	अमू	अमून्
३ या	अमुना	अमूभ्याम्	अमीभिः
४ थीं	अमुष्मै	"	अमीभ्यः
५ मी	अमुष्मात्	"	"
६ ष्ठी	अमुष्य	अमुयोः	अमीषाम्
७ मी	अमुष्मिन्	"	अमीषु

अदस्' (वह) स्त्रीलिंग

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	असौ	अमू	अमूः
२ या	अमूम्	"	"
३ या	अमुया	अमूभ्याम्	अमूभिः
४ थीं	अमुष्यै	"	अमूभ्यः
५ मी	अमुष्याः	"	"
६ ष्ठी	"	अमुयोः	अमूषाम्
७ मी	अमुष्याम्	"	अमूषु

नपुंसकलिंग 'अदस्' [वह] शब्द

१ मा अदः अमू अमूनि } आगे पुंल्लिङ्ग के समान ही रूप होंगे
२ या अदः अमू अमूनि }

'युष्मद्' [तू] शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	त्वम्	युवाम्	यूयम्
२ या	त्वाम् (त्वा)	युवाम् (वाम्)	युष्मान् (वः)
३ या	त्वया	युवाभ्याम्	युष्माभिः
४ र्थी	तुभ्यम् (ते)	युवाभ्याम् (वाम्)	युष्मभ्यम् (वः)
५ मी	त्वत्	युवाभ्याम्	युष्मत्
६ ष्ठी	तव (ते)	युवयोः (वाम्)	युष्माकम् (वः)
७ मी	त्वयि	युवयोः	युष्मासु

'अस्मद्' [मैं] शब्द

विभक्ति	एकवचन	द्विवचन	बहुवचन
१ मा	अहम्	आवाम्	वयम्
२ या	माम्	,,	अस्मान्
३ या	मया	आवाभ्याम्	अस्माभिः
४ र्थी	मह्यम्	,,	अस्मभ्यम्
५ मी	मत्	,,	अस्मत्
६ ष्ठी	मम	आवयोः	अस्माकम्
७ मी	मयि	,,	अस्मासु

स्मर्तव्य—१ युष्मद्, अस्मद् शब्दों के तीनों लिङ्गों में

समान रूप होंगे।

२. ब्रैक्ट ( ) के अन्दर लिखे रूप वाक्य आदि में और च, वा के साथ नहीं आते। जैसे—मे पुस्तकम्, ते मे च पुस्तकम् अशुद्ध है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

सब में गुण हैं। हम में दोष बहुत हैं। जो हरि को भजता है, वह मज़ा पाता है। तुम दोनों ने क्या देखा? इनमें देवता रहते हैं।

२. हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

युष्माभिः किं पठितम्? अस्माकं गृहे पशवः सन्ति। तस्मै मुद्रां देहि। सर्वस्मै मधुरं रोचते अनया साधु उक्तम्! युष्मासु धैर्य्यम्। कस्मात् भयं करोषि?

३. नीचे लिखे रूप किस २ शब्द के किस २ विभक्ति में और वचन में हैं?

युवयोः, एते, आवाभ्याम्, अनयोः, अमुष्यै, तस्याः, मया, अमूनि, यस्याम्, कस्मिन्।

३. शुद्ध कीजिए :—

तवस्य, सर्वाणाम, मे पुस्तकम्, इदमेन, अदस्मात्, एषान।

विशेषण शब्द

श्वेतं वस्त्रम् (सफ़ेद कपड़ा), चतुरो दासः (चालाक नौकर) मूर्खो नरः (मूर्ख आदमी), इन वाक्यों में श्वेतं, चतुरः, मूर्खः, ये क्रम से कपड़े का रंग, नौकर का गुण और मनुष्य का दोष प्रकट करते हैं। इस प्रकार जो शब्द किसी पदार्थ के गुण, दोष, रंग, संख्या और परिमाण (तोल) आदि को प्रकट करें, उन्हें विशेषण कहते हैं। जिस पदार्थ के गुण दोष वगैरह बतलाये जायें, उसे विशेष्य कहते हैं।

स्मर्तव्य—विशेष्य का जो लिङ्ग, वचन और विभक्ति या कारक होगा, विशेषण में भी वह लिंग-वचन और विभक्ति या कारक आयेगा।

ये विशेषण **चार** प्रकार के होते हैं। जैसे :—१ गुणवाचक २ संख्या-बोधक, ३ परिमाण बोधक, ४ निर्देश

१. **गुण-बोधक विशेषण**—जो किसी का गुण दोष बतलाये जैसा—नीलः, सुन्दरी, चतुरः, मूढः आदि।

२. **संख्या-बोधक विशेषण**—जो गिनती को प्रकट करें : द्वौ नरौ में 'द्वौ', तिस्रः कन्यकाः में 'तिस्रः'। (संख्या-बोधक विशेषणों में से कुछ शब्द तीनों लिंगों में चलेंगे। इनका विशेष विवरण सर्वनाम प्रकरण के अनन्तर किया जायगा)।

३. **परिमाण-बोधक विशेषण**—जो नाप, तोल, लम्बाई, चौड़ाई बतलाये। जैसे द्रोणो (सेर भर) व्रीहिः (धान)।

४. **निर्देशक विशेषण**—जो किसी पदार्थ की ओर संकेत करें। जैसे—अयम् (यह), सः (वह), भवान् (आप)। निर्देशक विशेषण भी प्रायः सर्वनाम शब्द ही हैं, अत इन को सार्वनामिक विशेषण भी कहते हैं (सर्वनामों का वर्णन किया जा चुका है)।

तुलना 'तारतम्य' बोधक विशेषण

छात्रयोः पटुतरः (दो विद्यार्थियों में से चतुर),
नराणां आढ्यतमः (सब मनुष्यों में धनी)।

इस प्रकार दो में से किसी एक में विशेष गुण दोष की अधिकता करने के लिए, अथवा बहुतों में से किसी एक में किसी गुण दोष की अधिकता बतलाने के लिये तुलना (मुकाबला) की जाती है। अतः तुलना की तीन अवस्थायें मानी जाती हैं।

१ मूलावस्था, २ उत्तरावस्था ३ उत्तमावस्था

१. मूलावस्था में गुण-दोष वाचक शब्द अपने सामान्य रूप में ही रहता है। जैसे—पटुः, आढ्यः, लघु,, महान, दीर्घः आदि।

२. उत्तरावस्था में जब दो में से एक में अधिकता बतानी हो तो गुण दोष-वाचक शब्द के आगे संस्कृत में 'तर'

लगा दिया जाता है। जैसे—पटुतरः, महत्तरः, आढ्य
पवित्रतरः आदि।

यह 'तर' दो में एक की विशेषता प्रकट करने के लि
आता है।

३. उत्तमावस्था में जब बहुत या सब में से किसी एक
अधिकता बतानी हो तब गुण-दोष वाचक शब्द के आ
'तम' लगाते हैं। जैसे—पटुतमः, महत्तमः, आढ्यतम
पवित्रतमः इत्यादि।
ये 'तर' 'तम' गुण-बोधक और परिमाण-बोधक श
से ही आते हैं। संख्या-बोधक तथा निर्देश-बोधक श
से नहीं।

संख्या-वाचक विशेषण

एक, दो, तीन, चार आदि संख्या-वाचक शब्द ती
लिंगों में आते हैं। अतः इनके तीनों लिंगों के रूप ब
जाते हैं।

'एक' शब्द, पुल्लिग (सर्वनाम) यह प्रायः एक
वचन में ही रहता है।

१ मा—एकः, २ या—एकम्, ३ या—एकेन, ४ थीं—एकस्मै, ५ म
एकस्मात्-द्, ६ ष्ठी—एकस्य, ७ मी—एकस्मिन्।

'एक' शब्द स्त्रीलिंग सर्वनाम

१ मा—एका, २ या—एकाम्, ३ या—एकया, ४ थीं—एक

मी -एकस्याः; ६ ष्ठी-एकस्याः, ७ मी-एकस्याम् ।

नपुंसकलिंग 'एक' शब्द सर्वनाम

१ मा-एकम्, २ या-एकम्, आगे पुल्लिग के समान ।
द्वि शब्द पुंल्लिग 'सर्वनाम' यह द्विवचन में ही रहता है।
१ मा-द्वौ, २ या-द्वौ, ३ या-द्वाभ्याम् ४ र्थी-द्वाभ्याम ५ मी-द्वाभ्याम
६ ष्ठी-द्वयोः, ७ मी-द्वयोः !

'द्वि शब्द' स्त्री लिङ्ग तथा नपुंसकलिंग

१ माद्वे २ या-द्वे, शेष पुंल्लिग के समान ।

'त्रि' (तीन) शब्द पुल्लिग

यह बहुवचन में ही रहता है।

इसके आगे आने वाले चतुर, पञ्चन् आदि सभी शब्द केवल बहुवचन में ही रहेंगे।

१ मा-त्रयः, २ या-त्रीन्. ३ या-त्रिभिः, ४ र्थी-त्रिभ्यः,
५-मी त्रिभ्य,, ६ ष्ठी-त्रयाणाम, ७ मी-त्रिषु ।

'त्रि' शब्द स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग में त्रि शब्द के स्थान में 'तिसृ' हो जाता है और रूप इस प्रकार होंगे।

१ मा-तिस्रः, २ या-तिस्रः, ३ या-तिसृभिः,
४ र्थी-तिसृभ्यः, ५ मी-तिसृभ्यः, ६ ष्ठी-तिसृणां,
७ मी-तिसृषु ।

'त्रि' शब्द नपुंसकलिंग

१ मा-त्रीणि, २ या-त्रीणि, आगे पुंल्लिग के समान ।

'चतुर' शब्द पुल्लिंग

१ मा—चत्वारः, २ या—चतुरः, ३ या—चतुर्भिः,
४ र्थी—चतुर्भ्यः, ५ मी—चतुर्भ्यः, ६ ष्ठी—चतुर्णाम्,
७ मी—चतुर्षु ।

'चतुर' शब्द स्त्रीलिंग

स्त्रीलिंग में चतुर शब्द 'चतसृ' हो जाता है और रूप इ[illegible] तरह होंगे ।

१ मा—चतस्रः, २ या—चतस्रः, ३ या—चतसृभिः,
४ र्थी—चतसृभ्यः, ५मी—चतसृभ्यः, ६ ष्ठी—चतसृणाम्,
७ मी—चतसृषु ।

'चतुर' शब्द नपुंसकलिंग

१ मा—चत्वारि, २ या—चत्वारि, शेष पुंल्लिग के समान ।

'पञ्चन' (पांच)

१ मा—पञ्च २ या—पञ्च, ३ या—पञ्चभिः, ४ र्थी-

पञ्चभ्यः, ५ मी—पञ्चभ्यः, ६ ष्ठी—पञ्चानाम्
७ मी—पञ्चसु ।

'षट्' (छः)

१ मा-षड्-ट, २ या-षड्-ट, ३ या-षड्भिः, ४ र्थी-षड्भ्यः,
५ मी-षड्भ्यः, ६ ष्ठी-षण्णाम्, ७ मी-षट्सु ।

'सप्तन्' (सात)

१ मा-सप्त, २ या-सप्त, ३ या-सप्तभिः
४ र्थी-सप्तभ्यः, ५ मी-सप्तभ्यः, ६ ष्ठी-सप्तानाम्
७ मी-सप्तसु ।

'अष्ट्' (आठ)

१ मा-अष्टौ, २ या-अष्टौ, ३ या-अष्टभिः, अष्टाभिः,
४ र्थी-अष्टाभ्यः, अष्टभ्यः, ५ मी-अष्टभ्यः, अष्टाभ्यः,
६ ष्ठी-अष्टानाम्, ७ मी अष्टसु, अष्टासु ।

इसके आगे के नवन्, दशन् वगैरह सप्तन् के समान ।

एक से लेकर सौ तक संख्या

स्मर्तव्य—इन्हीं संख्यावाचक शब्दों से पहला, दूसरा, तीसरा, पहली, दूसरी, तीसरी आदि पूर्णार्थक शब्द भी तीनों लिङ्गों में बनते हैं, जो संख्या के साथ साथ ही लिखे जा रहे हैं ।

संख्या

१ एकः
२ द्वौ (पुं०)
द्वे (स्त्री०)
द्वे (नपुं०)
३ त्रयः (पुं०)
तिस्रः (स्त्री०)
त्रीणि (नपुं०)
४ चत्वारः (पुं०)
चतस्रः (स्त्री०)
चत्वारि (नपुं०)

संख्या	पूर्णार्थक पुं०	पूर्णार्थक स्त्री०	पूर्णार्थक नपुं०
१	प्रथमः	प्रथमा	प्रथमम्
२	द्वितीयः	द्वितीया	द्वितीयम्
३	तृतीयः	तृतीया	तृतीयम्
४	चतुर्थः	चतुर्थी	चतुर्थम्
५	पञ्चमः	पञ्चमी	पञ्चमम्
६ षट-ड्	षष्ठः	षष्ठी	षष्ठम्
७ सप्त	सप्तमः	सप्तमी	सप्तमम्
८ अष्टौ	अष्टमः	अष्टमी	अष्टमम्
९ नव	नवमः	नवमी	नवमम्

१० दश	दशमः	दशमी	दशमम्
११ एकादश	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
१२ द्वादश	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
१३ त्रयोदश	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
१४ चतुर्दश	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
१५ पञ्चदश	पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
१६ षोडश	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
१७ सप्तदश	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
१८ अष्टादश	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
१९ एकोनविंशतिः	एकोनविंशः	एकोकविंशी	एकोनविंशम्
	एकोनविंशतितमः	एकोनविंशतितमा	एकोनविंशतितमम्
२० विंशतिः	विंशः	विंशी	विंशम्
	विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२१ एकविंशतिः	एकविंशः	(०विंशी)	(विंशम्)
	एकविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२२ द्वाविंशति	द्वाविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	द्वाविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२३ त्रयोविंशतिः	त्रयोविंशः	(०विंशी)	(०तमम्)
२४ चतुर्विंशतिः	चतुर्विंशः	(०विंशीः)	(०विंशम्)
	चतुर्विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)

२५ पञ्चविंशतिः	पञ्चविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	पञ्चविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२६ षड्विंशति·	पड्विंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	षड्विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२७ सप्तविंशतिः	सप्तविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	सप्तविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२८ अष्टाविंशतिः	अष्टाविंशः	(०विंशी)	(०विशम्)
	अष्टाविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२९ एकोनत्रिंशत्	एकोनत्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	एकोनत्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३० त्रिंशत्	त्रिंशः	त्रिंशी	त्रिंशम्
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमा	त्रिंशत्तमम्
३१ एकत्रिंशत्	एकत्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	एकत्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३२ द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंशः	द्वात्रिंशी	द्वात्रिंशम्
	द्वात्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३३ त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंशः	(०त्रिंशी)	(त्रिंशम्)
	त्रयस्त्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३४ चतुस्त्रिंशत्		चतुस्त्रिंशः	(०शत्तमः)
चतुस्त्रिंशी	(०शत्तमा)	चतुस्त्रिंशम्	(०शत्तमम्)

३५ पञ्चत्रिंशत् पञ्चत्रिंशः (शत्तमः)
पञ्चत्रिंशी (शत्तमा) पञ्चत्रिंशम् (शत्तमम्)

३६ षट्त्रिंशत् षट्त्रिंशः (शत्तमः) षट्त्रिंशी (शत्तमा)
षट्त्रिंशम् (शत्तमम्)

३७ सप्तत्रिंशत् सप्तत्रिंशः शत्तमः, सप्तत्रिंशी 'शत्तमा'
सप्तत्रिंशं 'शत्तमम्'

३८ अष्टत्रिंशत् अष्टत्रिंशः (,,) अष्टात्रिंशी 'शत्तमम्'
अष्टात्रिंशम् 'शत्तमा'

३९ एकोनचत्वारिंशत् एकोनचत्वारिंशः (,,) एकोनचत्वारिंशी
एकोनचत्वारिंशम्

,, एकोनचत्वारिंशत्तमः एकोनचत्वारिंशत्तमा
एकोनचत्वारिंशत्तमम्

४० चत्वारिंशत् चत्वारिंशः (शत्तमः) चत्वारिंशी (शत्तमा)
चत्वारिंशम् (शत्तमम्)

४१ एकचत्वारिंशत् ..शः त्तमः...शी त्तमा शं...त्तमम्

४२ द्विचत्वारिंशत् .. शः त्तमः...शी त्तमा...शं . त्तमम्
द्वाचत्वारिंशत् ..शः त्तमः...शी त्तमा ...शं...त्तमम्

४३ त्रिचत्वारिंशत्...शः त्तमः ..शी त्तमा...शं....त्तमम्
त्रयश्चत्वारिंशत् ..शः त्तमः... शी त्तमा...शं... त्तमम्

४४ चतुश्चत्वारिंशत् ..शः त्तमः ...शी त्तमा ..शं... त्तमम्

४५ पञ्चचत्वारिंशत् शः त्तमः ..शी त्तमा शं...त्तमम्

४६ षट्चत्वारिंशत् ..शः त्तमः . शी त्तमा...शं...त्तमम्

४७ सप्तचत्वारिंशत् शः त्तमः.. शी त्तमा ..शं... त्तमम्

४८ अष्टचत्वारिंशत् . शः त्तमः शी त्तमा शं . त्तमम्

अष्टाचत्वारिंशत् ..शः त्तमः . शां त्तमः...शं.. त्तमम्

४९ एकोनपञ्चाशत्

एकोनपञ्चाशत्तमः शत्तमा शत्तमम्

५० पञ्चाशत् पञ्चाशत्तमः पञ्चाशत्तमा पञ्चाशत्तमम्

इसके आगे पूर्णार्थक बनाने के लिये संख्या के बाद केवल पुँल्लिग में तमः, स्त्रीलिंग में 'तमा' नपुंसकलिंग में 'तमम्' लगाया जायेगा। आगे केवल संख्या ही लिखी है।

५१ एकपञ्चाशत् ५२ द्विपञ्चाशत् ५३ त्रिपञ्चाशत्

द्वापञ्चाशत् त्रयः पञ्चाशत्

५४ चतुष्पञ्चाशत्

५५ पञ्च-पञ्चाशत् ५६ षट् पञ्चाशत् ५७ सप्तपञ्चाशत्

५८ अष्टपञ्चाशत्

५९ एकोनषष्टिः ६० षष्टिः ६१ एकषष्टिः ६२ द्विषष्टिः द्वाषष्टिः ६३ त्रिषष्टिः (त्रयः षष्टिः) ६४ चतुःषष्टिः

६५ पञ्चषष्टिः ६६ षट्षष्टिः ६७ सप्तषष्टिः ६८ अष्ट (अष्टा) षष्टिः ६९ एकोनसप्ततिः ७०सप्ततिः ७१ एक सप्ततिः ७२ द्विसप्ततिः, द्वासप्ततिः ७३ त्रिसप्ततिः, त्र सप्तति ७४ चतुः सप्ततिः ७५ पञ्चसप्ततिः ७६ षट्सप्त

१० दश	दशमः	दशमी	दशमम्
११ एकादश	एकादशः	एकादशी	एकादशम्
१२ द्वादश	द्वादशः	द्वादशी	द्वादशम्
१३ त्रयोदश	त्रयोदशः	त्रयोदशी	त्रयोदशम्
१४ चतुर्दश	चतुर्दशः	चतुर्दशी	चतुर्दशम्
१५ पञ्चदश	पञ्चदशः	पञ्चदशी	पञ्चदशम्
१६ षोडश	षोडशः	षोडशी	षोडशम्
१७ सप्तदश	सप्तदशः	सप्तदशी	सप्तदशम्
१८ अष्टादश	अष्टादशः	अष्टादशी	अष्टादशम्
१९ एकोनविंशतिः	एकोनविंशः	एकोकविंशी	एकोनविंशम्
	एकोनविंशतितमः	एकोनविंशतितमा	एकोनविंशतितमम्
२० विंशतिः	विंशः	विंशी	विंशम्
	विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२१ एकविंशतिः	एकविंशः	(०विंशी)	(विंशम्)
	एकविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२२ द्वाविंशति	द्वाविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	द्वाविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२३ त्रयोविंशतिः	त्रयोविंशः	(०विंशी)	(०तमम्)
२४ चतुर्विंशतिः	चतुर्विंशः	(०विंशीः)	(०विंशम्)
	चतुर्विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)

२५ पञ्चविंशतिः	पञ्चविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	पञ्चविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२६ षड्विंशतिः	षड्विंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	षड्विंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२७ सप्तविंशतिः	सप्तविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	सप्तविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२८ अष्टाविंशतिः	अष्टाविंशः	(०विंशी)	(०विंशम्)
	अष्टाविंशतितमः	(०तमा)	(०तमम्)
२९ एकोनत्रिंशत्	एकोनत्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	एकोनत्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३० त्रिंशत्	त्रिंशः	त्रिंशी	त्रिंशम्
	त्रिंशत्तमः	त्रिंशत्तमा	त्रिंशत्तमम्
३१ एकत्रिंशत्	एकत्रिंशः	(०त्रिंशी)	(०त्रिंशम्)
	एकत्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३२ द्वात्रिंशत्	द्वात्रिंशः	द्वात्रिंशी	द्वात्रिंशम्
	द्वात्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३३ त्रयस्त्रिंशत्	त्रयस्त्रिंशः	(०त्रिंशी)	(त्रिंशम्)
	त्रयस्त्रिंशत्तमः	(०त्तमा)	(०त्तमम्)
३४ चतुस्त्रिंशत्		चतुस्त्रिंशः	(०शत्तमः)
चतुस्त्रिंशी	(०शत्तमा)	चतुस्त्रिंशम्	(०शत्तमम्)

३५ पञ्चत्रिंशत् पञ्चत्रिंशः (शत्तमः)
पञ्चत्रिंशी (शत्तमा) पञ्चत्रिंशम् (शत्तमम्)

३६ षटत्रिंशत् षट्त्रिंशः (शत्तमः) षट्_त्रिंशी (शत्तमा)
षट्त्रिंशम् (शत्तमम्)

३७ सप्तत्रिंशत सप्तत्रिंशः शत्तमः, सप्तत्रिंशी 'शत्तमा'
सप्तत्रिंशं 'शत्तमम'

३८ अष्टत्रिंशत अष्टत्रिंशः (,,) अष्टात्रिंशी 'शत्तमम'
अष्टात्रिंशम् 'शत्तमा'

३९ एकोनचत्वारिंशत एकोनचत्वारिंशः (,,) एकोनचत्वारिंशी
एकोनचत्वारिंशम्

,, एकोनचत्वारिंशत्तमः एकोनचत्वारिंशत्तमा
एकोनचत्वारिंशत्तमम

४० चत्वारिंशत् चत्वारिंशः (शत्तमः) चत्वारिंशी (शत्तमा)
चत्वारिंशम् (शत्तमम्)

४१ एकचत्वारिंशत् ..शः त्तमः...शी त्तमा शं...त्तमम्
४२ द्विचत्वारिंशत् .. शः त्तमः...शी त्तमा...शं . त्तमम
द्वाचत्वारिंशत् ..शः त्तमः...शी त्तमा ...शं...त्तमम्
४३ त्रिचत्वारिंशत्...शः त्तमः ..शी त्तमा...शं....त्तमम्
त्रयश्चत्वारिंशत् ..शः त्तमः... शी त्तमा...शं_त्तमम्
४४ चतुश्चत्वारिंशत...शःत्तमः...शी त्तमा...शं...त्तमम्

४५ पञ्चचत्वारिंशत् शः त्तमः ..शी त्तमा शं...त्तमम्

४६ षट्चत्वारिंशत् . शः त्तमः . शी त्तमा...शं...त्तमम्

४७ सप्तचत्वारिंशत् शः त्तमः.. शी त्तमा ..शं...त्तमम्

४८ अष्टचत्वारिंशत् . शः त्तमः शी त्तमा शं . त्तमम्

अष्टचत्वारिंशत् ..शः त्तमः शी त्तमः...शं... त्तमम्

४९ एकोनपञ्चाशत्

एकोनपञ्चाशत्तमः शत्तमा शत्तमम्

५० पञ्चाशत् पञ्चाशत्तमः पञ्चाशत्तमा पञ्चाशत्तमम्

इसके आगे पूर्णार्थक बनाने के लिये संख्या के बाद केवल पुँल्लिग में तमः, स्त्रीलिंग में 'तमा' नपुंसकलिंग में 'तमम्' ही लगाया जायेगा। आगे केवल संख्या ही लिखी है।

५१ एकपञ्चाशत् ५२ द्विपञ्चाशत् ५३ त्रिपञ्चाशत्

द्वापञ्चाशत् . त्रया पञ्चाशत्

५४ चतुष्पञ्चाशत्

५५ पञ्च-पञ्चाशत् ५६ षट् पञ्चाशत् ५७ सप्तपञ्चाशत्

५८ अष्टपञ्चाशत्

५९ एकोनषष्टिः ६० षष्टिः ६१ एकषष्टिः ६२ द्विषष्टिः, द्वाषष्टिः ६३. त्रिषष्टिः (त्रयः षष्टिः) ६४ चतुःषष्टिः ६५ पञ्चषष्टिः ६६ षट्षष्टिः ६७ सप्तषष्टिः ६८ अष्ट (अष्टा) षष्टिः ६९ एकोनसप्ततिः ७०सप्ततिः ७१ एक-सप्ततिः ७२ द्विसप्तति, द्वासप्ततिः ७३ त्रिसप्ततिः, त्रयः सप्तति ७४ चतुः सप्ततिः ७५ पञ्चसप्ततिः ७६ षट्सप्ततिः

७७ सप्त सप्ततिः ७८ अष्टसप्ततिः; अष्टासप्ततिः ७९ एकोनाशीतिः ८० अशीतिः ८१ एकाशीतिः ८२ द्व्यशीतिः ८३ त्र्यशीतिः ८४ चतुरशीतिः ८५ पञ्चाशीतिः ८६ षडशीतिः ८७ सप्ताशीतिः ८८ अष्टाशीतिः ८९ एकोननवतिः ९० नवतिः ९१ एकनवतिः ९२ द्वि (द्वा) नवतिः ९३ त्रिनवतिः ९४ चतुर्नवतिः ९५ पञ्चनवतिः ९६ षण्णवतिः ९७ सप्तनवतिः ९८ अष्ट (ष्टा) नवतिः ९९ एकोनशतम् १०० शतम्।

सौ से ऊपर की कुछ संख्याएं—

एक शतम् १०० एक सौ, द्वि शतम् दो सौ, त्रिशतम् तीन सौ, सहस्रम् हज़ार, अयुतम् दस हज़ार, लक्षम् (लाख) नियुतम् (दस लाख), कोटिः (करोड़)।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

त्रिंशोऽध्यायः। एकोनपञ्चाशत्तमा पुरी। अयुतं मनुष्याः एकनवतिः फलानि। द्व्यशीतिः वस्त्राणि। तिस्रः कोटीः।

२. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

पचासवां अध्याय। बीसवीं सदी। पैंसठ राजदूत। अठत्तर पुस्तकें। सत्तासी नगरियां। दो हज़ार सिपाही।

३. इन संख्याओं को संस्कृत में बताइए :—

२४, २९, ३८, ५१, ६५, ८६, ८९, ९३।

अव्यय

व्यय का अर्थ है—विकार, अव्यय का अर्थ है—वि रहित। इस प्रकार जिन शब्दों में कभी कोई विकार नहीं हो अव्यय कहलाते हैं।

इसके चार मुख्य भेद हैं—

१ उपसर्ग २ निपात ३ साधारण अव्यय ४ विशेषण अव्यय।

१. उपसर्ग —उप का अर्थ है पास—सर्ग का अर्थ है— या बदलना। इस प्रकार जो अव्यय किसी धातु के रह कर उसके असली अर्थ को बदल दें, उन्हें उ कहते हैं। उदाहरणतः—हृ धातु से हार बनता है, जि अर्थ ले जाना होता है, परन्तु अलग अलग उपसर्गों से इस का अर्थ बिलकुल बदल जाता है। जैसे—प्रह मारना, आहार—खाना, संहार—समाप्त करना, विह घूमना, परिहार—छोड़ना। इसी प्रकार और धातुओं साथ जुड़ कर भी उपसर्ग उन धातुओं के अर्थ को देते हैं। जैसे—गच्छति—जाता है, आगच्छति—आत ये उपसर्ग २२ हैं—

प्र-परा—अप— सम्—अनु —अव - निस्—निर्—दुस् पि— आङ्—नि – अधि— अपि—अति —सु—उत – अ प्रति—परि – उप।

इन उपसर्गों का धातुओं के साथ प्रयोग होने से धातुओं

अर्थ में बहुत ही परिवर्तन हो जाता है, जो धातुओं के वर्णन के प्रसङ्ग में किया जाएगा।

स्मरणीय— कभी कहीं कहीं उपसर्ग से धातु का अर्थ नहीं भी बदलता। जैसे—आ-गच्छति=आता है, अध्यागच्छति =आता है। यहां अधि निरर्थक उपसर्ग है।

२ **निपात**—जिन अव्ययों का प्रसंग के अनुसार अर्थ बदलता रहे अर्थात् एक ही अव्यय के जगह जगह कई अर्थ हो जायें, उन्हें निपात कहते हैं। जैसे—'इति' अव्यय समाप्ति के अर्थ में होता है, परन्तु "इत्याह": इस वाक्य में वह पीछे कही गई बात का बोधक हो जाता है। इत्याह—यह कहा।

इसी प्रकार च का भी समुच्चय कभी विकल्प अर्थ हो जाता है।

निपात असंख्य हैं जिन में से कुछ ये हैं—च, वा, हा, एवं, नूनम्, किल, अहो।

३ **साधारण अव्यय**—उपसर्ग और निपातों के अतिरिक्त ऐसे ही कुछ और शब्द जो सदा सब जगह एक रूप हों, वे साधारण अव्यय कहलाते हैं। साधारण अव्यय बहुत से हैं, जिन में से मुख्य मुख्य ये हैं:—

अतः=इस लिये	इति=समाप्ति	बहुधा=बहुत बार
अद्य=आज	इव=समान	कदा=कब
अत्र=यहां	एव=ही	चेत्=अगर

अथ=प्रारम्भ	एवम्=इस तरह (यों)	खलु=अवश्य
अथवा=या	उच्चैः=ऊँचा	तूष्णीम्=चुपचाप
अधः=नीचे	नीचैः=नीचे	अलम्=बस
अधुना=अब	शनैः=धीरे	नूनम्=अवश्य
अपि=भी	मिथः=आपस में	पुरः=आगे
इतः=इधर से	मुहुः=बार २	पुनः=फिर, दोबारा
प्रायः=अक्सर	प्रातः=सवेरे	भूयः=फिर, दोबारा
सकृत्=एकबार	सायम्=सांझ में	दिवः=दिन में

श्वः=कल (आने वाला)—ह्यः=कल (पिछला दिन)

सततम्=लगातार।

(४) क्रिया-विशेषण अव्यय—जो अव्यय क्रिया की विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहते हैं। जैसे—शनैः गच्छति (धीरे से जाता है) आशु वदति—जल्दी बोलता है। उच्चैर्गायति—ऊँचे गाता है इत्यादि।

अभ्यास

१. अव्यय के कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद का स्पष्टीकरण कीजिए।

२. कुछ वाक्य ऐसे बनाइए जिन में नीचे लिखे अव्ययों का उपयोग किया गया हो—

च, वा, अहो, नूनम्, एवम् अधः, इतः, चेत्, मिथः, शनैः।

७७ सप्त सप्ततिः ७८ अष्टसप्ततिः; अष्टासप्ततिः ७९ एकोन-
शीतिः ८० अशीतिः ८१ एकाशीतिः ८२ द्वयशीतिः ८३ त्र्य-
शीतिः ८४ चतुरशीतिः ८५ पञ्चाशीतिः ८६ षडशीतिः
८७ सप्ताशीतिः ८८ अष्टाशीतिः ८९ एकोननवतिः ९० नवतिः
९१ एकनवतिः ९२ द्वि (द्वा) नवतिः ९३ त्रिनवतिः ९४ चतु-
र्नवतिः ९५ पञ्चनवतिः ९६ षण्णवतिः ९७ सप्तनवतिः
९८ अष्ट (ष्टा) नवतिः ९९ एकोनशतम् १०० शतम्।

सौ से ऊपर की कुछ संख्याएं—

एक शतम् १०० एक सौ, द्वि शतम् दो सौ, त्रिशतम् तीन सौ, सहस्रम् हज़ार, अयुतम् दस हज़ार, लक्षम् (लाख) नियुतम् (दस लाख), कोटिः (करोड़)।

अभ्यास

१. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

त्रिंशोऽध्यायः। एकोनपञ्चाशत्तमा पुरी। अयुतं मनुष्याः एकनवतिः फलानि। द्वयशीतिः वस्त्राणि। तिस्रः कोटीः।

२. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

पचासवां अध्याय। बीसवीं सदी। पैंसठ राजदूत। अठत्तर पुस्तकें। सत्तासी नगरियां। दो हज़ार सिपाही।

३. इन संख्याओं को संस्कृत में बताइए :—

२४, २६, ३८, ४१, ६५, ८६, ८९, ९३।

अर्थ में बहुत ही परिवर्तन हो जाता है, जो धातुओं के वर्णन के प्रसङ्ग में किया जाएगा।

स्मरणीय-- कभी कहीं कहीं उपसर्ग से धातु का अर्थ नहीं भी बदलता। जैसे—आ-गच्छति=आता है, अध्यागच्छति =आता है। यहां अधि निरर्थक उपसर्ग है।

२ **निपात**—जिन अव्ययों का प्रसंग के अनुसार अर्थ बदलता रहे अर्थात् एक ही अव्यय के जगह जगह कई अर्थ हो जायें, उन्हें निपात कहते हैं। जैसे—'इति' अव्यय समाप्ति के अर्थ में होता है, परन्तु "इत्याह": इस वाक्य में वह पीछे कही गई बात का बोधक हो जाता है। इत्याह—यह कहा।

इसी प्रकार च का भी समुच्चय कभी विकल्प अर्थ हो जाता है।

निपात असंख्य हैं जिन में से कुछ ये हैं—च, वा, हा, एवं, नूनम्, किल, अहो।

३ **साधारण अव्यय**—उपसर्ग और निपातों के अतिरिक्त ऐसे ही कुछ और शब्द जो सदा सब जगह एक रूप हों, वे साधारण अव्यय कहलाते हैं। साधारण अव्यय बहुत से हैं, जिन में से मुख्य मुख्य ये हैं:—

अतः=इस लिये	इति=समाप्ति	बहुधा=बहुत बार
अद्य=आज	इव=समान	कदा=कब
अत्र=यहां	एव=ही	चेत्=अगर

अथ=प्रारम्भ
अथवा=या
अधः=नीचे
अधुना=अब
अपि=भी
इतः=इधर से
प्रायः=अक्सर
सकृत्=एकबार

एवम्=इस तरह (यों)
उच्चैः=ऊँचा
नीचैः=नीचे
शनैः=धीरे
मिथः=आपस में
मुहुः=बार २
प्रातः=सवेरे
सायम्=सांझ में

खलु=अवश्य
तूष्णीम्=चुपचाप
अलम्=बस
नूनम्=अवश्य
पुरः=आगे
पुनः=फिर, दोबारा
भूयः=फिर, दोबारा
दिवः=दिन में

श्वः=कल (आने वाला)—ह्यः=कल (पिछला दिन)
सततम्=लगातार।

(४) **क्रिया-विशेषण अव्यय**—जो अव्यय क्रिया विशेषता प्रकट करते हैं, उन्हें क्रियाविशेषण अव्यय कहते जैसे—शनैः गच्छति (धीरे से जाता है) आशु वदति—जल्दी बोलता है। उच्चैर्गायति—ऊँचे गाता है इत्यादि।

अभ्यास

१. अव्यय के कितने भेद हैं? प्रत्येक भेद का करण कीजिए।

२. कुछ वाक्य ऐसे बनाइए जिन में नीचे लिखे अ का उपयोग किया गया हो—

च, वा, अहो, नूनम, एवम् अधः, इतः, चेत्, भूयः, शनैः।

तृतीय खण्ड

प्रथम अध्याय

गण प्रकरण

तिङन्त

शब्द परिचय में लिखा जा चुका है कि संस्कृत भाषा के शब्द दो तरह के हैं, १. सुबन्त, २. तिङन्त। उनमें अब तिङन्त का वर्णन किया जाता है। तिङन्त शब्द धातुओं से बनते हैं।

धातु—शब्दों को उस मूल प्रकृति को कहते हैं, जिस के परे कुछ प्रत्यय जोड़ने से क्रिया शब्द या नाम शब्द बन जाते हैं।

क्रिया

'गांधी वदति' गांधी जी कहते हैं, इस वाक्य में गांधी जी कहने का काम कर रहे हैं। यहां 'वदति' क्रिया है। क्रिया उसे कहते हैं जिस से कुछ करना या होना पाया जाये। ये क्रियायें धातुओं से बनती हैं। धातु दो तरह के हैं। कुछ परस्मैपदी, कुछ आत्मनेपदी।

जिन धातुओं के बाद 'ति, त, अन्ति' आदि प्रत्यय लगते हैं, वे 'परस्मैपदी' कहलाते हैं; और जिन के परे 'ते' आते, अन्ते' आदि प्रत्यय आयें उन्हें 'आत्मनेपदी' कहते हैं। कुछ धातु ऐसे

भी होते हैं जिन के परे दोनों ही प्रकार के प्रत्यय आते हैं उनको **उभयपदी** धातु कहते हैं।

ये प्रत्यय परस्मैपद के ६ और आत्मनेपद के भी ६, कुल मिला कर १८ हैं, इन्हीं को 'तिङ्' कहते हैं और जिन के आगे ये आयें, उन शब्दों को 'तिङन्त' कहते हैं।

परस्मैपद के ६ प्रत्ययों तथा आत्मनेपद के ६ प्रत्ययों के तीन तीन वर्ग हैं, जिन्हें क्रम १ प्रथम पुरुष, २ मध्यम पुरुष और ३ उत्तम पुरुष कहते हैं। हर एक पुरुष में तीन तीन प्रत्यय हैं जो क्रम से एकवचन, द्विवचन बहुवचन कहे जाते हैं। नीचे परस्मैपद और आत्मनेपद के मूल प्रत्यय अलग अलग दिये जाते हैं —

परस्मैपद के प्रत्यय				आत्मनेपद के प्रत्यय			
	एक०	द्वि०	बहु०		एक०	द्वि०	बहु०
प्र. पु०	ति	तः	अन्ति	प्र पु०	ते	आते	अन्ते
म. पु०	सि	थः	थ	म. पु०	से	आथे	ध्वे
उ. पु०	मि	वः	मः	उ. पु०	ए	वहे	महे

पुरुष व्यवस्था

१. क्रिया करने वाला कर्त्ता यदि स्वयं कह रहा है कि मैं कह रहा हूँ, तो उस में **उत्तमपुरुष** ही आता है और कर्त्ता सदा अस्मद् शब्द ही रहेगा। अर्थात् यदि कर्ता का बोध अस्मद्

शब्द से हो तो क्रियापद में उत्तम पुरुष के प्रत्यय लगते हैं।

२ या कहने वाले के सामने कोई दूसरा क्रिया करने वाला हो जिसको कहने वाला निर्देश करे 'तू' कर रहा है तो उसमें मध्यमपुरुष ही आयेगा और कर्त्ता सदा युष्मद् शब्द ही रहता है। अर्थात् यदि कर्त्ता का उल्लेख युष्मद् शब्द से हो तो क्रियापद में मध्यमपुरुष के प्रत्यय लगते हैं।

६. यदि कहने वाले अथवा निर्देश किये जाने वाले, दोनों कर्त्ताओं से अलग कोई कर्त्ता हो तो उस में सदा प्रथम पुरुष होगा। युष्मद् और अस्मद् के विना और जो भी शब्द कर्त्ता हो, वहां सदा प्रथमपुरुष ही आयेगा।

वचन

एक कर्त्ता हो तो एकवचन, दो कर्त्ता हों तो द्विवचन और बहुत से कर्त्ता हों तो बहुवचन होता है।

काल या लकार

हर एक क्रिया का किसी न किसी काल से सम्बन्ध होता है। कोई क्रिया वर्त्तमान समय में हो रही है, कोई हो चुकी होगी या होने वाली होगी। जो समय इस वक्त सामने है, इसे 'वर्तमान काल' कहते हैं। जो बीत चुका है, उसे 'भूतकाल' कहते हैं और जो आने वाला है, उसे 'भविष्यत काल' कहते हैं। भिन्न भिन्न कालों में धातुओं के अलग अलग प्रकार

के रूप चलेंगे और हर एक काल में अलग अलग प्रत्यय आयेंगे इन प्रत्ययों को ही 'लकार' कहते हैं। यह मुख्य रूप में **पाँच** हैं

१. **लट्** = वर्त्तमान काल, २. **लोट्** = आज्ञा, विधि **लिङ्** = सम्भावना, निमन्त्रण आदि, ४. **लङ्** = भूतकाल ५. **लृट्** = भविष्यत काल।

लकार स्वयं बोलने या सुनने में नहीं आता, उसकी जगह सदा परस्मैपद या आत्मनेपद का कोई न कोई प्रत्यय आ जाता है।

हर एक लकार के भिन्न २ प्रत्यय हैं। जो प्रत्यय परस्मैपद और आत्मनेपद के पहले लिखे गये हैं, वे मूल प्रत्यय हैं। हर एक लकार में इन्हीं में कुछ २ परिवर्तन हो जाता है, जो उन २ लकारों कें वर्णन के समय बतलाया जायेगा।

गण व्यवस्था

प्रायः धातुओं से परे सीधे ति, त, अन्ति आदि प्रत्यय नहीं आते। धातु और ति, तः अन्ति आदि के बीच में कुछ और भी अक्षर आ जाते हैं। जैसे—'पठति' इसमें पठ और ति के मध्य 'अ' पठ्+अ+ति=पठति। धातु और प्रत्ययों के बीच जो अक्षर आते हैं, उन्हें 'विकरण' कहते हैं। जिन धातुओं से एक ही प्रकार का विकरण आता है, उन्हीं उन्हीं धतुओं का एक एक वर्ग बना दिया गया है जिसे गण कहते हैं। गण की पहली धातु के नाम पर ही उस का नाम रख

दिया गया है। जैसे—भ्वादिगण, अदादिगण। ये सब गण कुल १० हैं। कुछ यहां दिये गये हैं। सब में अलग अलग विकरण आते हैं। पहला गण भ्वादिगण है। इसमें 'अ' विकरण आता है। प्रायः इसी गण की क्रियायें अधिकतर प्रयोग में आती हैं। नीचे भ्वादिगण की पठ् धातु के अलग अलग लकारों के अलग अलग प्रत्यय और अलग अलग रूप लिखे जाते हैं।

भ्वादिगण—परस्मैपद पठ् (पढ़ना) धातु के रूप

वर्तमान काल लट् लकार के प्रत्यय

पुरुष —	एकवचन	द्विवचन	वहुवचन
प्रथम पुरुष	ति	तः	अन्ति
मध्यम पुरुष	सि	थः	थ
उत्तम पुरुष	मि	वः	मः

धातु—पठ्—विकरण—अ, प्रत्यय—ति, पठ्+अ+ति=पठति। इसी तरह लट् लकार के बाकी रूप भी बनेंगे।

पठ् (पढ़ना) लट् लकार

प्रथम पुरुष— (सः) पठति
(तौ) पठतः (ते) पठन्ति
मध्यम पुरुष— (त्वं) पठसि
(युवां) पठथः (यूयं) पठथ
उत्तम पुरुष— (अहं) पठामि
(आवां) पठावः (वयं) पठामः

स्मर्तव्य—मि, वः, मः, परे आने पर ह्रस्व अ को दीर्घ आ हो जाता है। जैसे—पठामि, पठावः, पठामः।

लोट् लकार (आज्ञा) के प्रत्यय

प्रथम पु०	तु	ताम्	अन्तु
मध्यम पु०	हि (अथवा-कुछ नहीं)	तम	त
उत्तम पु०	आनि	आव	आम

'पठ् धातु लोट् के रूप

प्र० पु०	पठतु	पठताम्	पठन्तु
म० पु०	पठ	पठताम्	पठत
उ० पु०	पठानि	पठाव	पठाम

लिङ् लकार (विधि, निमन्त्रण आदि) के प्रत्यय

प्र० पु०	एत्	एताम्	एयुः
म० पु०	एः	एतम्	एत
उ० पु०	एयम्	एव	एम

'पठ' लिङ् लकार के रूप

प्र० पु०	पठेत्-द्	पठेताम्	पठेयुः
म० पु०	पठेः	पठेतम्	पठेत
उ० पु०	पठेयम्	पठेव	पठेम

लङ् लकार (भूत काल) के प्रत्यय

प्र० पु०	त्	ताम्	अन्
म० पु०	:	तम्	त
उ० पु०	म्	व	म

'पठ्' लङ् लकार के रूप

स्मर्तव्य—लङ् लकार में व्यञ्जनादि धातु से पूर्व 'अ' आता है और स्वरादि धातु के पूर्व 'आ' हो जाता है तथा 'अ' को धातु के स्वर के साथ वृद्धि सन्धि हो जाती है।

प्र० पु०	अपठत्-द्	अपठताम्	अपठन्
म० पु०	अपठः	अपठतम्	अपठत
उ० पु०	अपठम्	अपठाव	अपठाम

लृट् लकार भविष्यत् काल के प्रत्यय

स्मर्तव्य—ये प्रत्यय दो प्रकार के हैं :—

प्र० पु०	इष्यति	स्यति,	इष्यतः
	स्यतः,	इष्यन्ति	स्यन्ति।
म० पु०	इष्यसि	स्यसि,	इष्यथः
	स्यथः,	इष्यथ	स्यथ।
उ० प्र०	इष्यामि	स्यामि,	इष्यावः
	स्यावः,	इष्यामः	स्यामः।

कई धातुओं से परे इ वाले प्रत्यय आते हैं, कइयों से इ रहित और कइयों से दोनों तरह के। पठ् धातु से इ वाले ही आते हैं।

'पठ' लृट् लकार के रूप

प्र० पु०	पठिष्यति	पठिष्यतः	पठिष्यन्ति
म० पु०	पठिष्यसि	पठिष्यथः	पठिष्यथ
उ० पु०	पठिष्यामि	पठिष्यावः	पठिष्यामः

स्मर्तव्य— १. लृट लकार में जिन धातुओं से परे 'इष्यति' आदि इ वाले प्रत्यय आयेंगे, उन धातुओं को सेट् धातु कहेंगे। जिन के परे 'स्यति' आदि प्रत्यय आयेंगे उन्हें अनिट् धातु कहेंगे। जैसे—दास्यति – देगा।

२. लृट् लकार में किसी भी गण में विकरण नहीं आता है। भ्वादि गण के दूसरे परस्मैपदी धातुओं के रूप भी पठ् के समान ही होंगे। कुछ के रूप उदाहरण के तौर पर थोड़े से यहां दिये जाते हैं—

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
गम् (गच्छ)	जाना	गच्छति	गच्छतु
हस्	हंसना	हसति	हसतु
रत्त्	रत्ता करना	रत्तति	रत्ततु
वद्	बोलना	वदति	वदतु
स्था (तिष्ठ्)	ठहरना	तिष्ठति	तिष्ठतु

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
क्रीड्	खेलना	क्रीडति	क्रीडतु
नम्	झुकना	नमति	नमतु
दृश् (पश्य्)	देखना	पश्यति	पश्यतु
स्मृ (स्मर)	याद करना	स्मरति	स्मरतु
पा (पिव्)	पीना	पिवति	पिवतु
त्यज्	छोड़ना	त्यजति	त्यजतु
खाद्	खाना	खादति	खादतु
वाञ्छ्	चाहना	वाञ्छति	वाञ्छतु
वस्	रहना	वसति	वसतु
चर्	घूमना (खाना)	चरति	चरतु
पत्	गिरना	पतति	पततु
बुध् (बोध)	जानना	बोधति	बोधतु
भू (भव्)	होना	भवति	भवतु

नोट :—	विधिलिङ्	लङ्	लृट्
ऊपर दिये धातुओं के क्रमानुसार लिङ् लङ् और लृट् में रूप	गच्छेत्-द्	अगच्छत्-द्	गमिष्यति
	हसेत्-द्	अहसत्-द्	हसिष्यति
	रचेत्-द्	अरचत्-द्	रचिष्यति
	वदेत्-द्	अवदत्-द्	वदिष्यति
	तिष्ठेत्	अतिष्ठत्-द्	स्थास्यति

क्रीडेत्-द्	अक्रीडत्-द्	क्रीडिष्यति
नमेत्-द्	अनमत्-द्	नस्यति
पश्येत्-द्	अपश्यत्-द्	द्रक्ष्यति
स्मरेत्-द्	अस्मरत्-द्	स्मरिष्यति
जयेत्-द्	अजयत्-द्	जेष्यति
पिबेत्-द्	अपिबत्-द्	पास्यति
त्यजेत्-द्	अत्यजत्-द्	त्यक्ष्यति
खादेत्-द्	अखादत्-द्	खादिष्यति
वाञ्छेत्-द्	अवाञ्छत्-द्	वाञ्छिष्यति
वसेत्-द्	अवसत्-द्	वात्स्यति
चरेत्-द्	अचरत्-द्	चरिष्यति
पतेत्-द्	अपतत्-द्	पतिष्यति
बोधेत्-द्	अबोधत्-द्	बोधिष्यति
भवेत्-द्	अभवत्-द्	भविष्यति

श्रु (शृणु) धातु (सुनना)

इस में ति, सि, परे होने पर, उ को ओ गुण हो जाता है अन्ति आदि स्वरादि प्रत्यय परे आने पर 'उ' को 'व्' अर्थात् यणसन्धि हो जाती है। इस धातु में भ्वादिगण का होने पर भी 'अ' विकरण नहीं आता।

लट् लकार (वर्तमान काल)

प्रथम पुरुष	शृणोति	शृणुतः	शृण्वन्ति

मध्यम पुरुष	शृणोषि	शृणुथः	शृणुथ
उत्तम पुरुष	शृणोमि	'शृणुवः' शृण्वः	शृणुमः शृण्मः

स्मर्तव्य—व, म परे होने पर पक्ष में उ का लोप भी हो जाता है ;

लोट् (आज्ञा)

प्र० पु०	शृणोतु	शृणुताम्	शृण्वन्तु
म० पु०	शृणु	शृणुतम्	शृणुत
उ० पु०	शृण्वानि	शृण्वाव	शृण्वाम

लङ् (भूतकाल)

प्र० पु०	अशृणोत्-द्	अशृणुताम्	अशृण्वन्
म० पु०	अशृणोः	अशृणुतम्	अशृणुत
उ० पु०	अशृणुव	अशृणुव	अशृणुम
		(अशृण्व)	(अशृण्म)

विधिलिङ् (विधि निमन्त्रणादि)

प्र० पु०	शृणुयात्-द्	शृणुयाताम्	शृणुयुः
म० पु०	शृणुयाः	शृणुयाताम्	शृणुयात
उ० पु०	शृणुयाम्	शृणुयाव	शृणुयाम

स्मर्तव्य—विधिलिङ् में इस धातु में एत्, एताम्, एयुः आदि प्रत्ययों के बजाय, यात् याताम्, युः, आदि प्रत्यय आते हैं।

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	श्रोष्यति	श्रोष्यतः	श्रोष्यन्ति
म० पु०	श्रोष्यसि	श्रोष्यथः	श्रोष्यथ
उ० पु०	श्रोष्यामि	श्रोष्यावः	श्रोष्यामः

स्मर्तव्य—लृट् लकार में शृणु के स्थान मूल रूप श्रु ही रहेगा और उस के 'उ' को सभी प्रत्ययों में 'ओ' गुण हो जाता है।

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

तू जानता था। मैं गांव को गया। मुनि से सीखना चाहता है। ज्ञान से धन अधम है। वृक्ष से पत्ता गिरेगा। मैं रोटी खाऊँगा। तुम दो देख रहे थे। हम सब स्कूल जायेंगे। मनुष्य सब प्राणियों में श्रेष्ठ है। स्वतन्त्रता की रक्षा करो। क्या तुमने सुना ?

२. हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

शूराः रणे रिपुं जयन्ति। भारतीयाः स्वधर्मं रक्षिष्यन्ति। यूयं वेदात् पठत। वयं शास्त्राणि रक्षेम। बुधाः ज्ञानरसं पिबन्तु। अवगुणान् त्यजत। भरतः सदा शत्रून् अजयत्। किम अहं शृणुयाम् ?

आत्मनेपद के प्रत्यय

जिस तरह परस्मैपद में हर एक लकार के अलग २ प्रत्यय हैं, उसी तरह आत्मनेपद में भी हर एक लकार के अलग २ प्रत्यय हैं, जो क्रमश नीचे लिखे जाते हैं—

आत्मनेपद के लट् लकार के प्रत्यय

प्रथम पुरुष	ते	एते	अन्ते
मध्यम पुरुष	से	एथे	ध्वे
उत्तम पुरुष	ए	वहे	महे

आत्मनेपदी लभ् (पाना) धातु के वर्तमान काल लट् के रूप

प्र० पु०	लभते	लभेते	लभन्ते
म० पु०	लभसे	लभेथे	लभध्वे
उ० पु०	लभे	लभावहे	लभामहे

आत्मनेपद लोट् लकार के प्रत्यय

प्र० पु०	ताम्	एताम्	अन्ताम्
म० पु०	स्व	एथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ए	आवहै	आमहै

लभ् धातु लोट् (आज्ञा) के रूप

प्र० पु०	लभताम्	लभेताम्	लभन्ताम्
म० पु०	लभस्व	लभेथाम्	लभध्वम्
उ० पु०	लभै	लभावहै	लभामहै

आत्मनेपद लङ् (भूतकाल) के प्रत्यय

प्र० पु०	त	एताम्	अन्त
म० पु०	थाः	एथाम्	ध्वम्
उ० पु०	ए	वहि	महि

लभ् धातु लङ् (भूतकाल) के रूप

प्र० पु०	अलभत	अलभेताम्	अलभन्त
म० पु०	अलभथाः	अलभेथाम्	अलभध्वम्
उ० पु०	अलभे	अलभावहि	अलभामहि

आत्मनेपद लिङ् के प्रत्यय

प्र० पु०	एत	एयाताम्	एरन्
म० पु०	एथाः	एयाथाम्	एध्वम्
उ० पु०	एय	एवहि	एमहि

लभ् धातु लिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि) के रूप

प्र० पु०	लभेत	लभेयाताम्	लभेरन्
म० पु०	लभेयाः	लभेयाथाम्	लभेध्वम्
उ० पु०	लभेय	लभेवहि	लभेमहि

आत्मनेपद लृट लकार के प्रत्यय

प्र० पु०	इष्यते (स्यते)	इष्येते (स्येते)	इष्यन्ते (स्यन्ते)
म० पु०	इष्यसे (स्यसे)	इष्येथे (स्येथे)	इष्यध्वे (स्यध्वे)
उ० पु०	इष्ये (स्ये)	इष्यावहे (स्यावहे)	इष्यामहे (स्यामहे)

स्मर्तव्य—कई धातुओं से इ वाले प्रत्यय लगेंगे, कई से इ रहित, कई में दोनों तरह के ।

लभ् धातु लृट् लकार (भविष्यत्) के रूप

प्र० पु०	लप्स्यते	लप्स्येते	लप्स्यन्ते
म० पु०	लप्स्यसे	लप्स्येथे	लप्स्यध्वे
उ० पु०	लप्स्ये	लप्स्यावहे	लप्स्यामहे

लभ् धातु के समान ही बाकी अ विकरण वाले आत्मनेपदी धातुओं के रूप होंगे। उदाहरण के तौर पर कुछ के रूप दिये जाते हैं —

धातु	अर्थ	लट	लोट
वृध (वर्ध)	बढ़ना	वर्धते	वर्धताम्
वृत् (वर्त)	रहना	वर्तते	वर्तताम्
ईक्ष्	देखना	ईक्षते	ईक्षताम्
सह्	सहना	सहते	सहताम्
मोद	प्रसन्न होना	मोदते	मोदताम्

लिङ्	लङ्	लृट्
वर्धेत	अवर्धत	वर्धिष्यते
वर्तेत	अवर्तत	वर्तिष्यते
ईक्षेत	ऐक्षत	ईक्षिष्यते
सहेत	असहद	सहिष्यते
मोदेत	अमोदत	मोदिष्यते

उभयपद

जैसा कि पीछे कहा है कि कई धातुओं में परस्मैपद और आत्मनेपद दोनों के प्रत्यय आ जाते हैं, ऐसे धातुओं को उभयपदी कहते हैं ।

उदाहरण के लिए कुछ रूप :—

याच्—मांगना	लट्	लोट्
परस्मैपद	याचति	याचतु
आत्मनेपद	याचते	याचताम्

लिङ्	लङ्	लोट्
याचेत्-द्	आयाचत्-द्	याचिष्यति
याचेत	अयाचत	याचिष्यते

नी (नय्)-ले जना	लट्	लोट्
परस्मैपद	नयति	नयतु
आत्मनेपद	नयते	नयताम्

हृ (हर) चुरा लेना

	लट्	लोट्
परस्मैपद	हरति	हरतु
आत्मनेपद	हरते	हरताम्
लिङ्	लङ्	लृट्
नयेत्-द्	अनयत्-द्	नेष्यति
नयेत	अनयत	नेष्यते
हरेत्-द्	अहरत्-द्	हरिष्यति
हरेत	अहरत	हरिष्यते

अभ्यास

१. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

भारत सब देशों में श्रेष्ठ है। ज्ञान से आप यश पायेंगे। तुम सब सदा प्रसन्न रहो। किसी से मत मांग। हम सब ले जायेंगे। शूरवीर सब दुःख सह लेते हैं। सब को मित्र की नजर से देखो।

२. हिन्दी में अनुवाद कीजिए :—

पापस्य मार्गं त्यजत। सर्वत्र ईश्वरम् ईक्षध्वम्। गुणिषु धैर्यं भवति। ईश्वरः अस्माकं विपदः हरिष्यते। परमात्मनः ज्ञानं याचेत्।

तुदादिगण विकरण (अ)

स्मर्तव्य —भ्वादिगण में भी विकरण 'अ' ही आता है और तुदादिगण में भी 'अ' आता है। दोनों में अन्तर यह है कि भ्वादिगण में धातु को गुण हो जाता है जैसे 'भू' को भो-'भव्' 'जि' को जे-'जय' 'मुद्' को 'मोद्' परन्तु तुदादिगण में धातु के इ, उ को गुण (ए, ओ) नहीं होता।

तुदादिगण के कुछ धातुओं के रूप

परस्मैपद—सृज् (बनाना) अ विकरण-वर्तमान काल लट्

प्र० पु०	सृजति	सृजतः	सृजन्ति
म० पु०	सृजसि	सृजथः	सृजथ
उ० पु०	सृजामि	सृजावः	सृजामः

लोट् (आज्ञा) लकार

प्र० पु०	सृजतु	सृजताम्	सृजन्तु
म० पु०	सृज	सृजतम्	सृजत
उ० पु०	सृजानि	सृजाव	सृजाम

लिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि)

प्र० पु०	सृजेत्-द्	सृजेताम्	सृजेयुः

म० पु०	सृजेः	सृजेतम	सृजेत
उ० पु०	सृजेयम्	सृजेव	सृजेम

लङ् (भूत काल)

प्र० पु०	असृजत्	असृजताम्	असृजन्
म० पु०	असृजः	असृजतम्	असृजत
उ० पु०	असृजम्	असृजाव	असृजाम

लृट् (भविष्यत् काल)

प्र० पु०	स्रक्ष्यति	स्रक्ष्यतः	स्रक्ष्यन्ति
म० पु०	स्रक्ष्यसि	स्रक्ष्यथः	स्रक्ष्यथ
उ० पु०	स्रक्ष्यामि	स्रक्ष्यावः	स्रक्ष्यामः

तुदादिगण के कुछ और धातुओं के रूप

धातु	अर्थ	लट्	लोट्
इष् (इच्छ)	चाहना	इच्छति	इच्छतु
प्रच्छ (पृच्छ)	पूछना	पृच्छति	पृच्छतु
स्पृश्	छूना	स्पृशति	स्पृशतु
क्षिप्	फेंकना	क्षिपति	क्षिपतु
विश्	घुसना	विशति	विशतु
मुच् (मुञ्च्)	छोड़ना	मुञ्चति	मुञ्चतु

लिङ्	लङ्	लृट्
इच्छेत्-द	ऐच्छत-द	एषिष्यति
पृच्छेत-द	अपृच्छत-द	प्रक्ष्यति
स्पृशेत-द	अस्पृशत-द	स्प्रक्ष्यति
क्षिपेत-द	अक्षिपत्-द	क्षेप्स्यति
विशेत-द	अविशत्-द	वेक्ष्यति
मुञ्चेत्-द	अमुञ्चत-द	मोक्ष्यति

तुदादिगण अ विकरण आत्मनेपदी धातु

लज्ज् —लजाना। लज्जते, लज्जताम् , लज्जेत, अलज्जत, लज्जिष्यते।

दिवादिगण [य विकरण]

दिवादिगण में 'य' विकरण आता है और जहां जहां 'य' आता है, गुण नहीं होता।

नृत् (नाचना)

	लट्	लोट्	लिङ्
प्र० पु०	नृत्यति	नृत्यतु	नृत्येत-द्
म० पु०	नृत्यसि	नृत्य	नृत्येः
उ० पु०	नृत्यामि	नृत्यानि	नृत्येयम्

लङ् लृट्

अनृत्यत्-द नर्तिष्यति, नर्तिष्यसि नर्तिष्यामि

दिवादिगण के कुछ और धातुओं के रूप

		लट्	लोट्
नश्	नष्ट होना	नश्यति	नश्यतु
शुष्	सूखना	शुष्यति	शुष्यतु
तृप्	तृप्त होना	तृप्यति	तृप्यतु
सिव् (सीव)	सीना	सीव्यति	सीव्यतु
त्रस्	डरना	त्रस्यति	त्रस्यतु
सिध्	सिद्ध होना	सिध्यति	सिध्यतु
कुप्	क्रोध करना	कुप्यति	कुप्यतु

लृट्	लङ्	लिङ्
नश्येत्-द्	अनश्यत्-द्	नङ्क्ष्यति
शुष्येत्-द्	अशुष्यत्-द्	शोक्ष्यति
तृप्येत्-द्	अतृप्यत्-द्	तर्पिष्यति
सीव्येत्-द्	असीव्यत्-द्	सेविष्यति
त्रस्येत्-द्	अत्रस्यत्-द्	त्रसिष्यति
सिध्येत्-द्	असिध्यत्	सेत्स्यति
कुप्येत्-द्	अकुप्यत्-द्	कोपिष्यति

आत्मनेपदी 'जन्' धातु (पैदा होना)

जन्—जा—पैदा होना

जायते, जायताम्, जायेत, अजायत जनिष्यते,

मन्–(मान्य)–मानना

मन्यते मन्यताम् मन्येत अमन्यत मंस्यते

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए —

ईश्वर ने संसार बनाया। माली माला बनायेगा। पाप को सदा छोड़ो। मोर वर्षा में नाचते हैं। गर्मी में पानी सूख जायेगा। हे ईश्वर, आप की कृपा से हमारे सब काम सिद्ध हों। पाठ याद न करने से गुरु जी नाराज़ होंगे।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइए—

आत्मानं विद्वांसं को न मन्यते। सर्वेषां सुखमिच्छत। युष्माकम् अरयः नङ्क्ष्यन्ति। अग्निः काष्ठैर्न तृप्यति।

(३) रूप लिखिए—

सीव्—लोट् मध्यम पुरुष द्विवचन, मन्य—लङ् मध्यम पु० एक व०, मुञ्च—लिङ् मध्यम पु० बहुवचन।

अदादिगण

इस गण में विकरण चिन्ह कोई नहीं रहता। सीधे धातु से परे परस्मैपद, आत्मनेपद के प्रत्यय आ जाते हैं।

अदादिगण परस्मैपद हन् (मारना) वर्तमान काल

लट् लकार—

प्र० पु०	हन्ति	हतः	घ्नन्ति
म० पु०	हन्सि	हथः	हथ
उ० पु०	हन्मि	हन्वः	हन्मः

लोट् लकार (आज्ञा)

प्र० पु०	हन्तु	हताम्	घ्नन्तु
म० पु०	जहि	हतम्	हत:
उ० पु०	हनानि	हनाव	हनाम

विधिलिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि)

प्र० पु०	हन्यात्-द	हन्याताम्	हन्युः
म० पु०	हन्याः	हन्यातम्	हन्यात
उ० पु०	हन्याम्	हन्याव	हन्याम

लङ् (भूतकाल)

प्र० पु०	अहन्	अहताम्	अघ्नन्
म० पु०	अहन्	अहताम	अहत
उ० पु०	अहनम्	अहन्व	अहन्म

लृट् लकार (भविष्यत काल)

प्र० पु०	हनिष्यति	हनिष्यतः	हनिष्यन्ति
म० पु०	हनिष्यसि	हनिष्यथः	हनिष्यथ
उ० पु०	हनिष्यामि	हनिष्यावः	हनिष्यामः

आत्मनेपदी 'शी' धातु के रूप

लट्	प्र० पु०	शेते	शयाते	शेरते
	म० पु०	शेषे	शयाथे	शेध्वे
	उ० पु०	शये	शेवहे	शेमहे
लोट्	प्र० पु०	शेताम्	शेयाताम्	शेरताम्
	म० पु०	शेष्व	शयाथाम्	शेध्वम्
	उ० पु०	शयै	शयावहै	शयामहै
विधिलिङ्	प्र० पु०	शयीत	शयीयाताम्	शयीरन्
	म० पु०	शयीथाः	शयीयाथाम्	शयीध्वम्
	उ० पु०	शयीय	शयीवहि	शयीमहि
लङ्	प्र० पु०	अशेत	अशयाताम्	अशेरत
	म० पु०	अशेथाः	अशयाथाम्	अशेध्वम्
	उ० पु०	अशयि	अशेवहि	अशेमहि

लृट्	प्र० पु०	शयिष्यते	शयिष्येते	शयिष्यन्ते
	म० पु०	शयिष्यसे	शयिष्यथे	शयिष्यध्वे
	उ० पु०	शयिष्ये	शयिष्यावहे	शयिष्यामहे

इसी तरह अदादिगण के कुछ और धातुओं के रूप होंगे।

	लट्	लोट्	लिङ्	लङ्	लृट्
या (जाना)	याति	यातु	यायात्-द्	अयात्-द्	यास्यति
पा (रक्षा करना)	पाति	पातु	पायात्-द्	अपात्-द्	पास्यति

अदादि गण। अस् (होना) धातु के रूप

लट्	प्र० पु०	अस्ति	स्तः	सन्ति
	म० पु०	असि	स्थः	स्थ
	उ० पु०	अस्मि	स्वः	स्मः
लोट्	प्र० पु०	अस्तु	स्ताम्	सन्तु
	म० पु०	एधि	स्तम्	स्त
	उ० पु०	असानि	असाव	असाम
लिङ्	प्र० पु०	स्यात्-द्	स्याताम्	स्युः
	म० पु०	स्याः	स्यातम्	स्यात
	उ० पु०	स्याम्	स्याव	स्याम
लङ्	प्र० पु०	आसीत्-द्	आस्ताम्	आसन्
	म० पु०	आसीः	आस्तम्	आस्त
	उ० पु०	आसम्	आस्व	आस्म

लृट् लकार (भविष्यत्)

स्मर्तव्य—लृट् लकार में अस् की जगह भव् हो जाता है, अतः लकार में अस् भू के समान रूप होंगे जैसे—

प्र० पु०	भविष्यति	भविष्यतः	भविष्य
म० पु०	भविष्यसि	भविष्यथः	भविष्य
उ० पु०	भविष्यामि	भविष्यावः	भविष्य

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

भारतवर्ष बहुत वर्ष परतन्त्रता की नींद में सोया रहा, कृष्ण मथुरा में कंस को मारता था। शेर हिरण को मारता लड़के खाट पर सोते हैं। मैं शत्रु को मारूंगा। दो भाई जंगल सोये। मेरे घर में घी नहीं है। मछली नदी में थी। तुम्हें कर मैं प्रसन्न होऊंगा।

(२) इन वाक्यों का हिन्दी में अर्थ लिखिए :—

त्वम् तदा कुत्र अशेथाः। ते अजान् घ्नन्ति। अहं क कञ्चिन् न हन्याम। रात्रौ नग्नः न शयीत। त्वं दीर्घायुः स्या अहं पाठशालायां न आसम्।

(३) इन के रूप बताइए—

अस-लोट् १ म० पु० बहु व०, और लृट म० पु० हन-लट् १ म० पु० बहु व०। शीङ् लृट् १ म० पु० द्वि० और मध्यम पु० १ व०।

जुहोत्यादिगण

इस गण में भी अदादिगण की तरह कोई विकरण नहीं आता न्तु लट्, लोट, विधिलिङ् और लङ् लकारों में धातु को द्वित्व जाता है अर्थात् धातु की पुनरावृत्ति हो जाती है।

दा (देना) वर्त्तमान काल लट्

	प्र. पु.	ददाति	दत्तः	ददति
	म. पु.	ददासि	दत्थः	दत्थ
	उ. पु.	ददामि	दद्वः	दद्मः
लोट् (आज्ञा)	प्र. पु.	ददातु	दत्ताम्	ददतु
	म. पु.	देहि	दत्तम्	दत्त
	उ. पु.	ददानि	ददाव	ददाम
विधिलिङ्	प्र. पु.	दद्यात्	दद्याताम्	दद्युः
	म. पु.	दद्याः	दद्यातम्	दद्यात
	उ. पु,	दद्याम्	दद्याव	दद्याम
लङ् (भूतकाल)	प्र. पु.	अददात्-द्	अदत्ताम्	अददुः
	म. पु.	अददाः	अदत्तम्	अदत्त
	उ. पु.	अददाम्	अदद्व	अदद्म
लृट् (भविष्यत्)	प्र. पु.	दास्यति	दास्यतः	दास्यन्ति
	म. पु.	दास्यसि	दास्यथः	दास्यथ

उ. पु. दास्यामि दास्याव: दास्याम:

स्मर्तव्य— दा धातु से आत्मनेपद के प्रत्यय भी आते हैं, क्योंकि यह उभयपदी है। परन्तु कठिन होने के कारण वे यहां नहीं लिखे गये। इस गण के और धातु भी कठिन और अनावश्यक होने के कारण नहीं लिखे गये।

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए—

गुरु शिष्य को विद्या देता था। मैं तुम को पुस्तक क्यों दूं? तू उसे क्या देगा? वह मेरा कपड़ा दे। हम उसे कुछ नहीं देंगे।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइए—

ईश्वर: भारताय कल्याणं दद्यात्। लाजपतराय: देशहिताय प्राणान् अददात्-द्। अहं क्षुधार्तेभ्य: भोजनं दास्यामि। वयं स्वदेशाय श्रद्धाञ्जलिं दद्म:।

(३) धातु के यह रूप बताइये—

लोट् उ० पु० द्विव०, विधिलिङ् मध्यम पु० एकव०, लङ् १ म० पु० द्विव०, लृट् १ म० पु० बहुव०।

तनादिगण

तनादिगण में 'उ' विकरण आता है। इस गण में एक ही प्रसिद्ध धातु है, उसके रूप आवश्यक होने के कारण यहां दिये जाते हैं।

तनादि कृ धातु (करना) परस्मैपद वर्तमान काल

लट्

प्र० पु०	करोति	कुरुतः	कुर्वन्ति
म० पु०	करोषि	कुरुथः	कुरुथ
उ० पु०	करोमि	कुर्वः	कुर्मः

लोट् 'आज्ञा'

प्र० पु०	करोतु	कुरुताम्	कुर्वन्तु
म० पु०	कुरु	कुरुतम्	कुरुत
उ० पु०	करवाणि	करवाव	करवाम

विधिलिङ् 'विधि, निमन्त्रण आदि'

प्र० पु०	कुर्यात्-द्	कुर्याताम्	कुर्युः
म० पु०	कुर्याः	कुर्यातम्	कुर्यात
उ० पु०	कुर्याम्	कुर्याव	कुर्याम

लङ् 'भूतकाल'

प्र० पु०	अकरोत्-द्	अकुरुताम	अकुर्वन्
म० पु०	अकरोः	अकुरुतम्	अकुरुत
उ० पु०	अकरवम्	अकुर्व	अकुर्म

लृट् 'भविष्यत् काल'

प्र० पु०	करिष्यति	करिष्यतः	करिष्यन्ति
म० पु०	करिष्यसि	करिष्यथः	करिष्यथ
उ० पु०	करिष्यामि	करिष्यावः	करिष्यामः

स्मर्तव्य—कृ धातु उभयपदी है, इस से आत्मनेपद के प्रत्यय भी आते हैं, परन्तु अनावश्यक होने के कारण वे यहां नहीं लिखे गए ।

अभ्यास

(१) अनुवाद कीजिए—

गांधी ने भारत को स्वतन्त्र किया । हम इसे प्रणाम करते हैं । मैं यहां क्या करूँ ? तुम दो वहां क्या करते थे ? हम देश से प्रेम करेंगे ।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइए —

यः विद्याध्ययनं न करोति स मन्दभाग्यो भवति । युवाम् त्र किम अकुरुम् । स देशकल्याणाय प्रयत्नम् अकरोत् ।

अहम् अत्र किम् करवाणि ?

(३) कृ धातु के रूप लिखो—

लङ्—उत्तम पु० बहुव०, लोट्—प्रथम पु० द्विव०, विधि-लिङ्—मध्यम पु० एक व०, लृट्—प्रथम पु० द्विव० ।

चुरादिगण

'अय' विकरण

"मदन मोहनः कथां कथयति" (मदन मोहन कहानी कह रहा है) इस में 'कथयति' क्रिया, कथ+अय+ति=कथयति इस प्रकार बनी है। इस में धातु और प्रत्यय के बीच 'अय' विकरण आया है। इस तरह जहां 'अय' विकरण आता है, वे धातु प्रायः चुरादि के होते हैं। नीचे चुरादिगण के कुछ धातुओं के रूप दिये जाते हैं :—

कथ्—(कहना) अय विकरण-वर्तमान का लट्

प्र० पु०	कथयति	कथयतः	कथयन्ति
म० पु०	कथयसि	कथयथः	कथयथ
उ० पु०	कथयामि	कथयावः	कथयामः

लोट् (आज्ञा)

प्र० पु०	कथयतु	कथयताम्	कथयन्तु
म० पु०	कथय	कथयतम्	कथयत
उ० पु०	कथयानि	कथयाव	कथयाम

विधिलिङ् (विधि, निमन्त्रण आदि पर)

प्र० पु०	कथयेत्-द्	कथयेताम्	कथयेयुः
म० पु०	कथयेः	कथयेतम्	कथयेत्
उ० पु०	कथयेयम्	कथयेव	कथयेम्

लृट् 'भविष्यत् काल

प्र० पु०	कथयिष्यति	कथयिष्यतः	कथयिष्यन्ति
म० पु०	कथयिष्यसि	कथयिष्यथः	कथयिष्यथ
उ० पु०	कथयिष्यामि	कथयिष्यावः	कथयिष्यामः

चुरादिगण के कुछ और धातु

धातु अर्थ	लट्	लोट्
रच्=बनाना	रचयति	रचयतु
पूज्=पूजा करना,	पूजयति	पूजयतु
गण्=गिनना,	गणयति	गणयतु
पीड्=पीड़ा देना,	पीडयति	पीडयतु
क्षाल्=धोना,	क्षालयति	क्षालयतु

तड् (ताड्)=पीटना,	ताडयति	ताडयतु
चुर् (चोर्)=चुराना,	चोरयति	चोरयतु
प्री (प्रीण्)=खुश करना,	प्रीणयति	प्रीणयतु
भूष्=सजाना,	भूषयति	भूषयतु
घुष् (घोष)=घोषित करना,	घोषयति	घोषयतु
तुल् (तोल)=तोल..ा,	तोलयति	तोलयतु

लिङ्	लङ्	लृट्
रचयेत्-द्	अरचयत्-द्	रचयिष्यति
गणयेत-द्	अगणयत्-द्	गणयिष्यति
पीडयेत्-द्	अपीडयत-द्	पीडयिष्यति
क्षालयेत्-द्	अक्षालयत्-द्	क्षालयिष्यति
ताडयेत्-	अताडयत्-द्	ताडयिष्यति
चोरयेत्-द्	अचोरयत्	चोरयिष्यति
प्रीणयेत्-द्	अप्रीणवत्-द्	प्रीणयिष्यति
भूषयेत्-द्	अभूषयत-द्	भूषयिष्यति
घोषयेत्-द्	अघोषयत-द्	घोषयिष्यति
तोलयेत्-द्	अतोलयत-द्	तोलयिष्यति

(१) संस्कृत बनाइये—

हम सब तोलेंगे। राम ने ग्रन्थ बनाया। शत्रु निर्बल को पीड़ा देते हैं। भक्त ईश्वर की पूजा करें। तुम सौ तक गिनो।

(२) हिन्दी में अर्थ लिखिये—

यूयं मुद्राः गणयथ। स सुवर्णं तोलयिष्यति। नृपः नवीन नियमान घोषयतु। गुरुः छात्रान् मा ताडयेत।

तृतीय खण्ड

द्वितीय अध्याय

उपसर्ग वंश से धात्वर्थ परिवर्तन

१. विप्रः गां ददाति (ब्राह्मण गौ देता है)।

२. विप्रः गां आददाति (ब्राह्मण गौ लेता है)।

ऊपर के दोनों वाक्यों में क्रिया एक ही 'ददाति' है, जिस का अर्थ 'देता है'। पर दूसरे वाक्य में साथ 'आ' उपसर्ग लग जाने से उसका अर्थ 'देने' से 'लेने' हो गया है, अर्थात् बिल्कुल ही बदल गया है। इसी तरह उपसर्गों के साथ आने से और [धा]तुओं के अर्थ भी बदल जाते हैं।

इस प्रकार के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं :—

उपसर्ग	धातु	अर्थ
प्र+	भवति	समर्थ होता है।
सम्+	भवति	सम्भव हो सकता है।
परा+	भवति	हराता है।
अनु+	भवति	अनुभव करता है।
अभि+	भवति	नीचा दिखाता है।
उद्+	भवति	उठता जाता है (पैदा होता है)

उपसर्ग	धातु	अर्थ
आ +	गच्छति	आता है।
अधि+	गच्छति	पाता है।
अव +	गच्छति	जानता है।
निर् +	गच्छति	निकलता है।
प्रति +	गच्छति	उलटे चलता है।
सम +	गच्छति	मिलता है।
अनु+	गच्छति	पीछे चलता है।
अधि +	रोहति	चढ़ता है।
आ+	दिशति	आज्ञा देता है।
निर् +	नयति	(निर्णयति) निश्चय करता है।
आ +	नयति	ले आता है।
अप +	नयति	हटाता है।
अनु +	नयति	मनाता है।
अनु+	वदति	नकल करता है।
अप+	वदति	निन्दा करना है।
सम्+	वदति	समानता करता है।
परा +	जयते	हराता है।
उप +	वसति	फाका करता है।
वि +	रमति	हटता है, रुकता है।
अनु+	करोति	नकल करता है।
अनु+	नाति	अनुमति देता है।

अनु +	सरति	पीछे चलता है।
वि +	स्मरति	भूलता है।
उत् +	सृजति	छोड़ता है।
सम् +	सृजति	मिलता है।
वि +	सृजति	विदा करता है।

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए —

सरयू गंगा से मिलती है। पाप का फल हमेशा बुरा निकलता है। बुद्धिमान् अपनी अक्ल से बुरे का निश्चय करे। मनुष्य हमेशा अच्छे की नकल करे। मित्र मित्र को विदा करेगा। प्रेम अपराधों को भूल जाता है। भारतवर्ष सदा शत्रुओं को नीचा दिखाये।

(२) हिन्दी में अर्थ बताइए—

शुभेच्छूनाम् आदेशम् अनुसर। पापेभ्यो विरमत। सेवकाः प्रभुम् अनुगच्छेयुः। मुनयः श्रुतीनां तत्त्वम् अवगच्छन्ति। छात्राः गुरूपदेशं व्यस्मरन्। साधवः एकादश्याम् उपवसन्ति। को विद्वांसं पराजेष्यते। गायको वीणामनुवदति।

णिजन्त प्रेरणार्थक क्रिया

१. छात्रः श्लोकं लिखति (विद्यार्थी श्लोक को लिखता है)
२. छात्रः श्लोकं लेखयति (विद्यार्थी श्लोक को लिखाता है)

ऊपर के दो वाक्यों से स्पष्ट है कि कोई क्रिया स्वयं की जाती है और कोई किसी से करवाई जाती है। जब क्रिया किसी से करवाई जाती है, तब णिजन्त (प्रेरणार्थक) क्रिया लगायी जाती है। किसी से काम करवाने को प्रेरणा कहा जाता है। इस क्रिया के रूपों में—साधारण क्रिया के रूपों से कुछ भेद होता है, जो मुख्यतः इस प्रकार है—

१. हर धातु से परे अय् अवश्य लग जाता है।

२. सब धातुएँ उभयपदी हो जाती हैं।

३. धातु के ह्रस्व स्वर अ, इ, उ, ऋ को क्रम से आ, ए, ओ, आर, प्रायः हो जाता है।

४. अकारान्त धातु से परे कहीं य आता है। इन के कुछ उदाहरण दिये जाते हैं।

नश् (नष्ट होना) नश्यति (नष्ट होता है) नाशयति (नष्ट करता या करवाता है)।
पठ् (पढ़ना) पठति (पढ़ता है) पाठयति (पढ़ाता है)।
स्था (तिष्ठ्) (ठहरना) तिष्ठति (ठहरता है) स्थापयति (ठहराता है)।
पा (पिब्) (पीना) पिबति (पीता है) पाययति

(पिलाता है)।

दा (देना) ददाति (देता है) दापयति (दिलाता या दिलवाता है)।

नी (नय्) (ले जाना) नयति (ले जाता है) नाययति (भिजवाता है)।

इसी तरह भू का भावयति, भिद् का भेदयति, नम का नमयति, सिच् का सेचयति। इत्यादि, विशेष परिचय के लिये 'लिख' के लट्, लोट्, लङ, विधिलिङ्, लृट्, सभी लकारों के रूप लिखे जाते हैं। लट—लेखयात, लोट्-लेखयतु, लङ्-अलेखयत्-द, विधिलिङ्-लेखयेत्-द, लृट्-लेखयिष्यति।

सकर्मक—अकर्मक परिचय

काम करने को क्रिया कहते हैं और जो उस क्रिया को करे, वह कर्त्ता होता है। परन्तु क्रिया करने से कुछ फल या नतीजा भी निकलता है। जैसे पकाने से चावल नर्म हो जाते हैं। फाड़ने से लकड़ी के टुकड़े हो जाते हैं इत्यादि। वह फल कभी क्रिया करने वाले (कर्त्ता) से अलग किसी दूसरी चीज में पैदा होता है। जैसे पकाने से गलना चावलों में, फाड़ने से टुकड़े होना लकड़ियों में। कभी वह फल क्रिया करने वाले (कर्त्ता) में ही रह जाता है, दूसरे में नहीं। जैसे—सोने में सब झंझटों से छूटना या आराम कर्त्ता में ही होता है। जिन क्रियाओं का फल कर्त्ता से भिन्न वस्तु में रहे, वे क्रियाएं कर्मक

क्रियायें होती हैं और उन क्रियाओं का वाचक धातु सकर्मक कहा जाता है। यथा—पच्, गम्, मुच्, रक्ष्—नय् इत्यादि।

जिन क्रियाओं का फल कर्ता में रहे, वे क्रियाएँ अकर्मक और उन क्रियाओं का वाचक धातु भी अकर्मक होगा। यथा—तिष्ठ्, भव, धाव्, आस, अस, लज्ज् जीव्, इत्यादि।

वाच्य-परिवर्तन

कर्ता तो सभी धातुओं का होता ही है, इसलिए हर एक धातु से कर्ता अर्थ में ति, तः, अन्ति आदि प्रत्यय आते ही हैं। परन्तु यदि कोई धातु सकर्मक हो तो उससे कर्म में भी प्रत्यय आ सकते हैं। अगर धातु अकर्मक हो और उसके परे हम कर्त्ता में प्रत्यय न लाना चाहें तो क्योंकि उस धातु का कर्म तो कोई है ही नहीं, अतः कर्म में उस से प्रत्यय आ ही नहीं सकता। ऐसी दशा में उस (अकर्मक) धातु से भाव में ही प्रत्यय आ जाता है। जिस वस्तु में प्रत्यय आता है उसी की प्रधानता वाक्य में रहती है और क्रियापद, पुरुष और वचन उसी के अधीन होकर उसी के अनुसार लेता है।

जिस अर्थ में प्रत्यय आता है, उस अर्थ को 'वाच्य' कहते हैं। वाच्य अर्थात् उस प्रत्यय का अर्थ।

यदि कर्ता में प्रत्यय हो तो 'कर्तृ वाच्य' है अगर कर्म में हो तो 'कर्म वाच्य' है तथा यदि भाव में प्रत्यय है तो 'भाव वाच्य' है।

इस वाच्य को हम अपनी इच्छा के अनुसार बदल भी सकते हैं। सकर्मक धातु से हम कर्तृवाच्य में या कर्म वाच्य में दोनों में बारी से प्रत्यय ला सकते हैं। इसी तरह अकर्मक धातु से कर्तृवाच्य में या भाव वाच्य में दोनों में बारी से प्रत्यय ला सकते हैं। कर्तृवाच्य के रूप तो—पचति, पचतः, पचन्ति, भवति, पठति आदि पीछे बताये जा चुके हैं।

अब भाववाच्य का कर्मवाच्य के रूप बताये जाते हैं। इनके कुछ आवश्यक नियम यह हैं :—

जिस वाच्य में प्रत्यय होगा, उस में प्रथमा विभक्ति आयेगी, जैसे कि—पठति, पठतः, पठन्ति। सभी में कर्तृवाच्य है, अतः कर्त्ता में प्रथमा आती है। नरः पठति, शुकौ पठतः, पक्षिणः पठन्ति, इत्यादि। परन्तु—

१. कर्म-वाच्य में प्रत्यय कर्म में ही होगा, और कर्म में प्रथमा विभक्ति होगी।
२. जब कर्म में प्रत्यय होगा, तब कर्ता तृतीया विभक्ति होगी।
३. भाववाच्य में प्रत्यय भाव में ही होगा, और कर्ता में तृतीया विभक्ति होगी।
४. जब कर्म-वाच्य या भाव-वाच्य में प्रत्यय हो तो सभी धातुओं से आत्मनेपद के प्रत्यय—ते, आते, अन्ते ही आयेंगे।
५. लट्, लोट्, लङ्, विधिलिङ् लकारों में धातु के परे और

प्रत्यय के पहिले (दोनों के बीच) 'य' जरूर लगाया जायेगा। पठ्यते, पठ्यताम्, पठ्येत।

६. कर्मवाच्य अथवा भाव-वाच्य में किसी भी धातु से परे कोई भी गण चिन्ह (विकरण) नहीं आता।

७. भाव-वाच्य में सदा प्रथम पुरुष और उसका भी एक वचन ही रहेगा। भूयते, आस्यते।

८. कर्म वाच्य में कर्म के अनुसार पुरुष और बचन होंगे :—

(क) यदि युष्मद् शब्द कर्म होगा तो मध्यम पुरुष होगा। मया त्वं कथ्यसे।

(ख) यदि अस्मद् शब्द कर्म होगा तो उत्तम पुरुष होगा। त्वया अहं कथ्ये।

(ग) यदि युष्मद् और अस्मद् से भिन्न कोई भी शब्द कर्म होगा तो प्रथम पुरुष होगा। मया – (त्वया-तेन) देवदत्तः कथ्यते।

९. इसी तरह यदि कर्म एक होगा तो कर्मवाच्य क्रिया में एक वचन, यदि कर्म दो होंगे तो द्विवचन, यदि कर्म वहुत होंगे तो क्रिया में बहुवचन होगा।

इन नियमों को ध्यान में रखते हुए हर एक कर्तृवाच्य क्रिया को कर्मवाच्य या भाव-वाच्य में बदल सकते हैं। इसी को 'वाच्य-परिवर्तन' कहते हैं। जैसे :—

कर्तृवाच्य में—देवदत्तः वेदं पठति।

कर्मवाच्य में—देवदत्तेन वेदः पठ्यते।

यदि धातु अकर्मक होगी तो उसके कर्तृवाच्य का भाववाच्य में परिवर्तन होगा। जैसे :—

कर्तृवाच्य में— देवदत्तः भवति।

कर्मवाच्य में—देवदत्तेन भूयते।

भाववाच्य में भू धातु के रूप :—

लट—भूयते, लोट्- भूयताम्, लङ्- अभूयत, लिङ्- भूयेत, लृट्- भविष्यति।

कर्मवाच्य में गम् धातु के रूप :—

लट्—देवदत्तेन ग्रामः गम्यते, देवदत्तेन, ग्रामौ गम्येते,
देवदत्तेन ग्रामाः गम्यन्ते। प्र० पु०।

देवदत्तेन त्वं गम्यसे, देवदत्तेन युवां गम्येथे, देवदत्तेन यूयं गम्यध्वे। मध्य० पु०।

देवदत्तेन अहं गम्ये, देवदत्तेन आवां गम्यावहे, देवदत्तेन वयं गम्यामहे। उ० पु०।

इसी प्रकार बाकी लकारों में रूप होंगे, उनके एक २ रूप लिखे जाते हैं।

लोट् — गम्यताम्, लङ्—अगम्यत, विधिलिङ्—गम्येत, लृट—गंस्यते।

कुछ और धातुओं के लट् लकार के रूप

धातु	कर्तृवाच्य	कर्मवाच्य
हन्	हन्ति	हन्यते
क्रीड्	क्रीडति	क्रीड्यते (भा० वा०)
वह्	वहति	उह्यते
हृ (हर्)	हरति	ह्रियते
स्वप्	स्वपिति	सुप्यते (भा० वा०)
नी (निय्)	नयति	नीयते
निन्द्	निन्दति	निन्द्यते
वस्	वसति	उष्यते (भा० वा०)
दा	ददाति	दीयते
स्मृ (स्मर्)	स्मरति	स्मर्यते

चतुर्थ-खण्ड

प्रथम अध्याय

समास

राजपुत्रः=राजः पुत्रः (राजा का पुत्र)। शिवभक्तिः= शिवस्य भक्तिः (शिव जी की भक्ति)। भारतमाता=भारत एव माता (भारत रूपी मां)। इन तीनों शब्दों की बनावट पर ध्यान देने से जान पड़ेगा कि संक्षेप करने के लिए इन में दो दो शब्द आपस में सम्बन्ध दिखाए बिना इकट्ठे कर दिए गए हैं और फिर भी उनसे वह अर्थ ले लिया गया है जो मध्य में सम्बन्ध जोड़ने वाले शब्द मौजूद होने पर निकल सकता था। इसी तरीके से जो शब्दों को आपस में जोड़ लिया जाता है, वह बोल-चाल में समय बचाने के उद्देश्य से अर्थात् संक्षेप करने के लिए होता है। संक्षेप का ही दूसरा नाम समास है। इस लिए जहां कुछ शब्दों (दो या इस से अधिक) को संक्षेप करने के उद्देश्य से आपस में विभक्ति जोड़ रहित कर दिया जाता है, अर्थात् आपस का सम्बन्ध बताने वाले विभक्ति आदि चिन्हों को काट दिया जाता है, उस का नाम 'समास' है।

उन्हीं जुड़े हुए शब्दों को अगर फिर विभक्ति आदि लगा कर पृथक् पृथक् कर दिया जाय तो इसे विग्रह कहते हैं।

सामस के मुख्य छः प्रकार हैं :—

(१) अव्ययीभाव। (२) कर्मधारय। (३) द्विगु। (४) द्वन्द्व। (५) तत्पुरुष और (६) बहुव्रीहि।

(१) अव्ययीभाव

जिन में पहला शब्द अव्यय हो और अन्त के शब्द को नपुंसकलिंग प्रथमा विभक्ति एकवचन दे दिया जाय तथा क्रियाविशेषण के तौर पर उस समस्त शब्द का प्रयोग हो, इसे अव्ययीभाव समास कहते हैं।

उदाहरण—दिने दिने=प्रतिदिनम्। स्नेहेन सह=सस्नेहम्। शक्तिम् अनतिक्रम्य=यथाशक्ति। रथस्य पश्चाद् =अनुरथम्। गङ्गायाः समीपे=उपगङ्गम्।

इसी के समान प्रत्यक्षम्, परोक्षम्, अनुसारम्, सतृणम्, निरन्तरम् इत्यादि भी होते हैं।

स्मरणीय—इस समास में बने शब्द अव्यय के रूप में ही प्रयोग में आते हैं और उन्हें प्रायः नपुंसक लिंग १ मा विभक्ति एकवचन में ही रहना होता है।

(२) कर्मधारय

जब विशेष्य और विशेषण के रूप में आने वाले समान विभक्ति दो शब्द जुड़ते हैं, तो उसका नाम कर्मधारय समास होता है। कर्मधारय में जिन शब्दों का समास करना हो, वे दोनों यदि पुंल्लिग हों तो सुविधा के लिए विग्रह में 'चासौ'

जोड़ लेते हैं। जैसे—नीलः चासौ घटः=नीलघटः। ऐसे स्त्री-लिंग पदों में से 'च सा' तथा नपुंसक लिंग शब्दों में 'च तत्' जोड़ लेते हैं। जैसे—सुन्दरी च सा नारी=सुन्दरनारी। नीलञ्च तदुत्पलम्=नीलोत्पलम्।

स्मरणीय—(१) इस समास में यदि दोनों शब्द स्त्रीलिंग हों तो जुड़ने पर विशेषण शब्द पुंलिंग कर दिया जाता है। जैसे—सुन्दरी च सा नारी=सुन्दरनारी, ज्येष्ठा च सा कन्या=ज्येष्ठकन्या, शुक्ला च सा नवमी=शुक्लनवमी।

(२) विशेष्य और विशेषणों के अतिरिक्त उपमान और उपमेय (अर्थात् जिस को उपमा दी जाती है और जिस से उपमा दी जाती है) उन दोनों का समास भी कर्मधारय ही कहलाता। इस में उपमा-वाचक शब्द भी काट दिया जाता है। जैसे पुरुषः व्याघ्र इव=पुरुषव्याघ्रः। घन इव श्यामः=घनश्यामः। चन्द्र इव मुखम्=चन्द्रमुखम।

(२) द्विगु

समान जाति के कुछ भिन्न पदार्थ जो कि एक नियत संख्या में समूह के अर्थ में हों तो उन्हें उसी संख्या-वाचक शब्द के साथ जोड़ कर शब्द बना दिया जाता है, इसे द्विगु समास कहते हैं जो कि उन पदार्थों का इकट्ठा होना प्रकट करता है,

इस में विग्रह में 'समाहार'* शब्द प्रायः जोड़ दिया जाता है। जैसे त्रयाणां लोकानां समाहारः=त्रिलोकी। सप्तानां पदानां समाहारः=सप्तपदी, द्वयोः पुरुषयोः समाहारः=द्विपुरुषी, अष्ठानाम् अध्यायानां समाहारः=अष्ठाध्यायी, त्रयानां कटूनां, समाहारः=त्रिकटु, चतुर्णां बीजानां समाहारः=चतुर्बीजम्।

स्मरणीय—(१) इस समास के शब्द प्रायः स्त्रीलिंग में या नपुँसक लिंग में ही हुआ करते हैं।

(२) इस में शब्दों को विभक्तियों के सिवाय उनके साथ आने वाले 'समाहारः' आदि शब्द भी काट दिये जाते हैं।

द्वन्द्व

संख्या का निर्देश किये बिना ही जब कुछ भिन्न पदार्थों को इकट्ठे एक शब्द बना कर कहा हो। (जैसे हिन्दी में—'हाथ और मुँह,' के लिए 'हाथ मुँह' तथा 'कलम और दवात' के लिए 'कलम दवात' कहा जाता है) यह द्वन्द्व समास कहलाता है, इसके विग्रह में जितने शब्दों का समास हो, हर एक के साथ 'च' लगा दिया जाता है।

इनके तीन भेद हैं—(१) इतरेतर द्वन्द्व (२) समाहार द्वन्द्व और (३) एकशेष द्वन्द्व।

*समाहार अर्थात् समूह।

(१) जिस में इकट्ठे किये गये सभी शब्द समान महत्त्व रखते हों, उसे 'इतरेतर द्वन्द्व' कहा जाता है । जैसे—रामश्च लक्ष्मणश्च =रामलक्ष्मणौ, भीमश्च अर्जुनश्च=भीमार्जुनौ ।

ये दो दो व्यक्ति हैं, इस लिये इनके अन्तिम शब्द को द्विवचन होता है, लेकिन जहां दो से अधिक संख्या को इकट्ठा किया जायेगा, वहाँ अन्त में बहुवचन होगा । जैसे रामश्च लक्ष्मणश्च भरतश्च शत्रुघ्नश्च=रामलक्ष्मणभरतशत्रुघ्नाः ।

स्मरणीय—इस द्वन्द्व के अन्त में लिंग वही होता है जो अन्तिम शब्द का स्वाभाविक लिंग होता है और दो पदार्थों के समास में द्विवचन तथा बहुत पदार्थों के समास में बहुवचन होता है ।

(२) समाहार द्वन्द्व उसे कहते हैं, जिह में जुदा जुदा शब्दों के बजाय उनके समूह का ही महत्त्व हो । जैसे—पाणी च पादौ च = पाणिपादम, अहिश्च नकुलश्च=अहिनकुलम् ।

स्मरणीय—इस समास में इकट्ठे किये शब्दों के लिंग, बचन चाहे कुछ भी हों, अन्त में सदा नपुंसक लिंग, एक वचन ही में रहते हैं ।

(३) एकशेष द्वन्द्व वह है, जिस में दो शब्दों में से सिर्फ एक ही रह जाय और दूसरा काट दिया जाय । जैसे— माता च पिता च=पितरौ ।

(५) तत्पुरुष

जहाँ पहिले शब्द में द्वितीया से सप्तमी तक कोई भी एक विभक्ति या केवल 'न' लगता हो और अन्तिम शब्द ही महत्त्व रखता हो, उन शब्दों को इकट्ठे करने पर वह 'तत्पुरुष समास' कहलाता है। यह समास अन्य समासों से अधिक प्रयोग में आता हैं। इसके तीन मुख्य भेद हैं :—

(१) विभक्ति तत्पुरुष, (२) नञ्तत्पुरुष,

(३) उपपदतत्पुरुष।

(१) विभक्ति तत्पुरुष में पहिला शब्द द्वितीया से सप्तमी तक किसी एक विभक्ति के लिये होता है। जैसे—

२ या तत्पुरुष — ग्रामं गतः=ग्रामगतः।
दुःखम् अतीतः=दुःखातीतः।

३ या ,, — देशेन पूजितः=देशपूजितः।
सर्पेण दष्टः=सर्पदष्टः।

४ थीं ,, — होमाय सामग्री=होमसामग्री।

५ मी ,, — दास्यात् मुक्तः=दास्यमुक्तः।
वृक्षात् पतितः=वृक्षपतितः।

६ ष्ठी ,, — राष्ट्रस्य पतिः=राष्ट्रपतिः।
देशस्य भक्तः=देशभक्तः।

७ मी ,, — व्याकरणे पण्डितः=व्याकरणपण्डितः।
वाचि चतुरः=वाक्चतुरः।

स्मरणीय—कई एक दशाओं में विभक्ति काटी नहीं जाती।
जैसे—विश्वम्भरः, वाचस्पतिः, प्रियंवदा, इत्यादि।

(५) नञ्तत्पुरुष—इसमें निषेध (Negative) अर्थ रखने वाला 'न' पूर्वपद होता है और उसका समास करने पर वह (अ) में परिवर्तित हो जाता है, जैसे—न साधु= असाधुः, न ब्राह्मणः= अब्राह्मणः, न शुचिः=अशुचिः। नञ्तत्पुरुष में यदि परे का पद स्वरादि हो तो बीच में एक और 'न' आ जाता है। जैसे- न एकः= =अनेकः, न अश्वः=अनश्वः।

(६) उपपदतत्पुरुष—इस में विग्रह में अगले पद में जिस के साथ समास करना हो, उस के बजाय उस के अर्थ का बोधक क्रियापद बोलते हैं।

जैसे कुम्भं करोति=कुम्भकारः। द्वाभ्यां जायते=द्विजः, उष्णं भुङ्क्ते=उष्णभोजी।

(६) बहुव्रीहि

जिस में इकट्ठे किये गये शब्दों का कोई महत्त्व न हो, बल्कि उन से बाहर के ही किसी अर्थ की प्रधानता हो, वह बहुव्रीहि समास कहलाता है। इस समास द्वारा बने हुए शब्द विशेषण के तौर पर ही प्रयुक्त होते हैं। विग्रह की हालत में इस में 'यस्य' 'येन' इत्यादि, यत् शब्द के रूप तथा 'स' इत्यादि तत् शब्द के रूप अवश्य रहते हैं। जैसे—महान् आत्मा यस्य सः= महात्मा। निर्गतं भयं यस्मात् सः=निर्भयः, उत्कृष्टा बुद्धि यस्य

सः=उत्कृष्टबुद्धिः, नास्ति पुत्रो यस्य सः अपुत्रः।

स्मरणीय—(१) इस समास में विग्रह दशा में यदि इव शब्द आये वह भी उड़ जाता है जैसे चन्द्रस्य प्रभा इव प्रभा यस्याः सा=चन्द्रप्रभा।

(२) सह शब्द आने पर 'सह' का 'ह' कट जाता है। और बाकी 'स' आदि में लग जाता है जैसे—
पुत्रेण सह = सपुत्रः।

कई दशाओं में सुविधा के लिये अन्त में 'क' जोड़ दिया जाता है। जैसे—भर्त्रा सह=सभर्तृका, पतन्या सह = सपत्नीकः।

अभ्यास

(१) इन शब्दों के विग्रह कीजिए और समासों के नाम भी बताइये।

अधिनगरम्, श्वेतपुष्पम्, पञ्चतंत्रम्, नकुलसहदेवौ, गङ्गाजलम्, लोकहितम्, युद्धवीरः, पीताम्बरः, अनधिकारी, सजला।

(२) इन के समास कीजिए—

विघ्नानाम् शान्तिः, साधुश्चासौपुरुषः, त्रयाणां भुवनानां समाहारः, गङ्गा च यमुना च, चौराद् भयम्, प्राप्तः आनको येन, देशस्य नायकः, चक्रं पाणौ यस्य, गणैः सह।

चतुर्थ-खण्ड

द्वितीय प्रकरण

कृदन्त प्रकरण

१. ईश्वरः संसारं करोति २. ईश्वरः संसारस्य कर्त्ता अस्ति (ईश्वर जगत् को बनाता है) (ईश्वर जगत् का बनाने वाला है)

इन दो वाक्ययों में 'करोति' और 'कर्त्ता' ये दो शब्द एक ही 'कृ' धातु से बने हैं, परन्तु पहले वाक्य में 'करोति' पूर्ण (समाप्त) क्रिया है और दूसरे वाक्य में 'कर्त्ता' यह पद विशेषण हो गया है। 'करोति' तिङन्त है और 'कर्त्ता' कृदन्त । 'कर्त्ता' इस शब्द से 'स्' 'औ' 'अस्' इत्यादि विभक्तियां आ कर 'कर्त्ता' कर्त्तारौ, कर्त्तारः, इस तरह सुबन्त रूप बनने लग जाते हैं, 'करोति' इस से 'करोति, कुरुतः, कुर्वन्ति' इस प्रकार तिङन्त रूप चलते हैं, सुबन्त नहीं। अतः—

धातुओं से जिन प्रत्ययों के आने से बने शब्द विशेषण या असमाप्त क्रिया के वाचक हो जाते हैं, उन प्रत्ययों को 'कृत्प्रत्यय' कहते हैं और जिन शब्दों में प्रत्यय आये हों, उन शब्दों को 'कृदन्त शब्द' कहते हैं।

कृत प्रत्यय बहुत से हैं उन में से कुछ मुख्य ये हैं :—

शतृ (अत्), शानच् (आन), तव्य, य, अनीय, क्त (त)

क्त्वा (त्वा), तुमुन (तुम्) ।

शतृ (अत्) प्रत्यय परस्मैपदी धातुओं से और शानच (आन) आत्मनेपदी धातुओं से ही आते हैं। इन दोनों के आने पर धातु और प्रत्यय के मध्य में गण चिह्न (विकरण) भी आ जाता है। इनके कुछ रूप यह हैं:—

भू (भव्) + अ + अत् = भवत रूप :— भवन्, भवन्तौ, भवन्तः इत्यादि
पठ् + अ + अत् = पठत्, रूप :—पठन्, पठन्तौ, पठन्तः इत्यादि।
गम् (गच्छ्) + अ + अत् = गच्छत्, रूप :—गच्छन्, गच्छन्तौ, गच्छन्तः इत्यादि
स्मृ (स्मर) + अ + अत् = स्मरत्, रूप :— स्मरन्, स्मरन्तौ, स्मरन्तः इत्यादि
कथ् + अ + अय + अत् = अथयत्, रूप :—कथयन्, कथयन्तौ, कथयन्त इत्यादि

शानच् के रूप

पच् + अ + आन = पचमान, रूपः— पचमानः, पचमानौ, पचमानः इत्यादि।

लभ् + अ + आन = लभमान, रूप :— लभमानः मभमानौ, लभमानः इत्यादि।

स्मर्तव्य— शानच् आने पर अकार या अकारान्त विकरण और आन के मध्य में और म् आ जाता है जैसे 'लभमान.' इस में।

विधिकृदन्त

तव्य, य और अनीयर्

ये तीनों प्रत्यय विधिलिङ्ग के स्थान पर प्रयुक्त होते हैं

और तीनों का प्रायः 'चाहिए' अर्थ हो जाता है और तव्य से पहिले कई धातुओं में 'इ' भी लग जाती है। तीनों ने रूप—

पठ्+इ+तव्य=पठितव्य (रूप) पठितव्यः (पुं) पठितव्यम् (नपुं)
पठ्+य=पाठ्य ,, पाठ्यः ,, पाठ्यम् ,,
पठ्+अनीय्=पठनीय ,, पठनीयः ,, पठनीयम ,,

इसी प्रकार—गन्तव्य, गमनीय, गम्य, वदितव्य, वदनीय, वाद्य, पक्तव्य, पाच्य, पचनीय, आदि रूप होंगे। स्त्रीलिङ्ग में एक और अ अन्त पर जोड़ा जाता है और पठितव्या, पठनीया, पाठ्या आदि रूप बन जाते हैं।

उदाहरण

१. रामेण पाठः पठितव्यः (राम को पाठ पढ़ना चाहिए)

२. देवदत्तेन दिल्लीं प्रति गन्तव्यम् (देवदत्त को दिल्ली जाना चाहिए)

या

देवदत्तेन दिल्ली गन्तव्या

इन के रूप द्वितीया आदि विभक्तियों में नहीं होते केवल प्रथमा में होते हैं।

क्त प्रत्यय

'क्त' का 'त' बचता है, इस का भूतकाल अर्थ होता है

इसका प्रयोग क्रिया के तौर पर तथा विशेषण के तौर पर दोनों तरह से होता है। जैसे—

१. मोहनः गतः (मोहन गया) क्रिया के तौर पर।
२. गतं रामं प्रत्यावर्त्तय (गए हुए राम को लौटा लाओ)।

कुछ क्त प्रत्ययान्त रूप

भू+त=भूत, (रूप) भूतः (पुँ०) भूता (स्त्री०) भूतम (नपु०)
गम्+त=गत, (रूप) गतः (पु०) गता (स्त्री०) गतम् (नपुं०)

इसी प्रकार ज्ञात, नीत, श्रुत, स्तुत, जित, पठित, कथित, कुपित, मृत, जीवित, हृत, याचित, भक्षित, रक्षित, स्मृत, उक्त, इष्ट आदि क्तान्त शब्द हैं। इन के रूप सभी विभक्तियों में बनते हैं, इनका प्रयोग विशेषणतया हो।

क्त्वा और तुमुन् के रूप

१. श्री प्रकाशः पठित्वा सुप्तः। (श्री प्रकाश पढ़ कर सो गया)
२. विमला पठितुं गच्छति (विमला पढ़ने के लिए जाती है)

पहले वाक्य में 'पठित्वा' यह क्त्वा प्रत्ययान्त है। इसका अर्थ 'पढ़ कर' है, इस प्रकार क्त्वा प्रत्ययान्त शब्द पूर्व काल की क्रिया को कहते हैं।

दूसरे वाक्य में 'पठितु" यह तुमुन् प्रत्यान्त है। इसका अर्थ पढ़ने के लिए है। यह आगे होने वाली (उत्तर कालिक) क्रिया को कहता है। अतः यदि पहले कोई एक क्रिया करके

दूसरी क्रिया करनी हो तो वहां पूर्व काल की क्रिया के वाचक धातु से क्त्वा प्रत्यय आता है और इसका अर्थ करके होता है।

यदि आगे करने वाली क्रिया के लिए पहले कोई क्रिया की जा रही हो तो उत्तर काल की क्रिया के वाच्य धातु से तुमुन् प्रत्यय आतो है और इसका अर्थ 'के लिये' होता है। उदाहरण—

क्त्वा प्रत्ययान्त	तुमुन् प्रत्ययान्त
कृत्वा (करके)	कर्तुम् (करने के लिए)
भुक्त्वा (खा कर)	भोक्तुम (खाने के लिए)
पठित्वा (पढ़ कर)	पठितुम (पढ़ने के लिए)
गत्वा (जा कर)	गन्तुम् (जाने के लिए)
हत्वा (मार कर)	हन्तुम् (मारने के लिये)
जित्वा (जीत कर)	जेतुम् (जीतने के लिये)

स्मर्तव्य—धातु के पूर्व उपसर्ग आ जाने पर क्त्वा को य हो जाता है। जैसे—

हन्+त्वा=हत्वा	नि+हन्+त्वा=निहत्य	(मार कर)
नम्+त्वा=नत्वा	प्र+नम्+त्वा=प्रणम्य	(प्रणाम करके)
गम्+त्वा=गत्वा	आ+गम्+त्वा=आगत्य	(आ कर)
पठ्+त्वा=पठित्वा	प्र+पठ्+त्वा=प्रपठ्य	(पढ़ करके)

अभ्यासः

(१) इन शब्दों के अर्थ बताइए—

भक्तुम्, प्रणम्य, दृष्टः, गन्तव्यम्, पठित्वा, मृतः, लब्ध्वा,

भक्षयितुम् चोरयितुम्, प्राप्तुम, लभमानः, दत्वा, शमनीयम्, सेवमानः, ददत, गतः, पठित्वा, हन्तुम् पश्यन् सुप्तः, नयत, हत्वा, आगत्य ।

(३) शुद्ध कीजिए—

पठमानः, लभन्, नयितुम, लभित्वा, भुज्य, ताडमानः, शयन् ।

(३) रूप बताइये—

गम्+तुमुन्, सेव+त्वा, विभज+य, हन्+क्त, आ+हन्+य, त्यज+तुमुन्, पठ्+तव्य, शय्+अनीय, कृ+क्त ।

तद्धित

जिस प्रकार भाषा में लखनऊ के रहने वाले को लखनवी, इलाहाबाद के रहने वाले को 'इलाहाबाती' कहा जाता है और ये 'लखनवी' और 'इलाहाबादी' दोनों शब्द 'लखनऊ' और 'इलाहाबाद' से ही बन गए हैं। मूल शब्द 'लखनऊ' तथा 'इलाहाबाद' व्यक्ति वाचक संज्ञायें है, परन्तु इस से बने 'लख-नवी' 'इलाहाबादी' शब्द व्यक्ति वाचक संज्ञा न रह कर विशेषण वाचक अर्थात् जो भी लखनऊ या इलाहाबाद में रहे, सभी के विशेषण बन गए हैं। इसी प्रकार संस्कृत भाषा में भी व्यक्तिवाचक संज्ञा शब्दों से कई ऐसे विशेषण-वाचक शब्द बन जाते हैं; जो फिर किसी खास व्यक्ति का नाम न रह कर उस तरह की बहुत सी व्यक्तियों के विशेषण हो जाते हैं। ऐसे शब्दों को 'तद्धितान्त' कहते हैं, तथा संज्ञा शब्दों को विशेषण शब्द बनाने के लिए संज्ञा शब्दों के वाद जो बाद जो प्रत्यय आते हैं, उन प्रत्ययों को 'तद्धति प्रत्यय' कहा जाता है। वे प्रत्यय भी तद्धित ही कहलाते हैं जिन से एक संज्ञा शब्द से दूसरा संज्ञा शब्द बनता है और जिन से विशेषण शब्द से भाववाचक संज्ञा शब्द बनता है, तथा जिन से क्रिया विशेषण शब्द बनता है। जैसे—

मूल शब्द	तद्धित प्रत्यय	तद्धित शब्द	अर्थ
धन	मत्	धनवान्[1]	धन वाला
बुद्धि	मत्	बुद्धिमान्	बुद्धि वाला
तेजस्	विन्	तेजस्वी	तेज वाला
मेधा	विन्	मेधावी	बुद्धि वाला
मालव	ईय	मालवीयः	मालवे का रहने वाला
धन	इन्	धनी	धन वाला
धन	इक	धनिकः	धन वाला
काल	इक	कालिकः[2]	समय में होने वाला
मनस्	इक	मानसिक	मन सम्बन्धी
शरीर	अक	शारीरिकम्	शरीर सम्बन्धी
पुरम्	त्यक्	पौरस्त्यम्[3]	पूर्व का (की)
पश्चात्	त्यक्	पाश्चात्यम्	पश्चिम का (की)
वसिष्ठ	अण्	वसिष्ठः	वसिष्ठ के कुल का (की)

---

1 ह्रस्व अकारान्त शब्दों से परे मत् के 'म्' को 'व' हो जाता है।

२. कालिक की बजाय कालीन शब्द संस्कृत में अशुद्ध हो जाता है।

३ पुरस्त्य अशुद्ध है, पौरस्त्य ही ठीक है।

मूल शब्द	तद्धित प्रत्यय	तद्धित शब्द	अर्थ
वसुदेव	अण्	वासुदेवः	वासुदेव का लड़का (कृष्ण)
रघु	अण्	राघवः	रघु के कुल का (राम)
ग्राम	ईन	ग्रामीणः	गांव का (की)
कुल	ईन	कुलीनः	अच्छे कुल का (की)
सर्व	दा	सर्वदा	हमेशा
सर्व	त्र	सर्वत्र	सब जगह

इसी प्रकार—शैवः, पार्वती, कैकेयी, दशरथि, भागीरथी, लोमशः, दन्तुरः, कौरव्यः, पण्डितः, फलितः, प्रामाणिका, सौवर्णम्, माधुर्यम् लाघवम्, लघुता, गरिमा, गौरवम्, गुरुत्वम्, आदि अनेक प्रकार के तद्धित प्रत्ययान्त शब्द हैं।

लिंग परिवर्तन

बालः पठति (बालक पढ़ता है) बाला नृत्यति (लड़की नाचती है।) इन ऊपर लिखे दो वाक्यों में एक ही 'बाल' शब्द दो बार आया है। पहले वाक्य में वह पुंल्लिग में है और दूसरे वाक्य में वह स्त्री लिंग (लड़की) को कहता है। बाल शब्द को स्त्री लिंग करने के लिए उसके अन्त में ह्रस्व 'अ' की बजाय दीर्घ 'आ' लगा दिया गया है। इसी प्रकार श्रीमत् शब्द का पुंल्लिग में श्रीमान् बनता है और स्त्रीलिंग में उस में 'ई' लग जाने से श्रीमती हो जाता है। इस तरह बहुत से शब्दों को पुल्लिग से स्त्रीलिग बनाने के लिए कहीं २ 'अ' कहीं २ (ई) कहीं २ 'णी' और कहीं 'ति' आदि लगता है। नीचे कुछ पुंल्लिग से स्त्रीलिंग में परिवर्तित शब्दों का परिचय कराया जाता है।

पुँल्लिग	स्त्रीलिंग	अर्थ
मूषकः	मूषिका	चुहिया
अश्वः	अश्वा	घोड़ी
पाचकः	पाचिका	पकाने वाली
अजः	अजा	बकरी
बालकः	बालिका	लड़की
गौरः	गौरी	गोरेरंग की

पुंल्लिंग	स्त्रीलिंग	अर्थ
विद्वान्	विदुषी	पण्डिता (स्त्री)
श्रीमान्	श्रीमती	अच्छी (स्त्री)
कुमारः	कुमारी	कुंवारी
जरन्	जरती	बुढ़िया
पतिः	पत्नी	भार्या
मानुषः	मानुषी	स्त्री
स्वामी	स्वामिनी	मालिकन
राजा	राज्ञी	रानी
आचार्य	आचार्या	गुरु की स्त्र
मातुलः	मातुलानी	मामी
क्षत्रियः	क्षत्रियाणी	क्षत्रिय की स्त्री
श्वशुरः	श्वश्रूः	सास
युवा	युवतिः	जवान स्त्री
धनवान्	धनवती	धनी स्त्री
शूद्रः	शूद्रा	शूद्र स्त्री
ब्राह्मणः	ब्राह्मणी	ब्राह्मण स्त्री
तरुणः	तरुणी	जवान स्त्री
आचार्यः	आचार्या	पढ़ाने वाली
कामुकः	कामुकी	चाहने वाली
मनोहरः	मनोहरा	मन को लुभाने वाली

अभ्यास

(१) संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

पंडित स्त्री के लिये, रानी से, जवान औरत को, कुमारी (कन्या) ने, सास का धन, वृद्धा और बुढ़िया, घोड़ी के लिये घास।

(२) स्त्रीलिंग में बदल दीजिए :—

बालकः, मनुष्यः, आचार्यः, शूद्र, धनवान्, विद्वान्, पतिः, मातुलः, राजा, पाचकः, युवा, कामुकः।

कारक

प्राय: प्रत्येक वाक्य में कोई न कोई 'क्रिया' शब्द पाया ही जाता है और वाक्य में आये हुए दूसरे (संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण आदि) शब्दों के साथ कोई न कोई सम्बन्ध अवश्य रहता है। इस सम्बन्ध को व्याकरण की भाषा में 'कारक' कहते हैं और इसे 'विभक्तियों द्वारा प्रकट किया जाता है। विभक्तियाँ तो आठ हैं, पर कारक सात ही हैं। क्योंकि 'सम्बोधन' में क्रिया का सम्बन्ध नहीं रहता।

यहां पर इन सात कारकों के कुछ विशेष 'प्रयोगों के रूप' ही दिये जायेंगे ताकि शुद्ध अनुवाद करने में सहायता हो सके। उदाहरण के लिए एक वाक्य लीजिए—'वह (मित्र के) साथ खेलता है'। इस का अनुवाद '(मित्रस्य) सह क्रीडति' नहीं होगा' '(मित्रेण) सह क्रीडति' होगा। इस प्रकार—

१. कर्त्ता कारक—'करने वाले' को जतलाता है और 'प्रथमा विभक्ति' में आता है। जैसे—'बालः पठ[ति'] में (बालः) शब्द का।

२. कर्म—(क) क्रिया-व्यापार का फल जतलाता है और प्रायः 'द्वितीया' विभक्ति में आता है। जैसे—'बाल[ः] (पुस्तकम्) पठति' में 'पुस्तकम्' शब्द कर्म, परन्तु जब क्रिया कर्मवाच्च या भाववाच्य में आये, तो 'कर्म' प्रथमा-

विभक्ति में आता है जैसे—'बालेन' (कथा) श्रुयते में 'कथा' शब्द का।

(ख) गति- अर्थ वाली धातुओं के साथ प्राप्य स्थान को जतलाने वाले शब्दों के लिए। जैसे—'छात्रः विद्यालयम गच्छति' में विद्यालयम् शब्द का। ऐसे ही—'सेवकः गृहं प्रविशति' भिक्षुकः ग्रामं प्राप्नोति', में भी।

(ग) प्रच्छ, याच, ब्रू, नी, हृ, पच्, वह आदि धातुओं के साथ दो-दो कर्म आते है। जैसे—पिता (मां प्रश्न) पृच्छति, 'भिक्षुकः (प्रभु' धनं) याचते'। '(पुस्तकम् गृहम्) नय' '(कथां तं) ब्रूहि'। सूदः (तण्डुलान् आदोनं) पचति, आदि में।

(घ) प्रति, अन्तरेण, अभितः परितः, सर्वतः, अन्तरा, धिक आदि के साथ।

जैसे='स (नदीं) प्रति गतः'। 'मम (गृहम्) अभितः वृक्षः तिष्ठन्ति'। (तं बालम् अन्तरेण पृच्छामि।' धिक् (तं मूर्खम)' में।

३. करण:—कर्त्ता 'करण' के द्वारा क्रिया को सिद्ध करता है। अतः करण में तृतीया आती है। कर्मवाच्य या भाववाच्य में कर्ता के साथ भी 'तृतीया' ही विभक्ति आती है।

इसके अतिरिक्त—

(क) सह, समम्, विना और इन के समान अर्थ वाले शब्दों के साथ । जैसे— '(मह) सस क्रीडति', '(तेन) साकं गच्छामि', (त्वया) विना' में ।

(ख) सम, तुल्य, युक्त, हीन, शून्य और पूर्वम् के साथ । जैसे—(परोपकारेण) समो न धर्मः, स (केन) तुल्यः, '(सुखेन) शून्यम् गृहम', '(धर्मेण) हीनः तुरुषः' '(मासेन) पूर्वम् कृतवान्' में ।

(ग) क्री धातु के साथ । जैसे—(शनेत) क्रीता 'गौं' में ।

(घ) कार्यम्, अर्थः, प्रयोजनम्, किम, अलम् और कृतम के साथ । जैसे—'(अनेन) (पुस्तकेन) किं कार्यम' '(मूर्खेण) (पुत्रेण) कोऽर्थः में और ऐसे ही—किम् (तेन) (मूर्खेण)' 'अलम् (तेन) (मूर्खेण)' कृतम् (तेन) (मूर्खेण)' में ।

४. सम्प्रदान—जिस के लिए क्रिया की जाय, या जिसे कुछ दिया जाय, उस के लिये चतुर्थी विभक्ति आती है । जैसे—'स उद्यानं (फलेभ्यः) गच्छति', '(बालाय) पुस्तकं प्रयच्छति' में । इसके अतिरिक्त—

(क) नमः, स्वस्ति, स्वाहा और हितम् के साथ । जैसे— '(तस्मै) नमः', '(प्रजाभ्यः) स्वस्ति', 'अग्नये स्वाहा' '(लोकाया) हितम' में ।

(ख) रुच् धातु के साथ । जैसे—'(मह्यम्)' तद्

न रोचते' में।

(ग) क्रुध, ईर्ष्य आदि धातुओं के साथ। जैसे—'अध्यापकः (छात्राया) क्रुध्यति', 'दुष्टः (मित्राय) ईर्ष्यति' में।

(घ) धृ,कथ्, निविद, उप-दिश् आदि धातुओं के साथ जैसे—'(मह्याम) पञ्च रूप्काणि धारयसि', 'सर्वं वृत्तं (तस्मै) कथय' 'गुरुः (शिष्याय) धमम् उपदिशति', '(आचार्याय) निवेदय एतत' में।

(ङ) अलम, प्रभु, समर्थ, शक्ति आदि के साथ। जैसे—मोहनः (चौराय) अलम, प्रभुः, समर्थः, शक्तः, वा में।

५. अपादान—किसी स्थान, वस्तु या पुरुष से वियोग को जतलाने के लिए 'पंचमी' विभक्ति आती है। जैसे—'(वृक्षात) पत्रम् पतति', '(नगराद) आगच्छति,' में। इसी तरह—

(क) पृथक, भिन्न, अतिरिक्त, बिना,पर, बहिः, आरभ्य, प्रभृति, आदि के साथ। जैसे—'सर्वेभ्यः पृथक्,' '(तस्माद्) भिन्नम्', '(कार्याद्) विना', '(परोपकारात्) तु परो न धर्मः', '(ग्रामाद्) बहिः,' 'तद् दिनाद् आरभ्य' 'रविवारात् प्रभृति,' में।

(ख) तुलनात्मक विशेषण के साथ। जैसे—अयं बालः (तस्माद् बालात) चतुरतरः'। 'इदं पुस्तकम (तस्मान्

पुस्तकाद् रोचकतरम्' में ।

(ग) जन्, भी, रक्ष्, वारय आदि धातुओं के साथ । जैसे—'(पंकात्) कमलं जायते,' '(बीजद्) वृक्षः प्रोहति', 'पुस्तकं (तैलाद्) रक्ष,' (सर्पाद्) भीतः मनुष्यः' में ।

६. सम्बन्ध—'षष्ठी' विभक्ति में आता है । जैसे—'(छात्रस्य) पुस्तकम्' '(तव) पूज्यः' '(परस्य) उपदिशति', इसके अतिरिक्त—

(क) तुलना में 'उत्तम' के साथ में । जैसे—स (सर्वेषां) श्रेष्ठः, में ।

७. अधिकरण—वह आधार जिस पर कर्त्ता कोई क्रिया करे, 'सप्तमी' विभक्ति में आता है । जैसे—'(गृहे) तिष्ठति', '(पीठे) उपविशति' । इसके अतिरिक्त—

(क) विश्वस, स्निह्, व्यवहृ, आदि धातुओं के साथ । जैसे—'मम (त्वयि) न विश्वासः', 'माता (पुत्रे) स्निह्यति', 'सर्वेषु सादरम् व्यवहरामि' ।

(ख) उत्तम, बोधक विशेषणों के साथ । जैसे—स सर्वेषु श्रेष्ठः, 'इदम (तेषु) पुस्तककेषु सुन्दरतमम्'

(ग) प्रवीण, कुशल, चतुर, दक्ष आदि के साथ । जैसे—'त्वं (संस्कृते) प्रवीणः' । 'तद् मित्रम (संगीत-विद्यायां) कुशलम,' 'स (गणिते) चतुरः' में ।

इस प्रकार इन कारकों को समझ कर ही अनुवाद करने में हम कई भयंकर भूलों से बच सकते हैं।

अध्यापक को चाहिए कि विभक्तियों के प्रयोगों का अभ्यास विस्तारपूर्वक छात्रों को समझाए और अभ्यास करवाए। पुस्तक में यह विषय ज़रा संक्षेप से ही कहा गया है।

अभ्यास

१. शुद्ध कीजिए :—

पुत्रस्य सह पिता दिल्ली गच्छति। छात्रं पारितोषिक देहि। नगरेण ग्रामः क्रोशे। खगेभ्यः वायसः धूर्त्तः। धनस्य विना न सुखम्। नगरस्य अहं निवसामि।

२. संस्कृत में अनुवाद कीजिए :—

गाय से दूध दोहता है। सोहन पैर से लंगड़ा है। प्रजाओं को स्वस्ति! इन्द्र को स्वाहा। स्त्री [illegible] से डरती है। यह ग्राम उस ग्राम से अधिक सुन्दर है। वर्णों में [illegible] श्रेष्ठ होता है।

Lalit
Prabha
Gupta
Rajouri

सम्पादक तथा प्रकाशक :—
डाइरेक्टोरेट आफ एजुकेशन

प्रबन्धक :—
स्टेशनरी ऐण्ड प्रिंटिंग डिपार्टमेण्ट
जम्मू ऐण्ड कश्मीर गवर्नमेण्ट

आज का हमारा

हिन्दी व्याकरण

मिडल श्रेणियों के लिये

प्रकाशक :-

जनता किताब घर

पक्का डंगा जम्मू (कश्मीर)

[मूल्य १.५०

नया संस्करण

आज का हमारा हिन्दी व्याकरण

मिडल श्रेणियों के लिये

लेखक

श्री कुन्दन लाल शास्त्री, प्रभाकर ओ० टी०
हिन्दी-संस्कृत अध्यापक
माडल अकैडमी, जम्मू

प्रकाशक

जनता किताब घर
पक्का डंगा, जम्मू।

मूल्य : १.५० पैसे

नया संस्करण

विषय-सूची

पाठ	विषय	पृष्ठ
अध्याय १	भाषा, वर्ण, व्याकरण	१
पाठ पहला	वर्ण और स्वर	४
पाठ तीसरा	व्यंजनों के भेद	५
	संयुक्त व्यंजन, विशेष वर्ण	६
पाठ चौथा	वर्णों का उच्चारण स्थान	७
पाठ पांचवां	प्रयत्न के अन्य भेद	७
अध्याय २		
पाठ पहला	शब्द, शब्द के भेद, शब्दों की व्युत्पत्ति, शब्दों का अर्थ	८

पाठ	विषय	पृष्ठ
पाठ दूसरा	संज्ञा शब्द, संज्ञा के भेद, भाव वाचक संज्ञा की बनावट	१२
पाठ तीसरा	लिंग और लिंग की पहचान. पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के सामान्य नियम	१६
पाठ चौथा	वचन, एक वचन, बहु वचन बनाने के नियम तथा वचन का विशेष प्रगोग	२६
पाठ पांचवां	कारक, विभक्ति, कारकों के लक्षण तथा उदाहरण, संज्ञाओं की रूपावली	२९
पाठ छटा	सर्वनाम तथा सर्वनाम के भेद	३४
पाठ सातवां	सर्वनामों की रूपावली	३६
पाठ आठवां	विशेषण, विशेषण के भेद, विशेषणों की रचना	३८
पाठ नौवां	विशेषणों की तुलना, तुलना के कुछ नियम	४५
अध्याय ३		
पाठ पहला	क्रिया और क्रिया के भेद, अकर्मक क्रियाओं का सकर्मक बनाना,	४५

पाठ	विषय	पृष्ठ
	क्रिया के रूपान्तर, काल,	
	क्रिया के लिंग, वचन और पुरुष	
पाठ दूसरा	क्रिया के वाच्य	५१
पाठ तीसरा	भूत-काल के आवान्तर भेद	५२
पाठ चौथा	वर्तमान-काल के तीन भेद	५७
पाठ पांचवां	क्रियाओं की रूपावली	५८
पाठ छटा	संयुक्त क्रियायें	६४
पाठ सातवां	नाम धातु	६६
पाठ आठवां	प्रेरणार्थक क्रियायें	६७
अध्याय ४		७०
पाठ पहला	क्रिया विशेषण, अव्यय	७३
पाठ दूसरा	सम्बन्ध बोधक	७६
पाठ तीसरा	विस्मयादि बोधक	७७
पाठ पांचवां	पद परिचय	
अध्याय ५ (शब्द रचना)		७९
पाठ पहला	उपसर्ग	८१
पाठ दूसरा	प्रत्यय, तद्धित प्रत्यय	८७
पाठ तीसरा	सन्धि	८८
पाठ चौथा	व्यंजन सन्धि	

पाठ	विषय	पृष्ठ
पाठ पांचवां	विसर्ग सन्धि	९०
अध्याय ६	समास	९३
अध्याय ७		
पाठ पहला	शब्द भंडार	१०१
पाठ दूसरा	विपरीतार्थक शब्द	१०२
पाठ तीसरा	समान रूप भिन्नार्थक शब्द	१०५
पाठ चौथा	एक शब्द बहुतों के स्थान पर	१०७
पाठ पांचवां	विशेषण रचना	१०६
पाठ छटा	भाव वाचक संज्ञाएं	१११
अध्याय ८		
पाठ पहला	वाक्य विचार उद्देश्य तथा विधेय	११३
पाठ दूसरा	वाक्य भेद	११५
पाठ तीसरा	वाक्य विग्रह	११७
पाठ चौथा	विराम चिन्ह	१२२
अध्याय ९		
पाठ पहला	मुहावरे अर्थ सहित	१२६

भाषा

जिस से मनुष्य अपने मतके विचार दूसरे पर प्रकट करता है उसे भाषा कहते हैं।

भाषा के प्रकार

भाषादो प्रकार की होती है एक बोल कर दूसरी लिख कर. बोलने की भाषा को बोली और लिखने की भाषा को लेख कहते हैं। प्रत्येक देश की अपनी २ भाषा होती है, जैसे:—भारत की हिन्दी, इंग्लैण्ड की इंग्लिश, जर्मनी की जर्मन।

लिखने की भाषा का संसार में बहुत उपयोग होता है। क्योंकि पत्रों द्वारा हम अपने मित्रों तथा सम्बन्धियों को समाचार भेज सकते हैं तथा व्यापार सम्बन्धी कार्य चला सकते हैं अतएव मानव समाज में लेख का महत्व-पूर्ण स्थान है।

संकेत

हम अपने विचार संकेतों द्वारा भी प्रकट कर सकते हैं परन्तु मूक तथा अस्पष्ट होने के कारण संकेत भाषा का पद ग्रहण नहीं कर सकते। भाषा से ही संसार में निर्वाह हो सकता है। पुनः व्याकरण पढ़ने की क्या आवश्यकता है? सत्य है लेकिन भाषा की शुद्धि और अशुद्धि का ज्ञान व्याकरण द्वारा ही हो सकता हैं इस लिये भाषा के होते हुए भी व्याकरण का पढ़ना अत्यावश्यक है।

वर्ण

अक्षरसमुदायः वर्णः, वर्णसमुदायः शब्दः, शब्द समुदायः वाक्यम्, वाक्यसमुदायः भाषा, अर्थात् अक्षरों के समूह को वर्ण कहते हैं और वर्ण समूह को शब्द तथा शब्द समूह को वाक्य कहते हैं और वाक्य समूह को भाषा के नाम से पुकारा जाता है। सारांश यह हुआ कि भाषा वाक्यों से बनती हैं, वाक्य शब्दों और शब्द वर्णों से। किसी भी भाषा को जानने के लिये उस भाषा के वर्णों, शब्दों और वाक्यों का ज्ञान होना आवश्यक है। इससे यह सिद्ध होता है। कि वर्ण, शब्द, वाक्य, ये तीनों भाषा के जीवन रूप हैं।
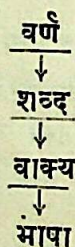
व्याकरण

किसी भी भाषा का शुद्ध ज्ञान उसके वर्णों शब्दों, और वाक्यों के शुद्ध ज्ञान से होता है। यह शुद्ध ज्ञान व्याकरण द्वारा ही होता हैं।

जिस से भाषा की शुद्धता वा अशुद्धता का ज्ञान होता है। उसे व्याकरण कहते हैं।

जिस प्रकार सुन्दर भवन निर्माण के लिये सामान की

आवश्यकता है उसी प्रकार भाषा के शुद्ध रूप को जानने के लिये उसके शुद्ध वर्ण, शब्द, वाक्य का ज्ञान आवश्य है।

व्याकरण के अङ्ग

व्याकरण के तीन अङ्ग हैं। इन्हीं तीनों का यहां विवेचन किया जायेगा।

(१) वर्ण विचार में वर्णों के शुद्ध आकार, उच्चारण, और उनके परस्पर संयोग की रीति का वर्णन किया जाता है।

(२) शब्द विचार में शब्दों के भेद, रूपान्तर और उनकी बनावट के नियम वर्णित होते हैं।

(३) वाक्य विचार में शब्दों से वाक्य बनाने के नियम तथा उनके भेदों का स्पष्टीकरण होता है।

अभ्यास

(१) भाषा किसे कहते हैं वह कितने प्रकार की होती है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

(२) व्याकरण से तुम क्या समझते हो ?

(३) व्याकरण की क्या आवश्यकता है ?

(४) व्याकरण के कितने अंग हैं उन पर प्रकाश डालो ?

पहला अध्याय

पहला पाठ

वर्ण (Letter)

अखण्ड ध्वनि को वर्ण कहते हैं जैसे:— अ, इ, उ, क्, च्,

वर्णमाला—वर्णों के समूह को वर्णमाला कहते हैं।

लिपि—जिन वर्णों में कोई भाषा लिखी जाती है वह उसकी लिपि, (Script) कहलाती है। हिन्दी देवनागरी में लिखी जाती है।

वर्ण दो प्रकार के हैं :—

स्वर व्यंजन

स्वर (Vowel)

अ आ इ ई उ ऊ ए ऐ ओ औ अं अः इन ग्यारह वर्णों को स्वर कहते हैं।

स्वर किसे कहते हैं? जो वर्ण किसी की सहायता की आवश्यकता न रखता हो उसे स्वर कहते हैं। इसके तीन भेद हैं ह्रस्व, दीर्घ, प्लुत।

अ, इ, उ, ऋ इनको ह्रस्व स्वर कहते हैं।

आ, ई, ऊ, ॠ इनको दीर्घ स्वर कहते हैं। ह्रस्व स्वरों को मूल स्वर भी कहते हैं। दो मूल स्वरों के मेल से दीर्घ स्वर बनते हैं।

जैसे:— अ+अ=आ, उ+उ=ऊ इत्यादि।

प्लुत स्वर उसे कहते हैं जिसका बहुत ही दीर्घ ध्वनि से उच्चारण हो। यथा—ओ३म्।

दीर्घ ॠ का हिन्दी में प्रयोग नहीं होता।

ए ऐ ओ औ इन चारों को संयुक्त स्वर कहते हैं।

इनमें भिन्न-भिन्न स्वरों का मेल होता है।

जैसे अ+इ=ए, अ+उ=ओ।

मूल स्वरों से भिन्न जितने स्वर हैं, उन्हें सन्धि स्वर भी कहते हैं।

जो स्वर मुख के साथ नासिका से भी बोले जाते हैं, उन्हें अनुनासिक कहते हैं। जैसे आँच, चाँद जो स्वर केवल मुख से ही बोले जाते हैं, वे निरनुनासिक कहलाते हैं।

जैसे—काम।

दूसरा पाठ

व्यंजन (Consonant)

क ख ग घ ङ   च छ ज झ ञ

ट ठ ड ढ ण   त थ द ध न

प फ ब भ म   य र ल व श ष ह स

इन तेतीस वर्णों को व्यंजन, कहते हैं। इनका वास्तविक रूप क् ख् ग् घ् ङ् यह होता है। इन वर्णों के नीचे जो लकीरें खींची हैं उन्हें हल कहते हैं। इस लिये व्यंजन वर्णों को हल भी कहते हैं हिन्दी की वर्ण माला में इनकी संख्या ४८ है।

व्यंजनों के तीन भेद हैं, जिस में स्वयं शक्ति न हो उसे व्यंजन कहते हैं।

स्पर्श, अन्तस्थ, उष्म।

क से म तक वर्णों को स्पर्श कहते हैं।

य र ल व अन्तस्थ वर्ण कहलाते हैं।

श ष स ह उष्म वर्ण कहलाते हैं।

अनुस्वार (ं) और विसर्ग (:) यह भी एक प्रकार के व्यंजन हैं। अनुस्वार का उच्चारण म के समान होता है। विसर्ग का ह के समान होता है। यह दोनों अकेले कभी नहीं बोले जाते। स्वर के अन्त में आते हैं। इन्हें अयोग वाह भी कहते हैं। जैसे मंगल, पुनः।

चन्द्र बिन्दु (ँ)

अनुस्वर से मिलता-जुलता चन्द्र विन्दु होता है, जिसकी ध्वनि धीमी होती है। इसका उच्चारण केवल नासिका से होता है। और अनुस्वार का मुख तथा नासिका से। यह ही इनका अन्तर है जैसे चाँद, हँस इत्यादि।

संयुक्त व्यंजन—दो अक्षरों के संयोग को संयुक्त व्यंजन कहते हैं जैसे ग्+या=ग्या, थ्+या=थ्या इति।

क्ष, त्र, ज्ञ यह स्वर नहीं हैं अपितु व्यंजन हैं। क्योंकि यह भी दो अक्षरों के संयोग से वनते हैं।

क्+ष=क्ष, ज्+ञ=ज्ञ, त्+र=त्र।

तीसरा पाठ

वर्णों का उच्चारण स्थान

जब किसी वर्ण को बोलना होता है, तो उसका उच्चारण मुख के विशेष भाग से होता है वही भाग उस वर्ण का उच्चारण स्थान होता है।

वर्णों के मुख्य विशेष स्थान छः हैं:—(१) कण्ठ। (२) तालु। (३) मूर्धा। (४) दन्त। (५) ओष्ठ। (६) नासिका।

अ आ क ख ग घ ह और विसर्ग यह कण्ठ से बोले जाते हैं। इ ई च छ ज झ य और श यह तालु से बोले जाते हैं। ऋ ट ठ ड ढ र और ष यह मूर्धा से बोले जाते हैं। लृ त थ द ध ल और स यह दन्त से बोले जाते हैं। उ ऊ प फ ब भ इनका उच्चारण ओष्ठों से होता है। ङ ञ ण न म इनका उच्चारण स्थान नासिका से होता है। इस लिये इनको अनुनासिक वर्ण भी कहते हैं।

आभ्यन्तर प्रयत्न भेद

इनके चार भेद हैं :—(१) विवृत। (२) स्पृष्ट। (३) ईषद्विवृत। (४) ईषद् स्पृष्ट।

(१) जिन वर्णों के बोलते समय जिह्वा खुली रह जाए, उनको विवृत प्रयत्न होता है। जैसे सब स्वर।

(२) जिन वर्णों के बोलते समय तालु आदि का जिह्वा के साथ स्पर्श हो उनका स्पृष्ट प्रयत्न होता है। जैसे क से म तक।

(३) जिन वर्णों को बोलते समय तालु जिह्वा कुछ खुली

रह जाए उनको ईषद् विवृत प्रयत्न होता है। जैसे श, ष, स, ह।

(४) जिन वर्णों को बोलते समय जिह्वा कुछ बन्द रह जाए उनका ईषद् स्पृष्ट प्रयत्न होता है। जैसे य, र, ल, व।

वाह्य प्रयत्न दो प्रकार का होता है। (१) घोष (२) अघोष।

(१) हर एक वर्ण का ३, ४, ५ अक्षर सारे स्वर और य, र, ल, व घोष हैं।

(२) हर एक वर्ग का १, २ अक्षर और श ष अघोष कहलाते हैं।

पहला पाठ

शब्द (Words)

वर्णों का वह समूह जिसका कुछ अर्थ हो शब्द कहलाता है।

शब्द दो प्रकार का होता है। साथक और निरर्थक।

सार्थक वह शब्द हैं जिनका कुछ अर्थ हो जैसे गाय एक लाभदायक पशु है। इस में गाय आदि सभी शब्दों का कुछ न कुछ अर्थ है। अतः यह शब्द सार्थक हैं।

निरर्थक वह शब्द हैं जिनका कुछ अर्थ न हो। जैसे कौआ कायं कायं करता है। यहां कायं कायं शब्दों का कुछ अर्थ नहीं। अतः यह निरर्थक हैं।

परन्तु जब निरर्थक ध्वनियां किसी विशेष अर्थ को प्रकट

करने के लिए प्रयुक्त की जाती हैं, तो यह निरर्थक होती हुई भी सार्थक बन जाती हैं। जैसे आपकी टैं टैं ने सिर खा लिया। यहां टैं टैं से बकवास अभिप्रेत है।

भाषा में केवल सार्थक शब्दों का ही प्रयोग होता है। अतः व्याकरण में सार्थक शब्दों पर ही विचार किया जाएगा।

दो या दो से अधिक वर्णों के मेल से बनी हुई सार्थक ध्वनि को ही शब्द कहा जाता है।

शब्द भेद वाक्य खण्ड (Parts of Speech)

प्रयोग के अनुसार शब्द के आठ भेद हैं।

संज्ञा Noun सर्वनाम Pronoun

विशेषण Adjective क्रिया Verb

यह चार शब्द विकारी हैं क्योंकि इन में परिवर्तन हो जाता है।

क्रिया विशेषण Adverb सम्बन्ध बोधक Preposition

समुच्चय बोधक Conjunction

विस्मयादि बोधक Interjection

यह चार शब्द अविकारी हैं अर्थात् इन में परिवर्तन नहीं होता।

व्युत्पत्ति (बनावट) के विचार से शब्द के तीन भेद होते हैं। रूढ़, यौगिक, योग रूढ़।

जिन शब्दों के खण्डों का अलग अलग करने पर कोई अर्थ प्रतीत नहीं होता उसे रूढ़ कहते हैं। हाथ, पैर इत्यादि ह और थ को अलग करने पर कोई अर्थ नहीं निकलता है।

जो शब्द दो खण्डों के योग से बना हो जिसके दोनों खण्ड अर्थ रखते हों। इन्हें यौगिक कहा जाता है। जैसे विद्यालय, विद्या+आलय यह शब्द दो शब्दों के योग से बना है और इसके दोनों खण्ड सार्थक हैं।

जो शब्द यौगिक शब्दों के समान ही बनते हैं, परन्तु अपने सामान्य अर्थ को त्याग कर विशेष अर्थ को प्रतीत करते हैं, उन्हें योग रूढ़ कहते हैं।

पंकज का सामान्य अर्थ है कीचड़ से उत्पन्न होने वाला परन्तु विशेष अर्थ कमल का बोध कराता है।

अर्थ के विचार से भी शब्द के तीन भेद माने गए हैं।

वाचक लाक्षणिक व्यंजन

जो शब्द कोषादि में नियत अपने प्रसिद्ध अर्थ का बोध करता है, उसे वाचक कहते हैं।

गधा भी लाभदायक जीव है। यहां गधा शब्द से उस पशु का बोध होता है। जिस पर लोग बोझ ढोते हैं, इस लिए गधा शब्द वाचक है।

जो शब्द अपने प्रसिद्ध अर्थ को त्याग कर विशेष अर्थ का बोध कराता है, उसे लाक्षणिक कहते हैं।

अरे बालक तू तो निरा गधा है। यहां गधा शब्द से उसके प्रसिद्ध अर्थ पशु का बोध नहीं होता। अपितु उस से सम्बन्ध रखने वाले एक अन्य अर्थ मूर्ख का ज्ञान होता है, अतः गधा शब्द यहां लाक्षणिक है। जो शब्द अपने ऊपर

के सामान्य अर्थ का बोध न करा कर किसी गूढ़ अर्थ को प्रकट करता है, उसे व्यंजन कहते हैं। सूर्य उदय हुआ। इस का अर्थ है उठने का समय हुआ। दिया बुझाने का समय हुआ। काम करने का समय हुआ।

उद्गम के विचार से शब्द के चार भेद हैं।

तत्सम तद्भव देशी विदेशी

तत्सम वे शब्द हैं, जो संस्कृत के हैं और बिना किसी परिवर्तन के जिन का हिन्दी में प्रयोग होता है। जैसे पिता, माता, बालक, राजा इत्यादि।

तद्भव वे हैं, जो संस्कृत शब्दों से बिगड़ कर बने हों और हिन्दी में बदले हुए रूप से प्रयुक्त होते हैं। जैसे रात्रि से रात। पत्र से पत्ता। क्षेत्र से खेत। निद्रा से नींद।

देशी शब्द वे हैं जो संस्कृत शब्दों से नहीं बने अपितु भारत की भिन्न २ बोलियों से लिये गए हैं। जैसे पेट, पगड़ी, मुक्का इत्यादि।

विदेशी शब्द वे हैं जो विदेशी भाषाओं से आए हैं जिनका प्रयोग हिन्दी में उसी भाषा में होता है। अंग्रेज़ी, कोट, पैंसिल, स्टेशन आदि।

फारसी—चालाक, तोप, बदबू, अफसोस इत्यादि।

अरबी—इमानदार, बीवी, बहादुर, बेगम इत्यादि।

अभ्यास

शब्द किसे कहते हैं। सामान्यतया उसके कितने भेद हैं। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो। (२) विकारी तथा अविकारी

शब्द कौन से हैं। (३) व्युत्पत्ति के विचार से शब्दों के कितने भेद हैं। प्रत्येक को उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो। अर्थ भेद के विचार से शब्दों के कितने भेद हैं। प्रत्येक पर अलग अलग प्रकाश डालो। (४) उद्गम के विचार से शब्दों के कितने भेद हैं। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

दूसरा पाठ

संज्ञा शब्द (Noun)

किसी पुरुष स्थान या वस्तु के नाम को संज्ञा कहते हैं।

जैसे :—कान्ता, अजीत कौर, स्लेट, सचाई।

संज्ञा के भेद (Kinds of Noun)

संज्ञा शब्द के पांच भेद हैं :—

व्यक्ति वाचक, जाति वाचक, भाव वाचक, समुदाय वाचक, द्रव्य वाचक।

व्यक्ति वाचक संज्ञा Proper Noun एक शब्द का उच्चारण करने से जब इसे एक ही शब्द का ग्रहण होता है, उसे हम व्यक्ति वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे :—अजीत कौर, देहली पवन, कमलेश, हिमालय यह सब व्यक्ति वाचक संज्ञायें हैं, क्योंकि अजीत कौर एक ही विशेष लड़की का नाम है, अन्य का नहीं।

जाति वाचक संज्ञा Common Noun एक शब्द का उच्चारण करने से जब हमें उसकी जाति का ज्ञान हो उसे हम जाति

वाचक कहते हैं। जैसे सिंह, पशु, लड़की, गाय, नदी, यहां नदी शब्द से सम्पूर्ण नदियों का ज्ञान होता है। इस लिए नदी शब्द जाति वाचक है। अन्यत्र भी इसी प्रकार समझें।

विशेष जाति वाचक संज्ञा व्यक्ति वाचक संज्ञा के समान प्रयोग।

जब कोई जाति वाचक संज्ञा किसी विशेष गुण के कारण विशेष व्यक्ति का बोध कराए तो वह व्यक्ति वाचक संज्ञा बन जाती है। आज भारत के घर घर श्री नहरू और महात्मा गांधी की आवश्यकता है। नेहरू एक जाति है और गान्धी भी यहां पर प्रसिद्ध तथा विशेष गुणों के कारण नेहरू शब्द से पण्डित जवाहर लाल का बोध होता है और गान्धी शब्द से मोहन दास कर्म चन्द ही लिया जाता है। यहां पर नेहरू तथा गान्धी व्यक्ति वाचक संज्ञायें बन गई हैं।

व्यक्ति वाचक संज्ञा का जाति वाचक संज्ञा के रूप में प्रयोग।

जब कोई व्यक्ति वाचक संज्ञा किसी व्यक्ति के विशेष गुण को सूचित करने के लिए प्रयुक्त होती है तब वह जाति वाचक बन जाती है। जैसे आज देश में सीता और सावित्री उत्पन्न हों, तो भारत का कल्याण हो सकता है। यहां सीता और सावित्री के समान गुण धारण करने वाली स्त्रियों से अभिप्राय है। यहां सीता और सावित्री जाति वाचक संज्ञा के समान प्रयुक्त हुई हैं।

भाव वाचक संज्ञा Abstract Noun

जिससे किसी पदार्थ या व्यक्ति के गुण, दोष, धर्म, दशा

या व्यापार आदि का बोध हो उसे भाव वाचक संज्ञा कहते हैं। जैसे चाल, सचाई, बचाई, वीरता इत्यादि। चाल से व्यापार का सचाई से गुण का यह किसी पदार्थ या व्यक्ति का नाम नहीं, अपितु उनके दशा आदि के नाम हैं। भाव वाचक संज्ञा का ज्ञान मन तथा बुद्धि से होता है, इन्द्रियों से नहीं।

भाव वाचक संज्ञा चार प्रकार के शब्दों से बनती है। जाति वाचक संज्ञा से लड़का से लड़कपन, मनुष्य से मनुष्यता, इत्यादि।

सर्वनाम से अपना से अपनापन इत्यादि।

विशेषन से मीठा से मिठास, बुरा से बुराई इत्यादि।

क्रिया से दौड़ना से दौड़, हंसना से हंसी, खेलना से खेल इत्यादि।

समुदाय वाचक संज्ञा (Collective noun)

जिस संज्ञा से व्यक्तियों या पदार्थों के समूह के नाम का बोध हो उसे समुदाय वाचक कहते हैं। जैसे :—सेना, मेला, सभा, कमेटी, टीम इत्यादि।

द्रव्य वाचक संज्ञा (Material noun)

राशि के रूप में पाई जाने वाली वस्तु का नाम बताने वाली संज्ञा को द्रव्य वाचक संज्ञा कहते हैं। सोना, लोहा, तांबा, पानी, हवा।

भाव वाचक संज्ञा के कुछ उदाहरण :—

जाति वाचक	भाव वाचक	जाति वाचक	भाव वाचक
बाल	बालपन	चोर	चोरी

पशु	पशुता	दास	दासता
लुटेरा	लूट	शिशु	शिशुता
वैरी	वैर	साधु	साधुता
विशेषण	**भाव वाचक**	**विशेषण**	**भाव वाचक**
सर्द	सर्दी	खट्टा	खटाई
गर्म	गर्मी	लम्बा	लम्बाई
बूढ़ा	बुढ़ापा	कम	कमी
न्यून	न्यूनता	भोला	भोलापन
नीच	नीचता	मोटा	मोटापन
मूर्ख	मूर्खता	भला	भलाई
सुन्दर	सुन्दरता	वहुत	वहुतायत
संगी	संगित	ठण्डा	ठण्डक
शान्त	शान्ति	आलसी	आलस्य
गहरा	गहराई	चिकना	चिकनाहट
क्रिया	**भाव वाचक**	**क्रिया**	**भाव वाचक**
थकना	थकावट	चमकना	चमक
सजाना	सजावट	झगड़ना	झगड़ा
घबराना	घबराहट	लड़ना	लड़ाई
चढ़ना	चढ़ाई	लिखना	लिखाई
पढ़ना	पढ़ाई	पहचानना	पहचान
रुकना	रुकावट	वहना	वहाव
बोलना	वोली	बचना	बचाव
मारना	मार	धोना	धुलाई
जलना	जलन	मिलना	मेल या मिलाप

अभ्यास

(१) संज्ञा किसे कहते हैं। उसके कितने भेद हैं! उदाहरण सहित लिखो '

(२) भाव वाचक संज्ञा कितने प्रकार के शब्दों से बनाई जाती है। प्रत्येक के दो दो उदाहरण दो।

(३) व्यक्ति वाचक संज्ञा कब जाति वाचक बनती है और जाति वाचक संज्ञा कब व्यक्ति वाचक बनती है।

तीसरा पाठ

लिंग (Gender)

पुरुष जाति	स्त्री जाति
पुत्र	पुत्री
बेटा	बेटी
बूढ़ा	बुढ़िया
हंस	हंसन
सेठ	सेठानी
राजा	रानी
धोबी	धोबिन

ऊपर दो प्रकार की संज्ञाएं हैं। पहली पुरुष जाति की संज्ञाएं हैं। इनसे पुरुष जाति का बोध होता है। ये पुलिंग कहलाती हैं। दूसरी स्त्री जाति की संज्ञाएं हैं। इन से स्त्री जाति का बोध होता है। ये स्त्रीलिंग कहलाती हैं। संज्ञा के जिस रूप से उसकी जाति का बोध हो उसे लिंग कहते

हैं। संज्ञायों की दो जातियां होती हैं। पुरुष जाति, स्त्री-जाति अतः हिन्दी में लिंग दो प्रकार के हैं। (१) पुलिंग (२) स्त्रीलिंग।

पुलिंग (Masculine Gender)

जिस से पुरुष जाति का बोध हो उसे पुलिंग कहते हैं।
जैसे—पिता, पुत्र, घोड़ा, शेर।

स्त्रीलिंग (Feminine Gender)

जिस से स्त्री जाति का बोध हो उसे स्त्रीलिंग कहते हैं।
जैसे—माता, पुत्री, घोड़ी, देवी।

लिंग की पहचान

सजीव संज्ञायों में लिंग की पहचान सुगमता से हो जाती है क्योंकि उन के जोड़े होते हैं और वह लिंग भेद कर देते हैं।

जैसे—पिता-माता, बेटा-बेटी, गधा-गधी, जिन निर्जीव संज्ञाओं के जोड़े होते हैं, उन में भी लिंग ज्ञान सुगमता से हो जाता है। जैसे सोटा-सोटी, गट्ठर गठरी, लक्कड़-लकड़ी पर जिन संज्ञायों के जोड़े नहीं होते उन के लिंग का ज्ञान कठिनता से होता है। उन की पहचान के लिए कुछ नियम नीचे दिये जाते हैं। कुछ ऐसी भी प्राणि वाचक संज्ञायें हैं जिन से दोनों जातियों पुरुष या स्त्री का बोध होता है। उन्हें एक ही लिंग में रखना पड़ता है, जिसे नित्य लिंग कहते हैं।

जैसे नित्य पुलिंग—कौवा, खटमल, भेड़िया, उल्लू, चीता, बिच्छू।

नित्य स्त्रीलिंग, मक्खी, गिलहरी, चील, जोंक, कोयल, मैना, इन में जाति भेद करना हो तो उन से पूर्व नर या मादा शब्द जोड़ा जाता है।

जैसे—नर भेड़िया, मादा भेड़िया, नर चीता, मादा चीता, इसी प्रकार सदस्य, कवि, छात्र, आदि कुछ शब्दों से पूर्व पुरुष या स्त्री जोड़ कर जाति भेद किया जाता है। जैसे पुरुष मेम्बर, स्त्री मेम्बर, पुरुष कवि, स्त्री कवि।

पुलिंग संज्ञायें

(१) जिन प्राणि वाचक संज्ञायों से पुरुष जाति का बोध हो पुलिंग कहलाती है। जैसे पिता, घोड़ा गधा, ऊंटा।

(२) अप्राणि वाचक संज्ञायों में प्रातः मोटी भारी और बेढंगी वस्तुओं के नाम पुलिंग होते हैं। जैसे—पत्थर, लोटा, लक्कड़।

(३) देशों और पर्वतों, समुद्रों और द्रव पदार्थों के नाम प्रायः पुलिंग होते हैं।

देशों के नाम—भारत वर्ष इत्यादि।
पर्वतों के नाम—हिमालय इत्यादि।
समुद्रों के नाम—हिन्द सागर इत्यादि।
द्रव पदार्थों के नाम—पानी, घी, तेल, शर्बत।

(४) ग्रहों, धातुओं, रत्नों, अन्नों और वृक्षों के नाम पुलिंग होते हैं। वारों के नाम पुलिंग, मासों के नाम।

पुलिंग—अन्य विभाग सवेरा, वर्ष, पल, मिण्ट।

(५) संस्कृत की पुलिंग तथा नपुंसक लिंग संज्ञायें हिन्दी में

प्रायः पुलिंग होती हैं। जैसे—धन, बल, ग्राम, देश। अंग्रेज़ी तथा उर्दू की संज्ञायें व्यावहरानुसार पुलिंग होती हैं।

जैसे—कोट, बूट, बटन, स्कूल, बाग, इत्यादि।

जिन भाव वाचक संज्ञायों के अन्त में आव, पन, पा, त्व, हो वे पुलिंग होतीं हैं।

जैसे—बहाव, बचपन, बुढ़ापा, मनुष्यत्व।

स्त्रीलिंग

(१) प्राणिवाचक संज्ञायों से स्त्री जाति का बोध हो वे स्त्री लिंग होती हैं।

जैसे—माता, घोड़ी, गधी, बकरी, आदि।

(२) प्रायः छोटी हल्की और पतली संज्ञायें स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे :—पहाड़ी, लुटिया, तलवार, इत्यादि।

(३) प्रायः ई आई, ऊ न वाचक और या अ ना वाली संज्ञायें स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे नदी, कापी, भलाई बुराई, बुढ़िया, डिबिया।

(४) जिन भाव वाचक संज्ञायों के अन्त में ट, वट, हट, त, त्त, हों वे स्त्रीलिंग होती हैं। जैसे झंझट, बनावट, घबराहट, बचत, दासता,

(५) नदियों, झीलों, तिथियों और नक्षत्रों के नाम स्त्रीलिंग होते हैं।

(६) किराये और भोजनों के नाम प्रायः स्त्रीलिंग होते हैं।

(७) विदेशी भाषाओं की संज्ञायें व्यवहार के अनुसार

स्त्रीलिंग में आती हैं।

(८) अंग्रेज़ी संज्ञायें स्त्रीलिंग में होती हैं। पैन्सिल, स्लेट, इत्यादि।

(६) उर्दू संज्ञायें स्त्रीलिंग में होती हैं।

जैसे :—हवा, सेज, सेहत, इत्यादि।

प्राणियों के विशेष समूहों के नाम बताने वाली संज्ञायें कुछ पुलिंग में आती हैं, और कुछ स्त्रीलिंग में।

पुलिंग—संघ, दल, मण्डल, समुदाय।

स्त्रीलिंग—सेना, सभा, कौन्सिल, कमेटी इत्यादि।

कुछ ऐसे शब्द हैं, जिन का संस्कृत का लिंग हिन्दी में बदल जाता है। जैसे :—

शब्द	संस्कृत लिंग	हिन्दी लिंग
आत्मा	पुलिंग	स्त्रीलिंग
देवता	स्त्री	पु०
देह	पु०	स्त्री
महिमा	पु०	स्त्री
विजय	पु०	स्त्री
आयु	पु०	स्त्री
शीत	पु०	स्त्री
ऋतु	पु०	स्त्री
व्यक्ति	स्त्री	पु०
बाहु	पु०	स्त्री

इतने होने पर लिंग की पहचान सुगम बात नहीं अपितु उच्च कोटि के विद्वानों के ग्रन्थ पढ़ने से ही अधिक ज्ञान हो सकता है।

पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के सामान्य नियम। प्राणि वाचक संज्ञायें।

अ अन्त पुलिंग संज्ञायों के अन्तिम अ, को इ में बदल कर स्त्रीलिंग बनाते हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
देव	देवी	हिरण	हिरणी
पुत्र	पुत्री	बन्दर	बन्दरी
दास	दासी	तीतर	तीतरी
ब्राह्मण	ब्राह्मणी	गीदड़	गीदड़ी
तरूण	तरूणी	कबूतर	कबूतरी

(क) आ अन्त पुलिंग शब्दों में ई लगाने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
लड़का	लड़की	लंगड़ा	लंगड़ी
बेटा	बेटी	बकरा	बकरी
घोड़ा	घोड़ी	कव्वा	कव्वी
गधा	गधी	बिल्ला	बिल्ली
दादा	दादी	नाना	नानी
चाचा	चाची	मामा	मामी
पोता	पोती	साला	साली

कुछ अप्राणि वाचक संज्ञायों से लघुता या सूक्ष्मता के अर्थ में ई लगाकर स्त्रीलिंग बनते हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
रस्सा	रस्सी	पहाड़	पहाड़ी

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
पुतला	पुतली	लठ	लाठी
घण्टा	घण्टी	गठर	गठरी

(इ) कुछ आ अन्त संज्ञायों के अन्तिम आ को इ या कर देने से स्त्रीलिंग बनते हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
कुत्ता	कुत्तिया	बेटा	बिटिया
चूहा	चुहिया	मुन्ना	मुनिया
लोटा	लुटिया	गुड्डा	गुड़िया
डिब्बा	डिबिया	बूढ़ा	बुढ़िया

(क) व्यवसाय सूचक संज्ञायों में अन्तिम स्वर के स्थान में इन लगता है।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
सुनार	सुनारिन	हलवाई	हलवाईन
तेली	तेलिन	लुहार	लुहारिन
धोबी	धोबिन	नाई	नाइन
ग्वाला	ग्वालिन	दुकानदार	दुकानदारिन
जुलाहा	जुलाहिन	पुजारी	पुजारिन
भंगी	भंगिन	दर्जी	दर्जिन

(ख) कुछ प्राणि वाचक संज्ञायें भी इन लगाने से स्त्रीलिंग बनती हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
सांप	सांपिन	सूबेदार	सूबेदारिन

नाग	नागिन	जमादार	जमदारिन
बाघ	बाघिन	इसाई	इसाइन

पशु पक्षी वाचक शब्दों के अन्त में नी लगा कर स्त्रीलिंग बनते हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
सिंह	सिंहनी	मोर	मोरनी
शेर	शेरनी	ऊंट	ऊंटनी
स्यार	स्यारनी	रीच्छ	रीच्छन

वर्ण वाचक तथा जाति वाचक संज्ञायों को भी नी लगता है।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
राजपूत	राजपूतनी	भील	भीलनी
जाट	जाटनी	टहलुया	टहलनी
मज़दूर	मज़दूरन	डाक्टर	डाक्टरनी
मुसलमान	मुसलमानानी		

वर्ण वाचक तथा सम्बन्ध वाचक संज्ञायों के आगे आनी लगता है।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
सेठ	सेठानी	खत्री	खत्रानी
जेठ	जेठानी	मुगल	मुगलानी
चौधर	चौधरानी	मेहतर	मेहतरानी
नौकर	नौकरानी	हिन्दु	हिन्दुआनी
रुद्र	रुद्राणी	इन्द्र	इन्द्राणी

उपनाम तथा पदवी वाचक संज्ञाओं से आईन लगता है और पूर्व दीर्घ स्वर को ह्रस्व कर देते हैं।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
बाबू	बाबुआईन	ठाकुर	ठाकुराइन
लाला	लालाइन	पण्डित	पण्डितान
चौबे	चौबाइन	पांडे	पंडाइन
गुरु	गुरुआइन		

कुछ पुलिंग संज्ञायों के स्त्री लिंग शब्द बिल्कुल भिन्न होते हैं। जैसे :—

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
पिता	माता	बाप	मां
राजा	रानी	भाई	वहिन
बैल	गाय	ससुर	सास
पुरुष	स्त्री	मियां	बीवी
पुत्र	कन्या	मर्द	औरत
साहिब	साहिब	बेटा	बहु
नर	मादा		

संस्कृत संज्ञायों संस्कृत रीति से ही स्त्रीलिंग में बदलती हैं। कुछ शब्दों के अन्त में आ लगता है।

पुलिंग	स्त्रीलिंग	पुलिंग	स्त्रीलिंग
बाल	बाला	प्रिय	प्रिया
वृद्ध	वृद्धा	महाशय	महाशया
शूद्र	शूद्रा	दयित	दयिता
पण्डित	पण्डिता	सुत	सुता

अ के अन्त संस्कृत संज्ञायों के अन्तिम अंक को इका में

बदलते हैं। जैसे :—

पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
बालक	बालिका	लेखक	लेखिका
पाठक	पाठिका	गायक	गायिका
नायक	नायिका	अध्यापक	अध्यापिका

हलन्त शब्दों के अन्त में ई लगती है।

पु०	स्त्री०	पु०	स्त्री०
राजन्	राज्ञी	युवन्	युवती
साम्राज्	साम्राज्ञी	कर्तृ	कर्त्री
भगवत्	भगवती	स्वामिन्	स्वामिनी
विद्वस्	विदुषी	मानिन्	मानिनी
गच्छत्	गच्छती	गामिन्	गामिनी

कुछ स्त्रीलिंग संज्ञाओं के पुलिंग रूप भिन्न होते हैं।

स्त्री०	पु०	स्त्री०	पु०
बहिन	बहनोई	ननद	ननदोई
भैंस	भैंसा	भेड़	भेड़ा
बिल्ली	विलाव	रांड	रंडुआ

अभ्यास

लिंग किसे कहते हैं। हिन्दी में कितने लिंग हैं। उदाहरण सहित लिखो। पुलिंग से स्त्रीलिंग बनाने के मुख्य नियम कौन कौन से हैं। सोदाहरण लिखो।

———

चौथा पाठ

वचन Number

एक संख्या	बहुत संख्या
घोड़ा	घोड़े
भैंस	भैंसें
माता	मातायें
कापी	कापियां
चिड़िया	चिड़ियां

ऊपर दो प्रकार की संज्ञायें हैं। पहिली संज्ञायों से एक वस्तु का बोध होता है। और दूसरी संज्ञायों से एक से अधिक का।

शब्द के जिस रूप से संख्या का बोध हो उसे वचन कहते हैं।

एक वचन Singular Number

जिससे एक वस्तु का बोध हो, उसे एक वचन कहते हैं। जैसे :—लड़का, बूढ़ा, नदी।

बहु वचन Plural

जिस से बहुत वस्तुओं का बोध हो उसे बहु वचन कहते हैं। जैसे :—लड़के, बूढ़े, नदियां।

एक वचन से बहु वचन बनाने के नियम।

अकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के अन्तिम आ को ए में बदलते हैं।

एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
बच्चा	बच्चे	कपड़ा	कपड़े
गधा	गधे	शीशा	शीशे
बेटा	बेटे	सोटा	सोटे
कव्वा	कव्वे	पुतला	पुतले

अकारान्त पुलिंग संज्ञाओं के बिना शेष सभी पुलिंग संज्ञाएं दोनों वचनों में समान होती हैं।

एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
बालक	बालक	बैर	बैर
मुनि	मुनि	सरसों	सरसों
साधु	साधु	जौ	जौ
डाकू	डाकू	गुणी	गुणी
चौबे	चौबे	विद्वान्	विद्वान्

अकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्तिम अ को ए में बदल देते हैं। जैसे :—

एक वचन	बहु वचन
पुस्तक	पुस्तकें
बहिन	बहिनें
बोतल	बोतलें
कलम	कलमें

इकारान्त तथा ईकारान्त स्त्रीलिंग संज्ञाओं के अन्त में यां और लगाते हैं। अन्तिम दीर्घ ई को ह्रस्व इ में बदल देते हैं।

एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
जाति	जातियां	लड़की	लड़कियां

नीति	नीतियां	सहेली	सहेलियां
रीति	रीतियां	नदी	नदियां
तिथी	तिथियां	डाली	डालियां

इया अन्त संज्ञाओं को इयां में बदल देते हैं। जैसे :—

एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
कुतिया	कुतियां	लुटिया	लुटियां
चुहिया	चुहियां	गुड़िया	गुड़ियां
डिबिया	डिबियां	बुढ़िया	बुढ़ियां

शेष आ, उ, ऊ, औ अन्त स्त्रीलिंग शब्दों के आगे एं जोड़ते हैं और दीर्घ ऊ को ह्रस्व उ कर देते हैं।

एक वचन	बहु वचन	एक वचन	बहु वचन
माता	मातायें	ऋतु	ऋतुएं
कन्या	कन्यायें	बहु	बहुएं
शाला	शालायें	गौ	गौयें

वचन का विशेष प्रयोग

आदर के लिये एक वचन के स्थान में बहु वचन का प्रयोग होता है। जैसे :—राम आदर्श राजा थे। पिता जी आ गये हैं।

नेता लेखक और प्रतिनिधी अपने लिये बहु वचन का प्रयोग करते हैं। जैसे :—नेता गांधी जी ने कहा कि हम लोगों को सावधान करते हैं।

लेखक :—पिछले अध्याय में हम लिख चुके हैं।

प्रतिनिधि :—श्री लाल बहादुर शास्त्री ने कहा कि हम पाकिस्तान को मुंह तोड़ उत्तर देंगे।

अभ्यास

वचन किसे कहते हैं। हिन्दी में वचन कितने होते हैं उदाहरण सहित लिखो।

एक वचन से बहु वचन बनाने का साधारण नियम लिखो।

एक वचन के स्थान में बहु वचन का प्रयोग कब होता है उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

पांचवां पाठ

कारक Case

संज्ञा या सर्वनाम के जिस रूप से उसका सम्बन्ध क्रिया या वाक्य के दूसरे शब्दों से प्रकट हो, उसे कारक कहते हैं।

विभक्ति (कारक चिन्ह)

सम्बन्ध प्रकट करने के लिए संज्ञा या सर्व नाम के साथ जो चिन्ह लगाए जाते हैं उसे विभक्ति कहते हैं। जैसे कल उसका भाई अपने सम्बन्धियों के लिये बाग से टोकरी में कुछ आम लाया। इस वाक्य में का के लिये से में ऐसे चिन्ह हैं। जो एक शब्द का दूसरे शब्द से सम्बन्ध प्रकट करते हैं। ये विभक्तियां हैं। हिन्दी में कारक आठ हैं उनके नाम तथा विभक्ति चिन्ह नीचे दिये जाते हैं।

	कारक	विभक्ति
१	कर्ता	नें
२	कर्म	को
३	करण	से, साथ, के द्वारा
४	सम्प्रदान	के लिए
५	अपादान	से अलग
६	सम्बन्ध	का के की
७	अधिकरण	में पर
८	सम्बोधन	हे रे अरे अजी ओ

(कारकों के लक्षण तथा उदाहरण)

कर्ता कारक Nominative case

क्रिया के व्यापार करने वाले को कर्ता कहते हैं। जैसे :— बालक सोता है। यहां सोने का व्यापार लड़का करता है। इस लिये बालक कर्ता कारक है।

कर्ता दो प्रकार का होता है। प्रधान कर्ता और अप्रधान कर्ता।

जिस कर्ता के लिंग वचन क्रिया के लिंग वचन पुरुष के अनुसार न हों उसे अप्रधान कर्ता कहते हैं। जैसे :— लड़के ने पाठ पढ़ा। अप्रधान कर्ता के साथ कर्ता का चिन्ह ने लगता है।

जिस कर्ता के लिंग वचन पुरुष क्रिया के लिंग वचन पुरुष के अनुसार होते हैं, उसे प्रधान कर्ता कहते हैं। प्रधान कर्ता के साथ विभक्ति चिन्ह नहीं होता। जैसे मोहन दौड़ता है।

कर्म कारक Objective case

क्रिया के व्यापार का फल जिस पर पड़े उसे कर्म कारक

कहते हैं। जैसे :—माली फल तोड़ता है। तोड़ा क्या गया फल इस लिए फल यहां कर्म कारक है। यहां कर्म का चिन्ह कोई नहीं है।

करण कारक Instrumental case

इसका चिन्ह से है। कर्ता जिस के द्वारा काम करे उसे करण कारक कहते हैं। जैसे :—राम कुल्हाड़ी से वृक्ष काटता है। यहां कुल्हाड़ी करण कारक है।

सम्प्रदान कारक Dative case

इसका चिन्ह 'को के लिए' है। कर्ता जिस के लिए काम करे उसे सम्प्रदान कारक कहते हैं। जैसे :—लोग प्रातः काल सैर को जाते हैं। यहां सैर सम्प्रदान कारक है। इसी तरह पिता बच्चों के लिये किताबें लाया। यहां बच्चे सम्प्रदान कारक हैं।

अपादान का विशेष अर्थों में प्रयोग जिस से भय हो, लज्जा हो, कोई वस्तु उत्पन्न हो, और जिस से किसी को रोका जाये, जिस से तुलना की जाये, यहां से क्रिया आरम्भ हो, दूरी में तथा जिस से कुछ सीखा जाये उस में अपादान का प्रयोग होता है।

जैसे :—भय—बच्चा सांप से डरता है।
उत्पत्ति—गंगा हिमालय से निकलती है।
लज्जा—अजीत कौर उससे लजाती है।
रोक—चौकीदार अन्दर जाने से रोकता है।
तुलना—पवन कमलेश से छोटी है।

आरम्भ—कल से पढ़ाई शुरू होगी।
दूर में—अमृतसर से कश्मीर दूर है।
शिक्षा—सुषमा ने अध्यापिक से पुस्तक पढ़ी है।

सम्बन्ध कारक Possessive case

इसका चिन्ह 'का के की' है। जिस रूप से उसका सम्बन्ध दूसरे शब्दों के साथ हो, उसे सम्बन्ध कारक कहते हैं। जैसे :— मोहन की पुस्तक इत्यादि।

अधिकरण—इसका चिन्ह 'में, पर' है।

जिससे क्रिया का आधार सूचित हो, उसे अधिकरण कारक कहते हैं। जैसे :—हाथ पर पुस्तक है।

आधार दो प्रकार का होता है। भीतरी, बाहरी। भीतरी आधार का चिन्ह 'में' है। बाहरी आधार का चिन्ह पर है।

सम्बोधन Vocative

इसका चिन्ह हे, रे, अरे आदि है। जिस रूप से किसी को पुकारा जाये। उसे सम्बोधन कारक कहते हैं। हे भगवान मेरी रक्षा करो।

कर्म और सम्प्रदान में भेद हैं। इन दोनों कारकों का चिन्ह 'को' है। किन्तु अर्थ से ही इनका भेद ज्ञात हो सकता है। जैसे :—बालक ने कुत्ते को पीटा। यहां को कर्म का चिन्ह है क्योंकि इससे क्रिया के व्यापार का फल सूचित होता है। लोग प्रायः सैर को बाहर जाते हैं। यहां को सम्प्रदान का चिन्ह है, क्योंकि इससे क्रिया के लिये अर्थ प्रकट होता है।

कारण और अपादान में भेद

इन दोनों कारकों के चिन्ह से है। जैसे :—हम आंखों से देखते हैं। यहां से करण कारक का चिन्ह है, क्योंकि इस से साधन द्वारा अर्थ प्रकट होता है। वृक्ष से पत्ते गिरते हैं। यहां से अपादान का चिन्ह है, क्योंकि इस से पृथक् (अलग) का बोध होता है।

शब्द और पद में अन्तर

विभक्ति सहित शब्द कहलाते हैं और विभक्ति सहित पद कहलाते हैं।

पुंलिंग संज्ञायें

(अकारान्त बालक शब्द)

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	बालक, बालक ने	बालक, बालकों ने
कर्म	बालक को	बालकों को
करण	बालक से	बालकों से
सम्प्रदान	बालक को, के लिये	बालकों को, के लिये
अपादान	बालक से	बालकों से
सम्बन्ध	बालक के की का	बालकों का, के की
अधिकरण	बालक में पर	बालकों में पर
सम्बोधन	हे बालक	हे बालको

इस प्रकार नर, जन गीदढ़, छात्र आदि अकारान्त पुलिंग शब्दों के रूप होते हैं। सर्वनाम कारकों में यही अन्तर हैं। कि सर्वनाम का सम्बोधन नहीं होता है। परन्तु

शब्दों का सम्बोधन होता है।

राजा, माली कवि, साधु, डाकू इन के रूप भी बालक की तरह ही समझें।

सर्वनाम Pronoun

संज्ञा की पुनरुक्ति दूर करने के लिये जिस शब्द का हम प्रयोग करते हैं। वह सर्वनाम होता है, जैसे:—अजीत कौर अच्छी लड़की है। वह बड़ों का मान करती है। उसे सब प्यार करते हैं। इन वाक्यों में वह, उसे, ये सर्वनाम। ये दोनों अजीत कौर संज्ञा के स्थान में आये हैं। यदि यहां सर्वनामों का प्रयोग न होता। तो वाक्य इस प्रकार लिखे या बोले जाते। अजीत कौर अच्छी लड़की है, अजीत कौर बड़ों का मान करती है, अजीत कौर को सब प्यार करते हैं। इन वाक्यों में अजीत कौर को बार बार दुहराया गया है। यह पुनरुक्ति दोष है। ऐसा बोलने से वाक्य भद्दे लगते हैं। यह वाक्य सुनने में अच्छे नहीं लगते अतः संज्ञा स्थान में सर्वनाम का प्रयोग किया जाता है।

सर्वनाम का भेद

सर्वनाम पांच प्रकार का होता है।

१ पुरुष वाचक Personal Pronoun
२ निश्चय वाचक Demonstrative pronoun
३ अनिश्चय वाचक Indefinite pronoun
४ सम्बन्ध वाचक Relative pronoun
५ प्रश्न वाचक Interrogative pronoun

पुरुष वाचक सर्वनाम :—जो सर्वनाम बोलने वाले सुनने वाले और जिस के विषय में कुछ कहा जाये उस के स्थान में आते हैं उन्हें पुरुष वाचक सर्वनाम कहते हैं।
जैसे :—मैं, तू वह हिन्दी पुरुष तीन होते हैं।

उत्तम पुरुष First Person

मध्यम पुरुष Second Person

प्रथम पुरुष व अन्य पुरुष Third Person

उत्तम पुरुष का प्रयोग अभिमान तथा क्रोध पूर्वक बोलने में इस का प्रयोग होता है। जैसे :—क्रोध, हम उन को क्या समझते हैं। अभिमान, हम ने कब उन को भला बुरा कहा। मध्यम पुरुष का प्रयोग :—सुनने वाले के नाम बदले आने वाले सर्वनाम को मध्यम पुरुष कहते हैं। जैसे :— तू, तुम।

मध्यम पुरुष का प्रयोग :—ईश्वर, छोटे, बच्चे और घनिष्ट मित्र के लिये तू का प्रयोग होता है। हे ईश्वर! अब तू ही मेरी रक्षा करो। नीचता को प्रकट करने के लिये भी तू प्रयोग होता है। जैसे तू यहां से चला जा तू पापी है।

अन्य पुरुष जिस के विषय में कुछ कहा जाये या लिखा जाये उस के नाम के बदले प्रयुक्त होने वाले सर्वनाम अन्य पुरुष कहलाते हैं। जैसे :—वह निश्चय वाचक सर्वनाम (Demonstrative) पास और दूर की वस्तु की ओर संकेत करने वाले सर्वनामों को निश्चय वाचक सर्वनाम कहते हैं।

जैसे :—यह, वह, यह इधर ही आ निकला। वह उधर चला गया।

नोट :—यह समीपवर्ती वस्तु के लिये आता है वह दूरवर्ती वस्तु के लिये आता है यह समीपवर्ती वस्तु के लिये आता है।

अनिश्चय वाचक सर्वनाम केवल दो हैं कुछ, कोई। इनका प्रयोग आगे दी हुई रीति से होता है :—

कोई सजीव वस्तुओं के नाम के बदले आता है जैसे :— मुझे कोई दूध ला दो। कुछ निर्जीव वस्तुओं के नाम बदले आता है। जैसे :—उस के पास कुछ है।

सम्बन्ध वाचक सर्वनाम (Relative) जो सर्वनाम एक बात का दूसरी बात के साथ सम्बन्ध प्रकट करे उसे सम्बन्ध वाचक सर्वनाम कहते हैं जैसे जो करेगा सो भरेगा। इस वाक्य में जो और सो सम्बन्ध वाचक सर्वनाम हैं। प्रश्न वाचक सर्वनाम (Interrogative) :—जिस सर्वनाम से प्रश्न का बोध हो उसे प्रश्न वाचक सर्वनाम कहते हैं। जैसे कौन आ रहा है। उस के हाथ में क्या है। इन वाक्यों में कौन और क्या प्रश्न वाचक सर्वनाम है। कौन प्राणियों के लिये और क्या निर्जीव के लिये।

नोट :—सर्वनामों में रूपान्तर केवल वचन और कारक के कारण होता है, लिंग के कारण नहीं।

पहले लिख दिया है कि सर्वनाम का सम्बोधन नहीं होता।

पुरुष वाचक में उत्त पुरुष

कारक	एक वचन	बहु वचन
कर्ता	मैं मैंने	हम हमने
कर्म	मुझ को	हम को
कारण	मुझ से	हम से

सम्प्रदान	मुझ को मेरे लिये	हम को हमारे लिये
अपादान	मुझे से	हम से
सम्बन्ध	मेरा रे, री	हमारा-रे-री
अधिकरण	मुझ में-पर	हम में-पर

इसी तरह मध्यम पुरुष में भी समझें पुरुष वाचक वह अन्य पुरुष ।

	एक वचन	बहुवचन
१ कर्त्ता	वह उस ने	उन्होंने
२ कर्म	उसे, उस को	उन्हें उन को
३ करण	उस से	उन्हों से
४ सम्प्रदान	उस के लिये	उन के लिये
५ अपादान	उस से	उन से
६ सम्बन्ध	उस का के की	उन का-के का
७ अधिकरण	उस में पर	उन में पर

यह—इसने, कोई—किसी ने जो—जौन, जिसने, सो मैंने तौन—तिस, कौन—किसने, इन सभी के रूप ऊपर लिखे हुये रूपों के समान समझें ।

अभ्यास

सर्वनाम किसे कहते हैं उस के कितने भेद हैं ? लक्षण उदाहरण सहित लिखो । मैं, वह, कोई, कौन, शब्दों के सभी कारकों में रूप लिखो ।

छटा पाठ

विशेषण

जो शब्द संज्ञा की विशेषता प्रकट करे उसे विशेषण कहते हैं। जैसे:—अच्छा बालक। यहां अच्छा शब्द विशेषण है बालक संज्ञा की विशेषता प्रकट करता है। जो संज्ञा की विशेषता प्रकट करता है उसे विशेषण कहते हैं। ऊपर के उदाहरण में बालक विशेष्य है। अच्छा विशेषण बालक की विशेषता प्रकट करता है। विशेषण का प्रयोग दो प्रकार से होता है विशेष्य से पहले जैसे अच्छे बालक सब को प्यारे लगते हैं। यहां अच्छे विशेषण बालक विशेष्य से पहले आया है। इसे विशेष्य विशेषण कहते हैं। विशेष्य के बाद जैसे:—मोतिया का फूल सुन्दर होता है। यहां सुन्दर विशेषण है वह अपने विशेष्य फूल के बाद आया है। इसे विधेय विशेषण कहते हैं।

विशेषण के भेद

विशेषण के चार भेद हैं:—

(१) गुण वाचक (२) संखया वाचक।

(३) परिणाम वाचक। (४) सर्वनामिक या निर्देशक।

जो विशेषण अपने विशेष्य के गुण दोषों को प्रकट करें उसे गुण वाचक विशेषण कहते हैं। जैसे—सुन्दर पुष्प, बुरा आदमी यहां सुन्दर गुण को और बुरे दोष को प्रकट करता है। सुन्दर और बुरा दोनों गुण वाचक विशेषण हैं।

गुण अच्छा भला, इत्यादि।

दोष-बुरा, फीका, इत्यादि ।
रंग काला नीला इत्यादि ।
आकार गोल सुडौल इत्यादि ।
देश पंजाबी जर्मनी इत्यादि ।
दिशा पूर्वी पश्चिमी इत्यादि ।
समय दुबला पतला इत्यादि ।
समय नया पुराना इत्यादि ।

संख्या वाचक विशेषण जो विशेषण अपने विशेष्य की संख्या का बोध कराये उसे संख्या वाचक विशेषण कहते हैं । चार लड़के आठवीं श्रेणी तिगुणे फल यहां चार, आठवीं, तिगुणे फल, ऐसे विशेषण हैं जो अपने विशेष्यों की संख्या का बोध कराते हैं । ये संख्या वाचक विशेषण कहलाते हैं । संख्या वाचक विशेषण के दो भेद हैं । निश्चित संख्या वाचक जिनकी संख्या का निश्चय हो जैसे एक, दो, पहला, दूसरा, अनिश्चित संख्या वाचक विशेषण जिन की संख्या का निश्चय न हो । जैसे :—कई, अनेक, बहुत । अनिश्चित संख्या बाचक बहुत्व का बोध कराते हैं । निश्चित संख्या वाचक विशेषण पांच प्रकार हैं—गणना वाचक, पूर्ण अंक का बोध कराने वाले जैसे एक, दो, तीन,

क्रम वाचक—संख्या के क्रम का बोध कराने वाले जैसे—पहला, दूसरा, तीसरा, आवृत्ति वाचक संख्या की आवृत्ति (दुहराने) का बोध कराने वाले ।

जैसे :—दुगुणा, तिगुणा चौगुणा ।

समुदाय वाचक—संख्या के समूह का बोध कराने वाले

जैसे :—दोनों, तीनों, चारों।

विभाग बोधक विशेषण बोधित बहुत पदार्थों में से हर एक का बोध कराने वाले।

जैसे :—प्रत्येक, हर एक, हर तीसरा, गणना वाचक विशेषणों से ही क्रम वाचक, आवृत्ति वाचक, तथा समुदाय वाचक, विशेषण बनते हैं।

गणना वाचक	क्रम वाचक	आवृत्ति वाचक	समुदाय वाचक
एक	पहला	एक गुणा	अकेला
दो	दूसरा	दुगुणा	दोनों
तीन	तीसरा	तिगुणा	तीनों
चार	चौथा	चौगुणा	चारों
पांच	पांचवां	पांचगुण	पांचों

परिमाण वाचक विशेषण :—जो विशेषण अपने विशेषण के परिमाण का बोध कराता है। उसे परिमाण वाचक विशेषण कहते हैं।

जैसे—सब फल, सारा धन, थोड़ा घी, बहुत दूध इत्यादि।

सर्वनामिक या निर्देशिक विशेषण। जब सर्वनाम अपनी संख्याओं के साथ आते हैं तो वह विशेषण बन जाते हैं और वे सार्व-नामिक विशेषण कहलाते हैं, यह लड़की, कोई आदमी। इसे निर्देशिक विशेषण भी कहते हैं।

सर्वनाम और सर्व नामिक विशेषण में भेद।

जब सर्वनाम अपनी संज्ञा के पहले आते हैं, तो सार्वनामिक विशेषण कहलाते हैं और जब अकेले आते हैं तो सर्वनाम कहलाते हैं।

जैसे—वह आ रहा है (सर्वनाम) वह लड़का कहां है। सार्वनामिक विशेषण, नीचे मूल सर्वनामों से बचने वाले विशेषण दिये जाते हैं।

यह	इस	ऐसा	इतना
वह	उस	वैसा	उतना
जो	जिस	जैसा	जितना
सो	तिस	तैसा	तितना
कौन	किस	कैसा	कितना

विशेषणों के रूपान्तर

विशेषण के लिंग, वचन और कारक उस के विशेष्य के अनुसार होते हैं।

जैसे:—लिंग काला कोट काली धोती, वचन मोटा कपड़ा, मोटे कपड़े, (कारक) कारक के कारण रूपान्तर केवल आकारान्त विशेषणों में होता है और कारक चिन्ह केवल विशेष्य के साथ रहते हैं।

जैसे:—लाल कपड़े का नीले कपड़े का। लाल गाय का दूध। काली गाय का दूध। सार्वनामिक विशेषणों में रूपांतर वही होता है, जो सब नामों का होता है।

जैसे:—वह घोड़ा, वह घोड़े, उस घोड़े को, उन घोड़ों को।

विशेषणों की रचना

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
सुख	सुखी	शरीर	शारीरिक
दुख	दुखी	मन	मानसिक

संज्ञा	विशेषण	संज्ञा	विशेषण
पाप	पापी	आत्मा	आत्मिक
गुण	गुणी	नगर	नागरिक
साहस	साहसी	धर्म	धार्मिक
लोभ	लोभी	इच्छा	इच्छुक
पंजाब	पंजाबी	ठण्ड	ठण्डा
हिन्दोस्तान	हिन्दोस्तानी	भूख	भूखा
धन	धनी	शीत	शीतल
विरोध	विरोधी	विश्वास	विश्वस्त
स्वर्ग	स्वर्गीय	नमक	नमकीन
भारत	भारतीय	नोक	नुकीला
श्री	श्रीमान्	गुण	गुणवान्
बुद्धि	बुद्धिमान्	बल	बलवान्
लाख	लाखपति	चमक	चमकीला
करोड़	करोड़पति	शान्ति	शान्त

सातवां पाठ

विशेषण की तुलना। Comparison Degrees

दो या दो से अधिक वस्तुओं के गुणों के मिलान करने को तुलना कहते हैं।

जैसे:—मोहन अच्छा है। मोहन सोहन से अच्छा है। तुलना की तीन अवस्थायें हैं।

मूलावस्था (*Positive Degree*)

उत्तरावस्था (*Comparative*)
उत्तमावस्था (*Superlative*)

मूलावस्था जिस में विशेष्य के गुण की किसी से तुलना न की जाये उसे मूलावस्था कहते हैं। राम वीर बालक है। उत्तरावस्था इस में दो वस्तुओं के गुणों की तुलना की जाती है। और एक वस्तु को दूसरी वस्तु से अधिक या कम बताया जाता है।

जैसे:—रमेश सुरेश से बुद्धिमान है। उत्तमावस्था जब एक वस्तु के गुण दोष की कई वस्तुओं गुण दोषों से तुलना की जाये और उसे सब से अच्छा या बुरा बताया जाये।

जैसे:—विनोद श्रेणी में सब लड़कों से चतुर है। संस्कृत शब्दों की उत्तरावस्था प्रकट करने के लिये तर लगाया जाता और उत्तमावस्था प्रकट करने के लिये तम लगाया जाता है।

जैसे:—

मूलावस्था	उत्तरावस्था	उत्तमावस्था
प्रिय	प्रियतर	प्रियतम
योग्य	योग्यतर	योग्यतम
लघु	लघुतर	लघुतम
दूर	दूरतर	दूरतम
अधिक	अधिकतर	अधिकतम

तुलना के कुछ नियम—
तुलना केवल गुण वाचक विशेषणों से ही होती है।
तुलना में उन का रूप नहीं बदलता।
उत्तरावस्था में जिस वस्तु के साथ अधिकता या न्यूनता की

तुलना की जाती है उस के साथ आपदान चिन्ह से लगता है और जिस वस्तु की तुलना की जाती है वह विशेषण के साथ आता है।

जैसे—शशी से रमण छोटा है।

तांबे से लोहा अधिक उपयोगी है।

(ख) कभी २ से स्थान में अपेक्षा शब्द भी आता है।

जैसे—शेर की अपेक्षा गीदड़ अधिक चालाक होता है।

(ग) कभी २ अपेक्षा के स्थान में से शब्द भी आता है।

जैसे—गधे से बढ़ कर मूर्ख कौन होगा।

(३) उत्तमा-वस्था में विशेषण से पहले सब से शब्द लगता है और जिस वस्तु से तुलना की जाती है, उसे अधिकरण कारक में रखते हैं।

जैसे—नेताओं में महात्मा गान्धी सब से बड़े हैं।

अभ्यास

(१) विशेषण किसे कहते हैं। उस के कितने भेद हैं। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

(२) विशेषण और विशेष्य में क्या भेदा है?

(३) अनिश्चित संख्या वाचक और अनिश्चित परिमाण वाचक विशेषणों में क्या भेद है स्पष्ट करो।

तीसरा अध्याय

पहला पाठ

क्रिया

जिस शब्द से किसी काम का करना या होना पाया जाये उसे क्रिया कहते हैं।

जैसे—गाय दूध देती है। यहां देती है शब्द क्रिया इस से काम का करना पाया जाता है।

धातु (Verb root) क्रिया के मूलरूप को धातु कहते हैं। सब तरह की क्रियायें उन्हीं मूल शब्दों से बनती हैं।

जैसे—पढ़ता है, में पढ़ मूल शब्द है और यह धातु है। इसी तरह लिखता है, में लिख और देखता है में देख धातु है।

क्रिया का सामान्य रूप (Infinitive) धातु के आगे न जोड़ने से जो शब्द बनता है उसे क्रिया का सामान्यरूप कहते हैं। जैसे:—पढ़ से पढ़ना, लिख से लिखना इत्यादि।

क्रिया के भेद Kinds of Verb

क्रिया के मुख्य भेद दो हैं।

१. सकर्मक Transitive २. अकर्मक Intransitive

जिस क्रिया के व्यापार का फल कर्ता को छोड़ कर किसी दूसरी वस्तु पर पड़ता है उसे सकर्मक क्रिया कहते हैं।

जैसे—बच्चा दूध पीता है। यहां पीता है, क्रिया सकर्मक है। जिस वस्तु पर क्रिया का फल पड़ता है उसे कर्म कहते

है। ऊपर के वाक्य में दूध कर्म है, क्योंकि पीने का फल दूध पर पड़ता है। सकर्मक क्रिया का अर्थ है कर्म वाली क्रिया जिस क्रिया का कोई कर्म हो।

जिस क्रिया के व्यापार का फल केवल कर्ता पर ही पड़े, उसे अकर्मक क्रिया कहते हैं। जैसे :—बालक हंसता है। यहां हंसता है क्रिया है और बालक कर्ता है। हंसना क्रिया का फल केवल बालक कर्ता पर ही पड़ रहा है, किसी दूसरी वस्तु पर नहीं। अतः एव हंसता है, यह अकर्मक क्रिया है। अकर्मक क्रिया उसे कहते हैं जिस का कोई कर्म न हो।

निम्नलिखित अर्थों वाली क्रियायें अकर्मक होती हैं :—

होना, लज्जित होना, ठहरना, जागना पड़ना, क्षीण होना डरना, जीना, मरना सोना, चमकना आदि।

द्विकर्मक क्रियायें Verbs with two Objects

द्विकर्मक क्रिया उसे कहते हैं, जिस के दो कर्म हों।

जैसे :—विनोद भाई को पत्र लिखता है। इस वाक्य में लिखता है, क्रिया के दो कर्म हैं एक पत्र दूसरा भाई, इस लिये यह द्विकर्मक क्रिया है।

मुख्य कर्म—गौण कर्म

(क) मुख्य कर्म वह है जिस से किसी निजी वस्तु का बोध हो और क्रिया का अर्थ पूरा हो। ऊपर के वाक्या में पत्र मुख्य कर्म है।

(ख) गौण कर्म वह है जिस से किसी प्राणी का बोध हो। उस के साथ सदा को, का प्रयोग होता है। ऊपर के वाक्य में भाई गौण कर्म है।

द्विकर्मक क्रियाओं के कुछ और उदाहरण। शिक्षक ने छात्रों को एक कहानी सुनाई। इस वाक्य में कहानी मुख्य कर्म है। छात्र यह गौण कर्म है। द्विकर्मक क्रियाओं में एक मुख्य कर्म होता है और दूसरा गौण।

उभय विध क्रियायें

कुछ ऐसी भी क्रियायें जो अर्थ के अनुसार कभी सकर्मक होती है और कभी अकर्मक। जैसे :—जमाना रंग बदलता है (सकर्मक) फैशन बदलता रहता है। (अकर्मक) पैसा किसे नहीं ललचाता (सकर्मक) बून्द-बून्द से घड़ा भरे अकर्मक इत्यादि।

अपूर्ण क्रियायें तथा पूरक

कुछ अकर्मक क्रियायें ऐसी हैं जिन का अर्थ केवल कर्ता से पूरा नहीं होता, अपितु इन का अर्थ पूरा करने के लिये कर्ता के साथ कोई संज्ञा या विशेषण लगाना पड़ता है, उसे पूरक कहते हैं। जैसे :—राम विद्वान् है। क्या तुम मेरे साथी बनोगे? अन्त में निर्मल सच्ची ही निकली। सच्ची, बुद्धिमान, साथी ये शब्द पूरक हैं। कुछ ऐसी भी सकर्मक क्रियायें हैं जिन का अर्थ केवल कर्म से पूरा नहीं होता, अपितु इन का अर्थ पूरा करने के लिये कर्म के साथ कोई संज्ञा या विशेषण लगाना पड़ता है। उसे भी पूरक कहते हैं। जैसे :—सुशील उसे उल्लू समझता है! यहां उल्लू शब्द पूरक है।

सजातीय क्रियायें

कुछ क्रियायों से बनी भाव वाचक संज्ञायें अपनी ही

क्रियाओं के साथ कर्म बन कर आती हैं। उन्हें सजातीय क्रियायें कहते हैं। जैसे अंग्रेज़ों ने ऐसी चाल चली कि भारत के दो टुकड़े कर दिए। तुम तो अपना ही रोना रोते हो। यहां चाल, रोना कर्म हैं।

अकर्मक क्रियायों का सकर्मक बनाना।

अकर्मक क्रियायें भी सकर्मक बन जाती हैं। उनके नियम नीचे दिये जाते हैं। दो वर्णों वाले धातुओं के पहले स्वर को दीर्घ करने से अकर्मक क्रियायें सकर्मक बन जाती हैं।

धातु	अकर्मक क्रिया	सकर्मक किया
मर	मरना	मारना
कह	कहना	कहाना
गड़	गड़ना	गाड़ना
पिस	पिसना	पीसना
लूट	लुटना	लूटन
दौड़	दौड़ना	दौड़ाना

तीन वर्णों वाले धातुओं के दूसरे स्वर को धीर्घ करने से अकर्मक क्रियायें सकर्मक बनती हैं। जैसे :—

धातु	अकर्मक	सकर्मक
बिगड़	बिगड़ना	बिगाड़ना
निकल	निकलना	निकालना
उतर	उतरना	उतारना
उखड़	उखड़ना	उखाड़ना

धातु के इ को ए और उ को ओ करने से अकर्मक क्रियाएं सकर्मक बनती हैं। जैसे :—

धातु	अकर्मक	सकर्मक
फिर	फिरना	फेरना
छिद	छिदना	छेदना
विक	बिकना	बेचना
तुल	तुलना	तोलना
खुल	खुलना	खोलना
मुड़	मुड़ना	मोड़ना

(क) कुछ क्रियायें ऊपर के नियमों का अपवाद।

जैसे :—

अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया	अकर्मक क्रिया	सकर्मक क्रिया
सिला	सीना	रहना	रखना
कटना	फाड़ना	जुटना	जोड़ना
छुटना	छोड़ना	टूटना	मोड़ना

अभ्यास

१. क्रिया किसे कहते हैं। उसके कितने भेद हैं. उदाहरण देकर स्पष्ट करो। द्विकर्मक क्रिया से क्या तात्पर्य है। दो कर्म कौन कौन से हैं। उदाहरण देकर स्पष्ट करो।

पूरक किसे कहते हैं। दो सजातीय क्रियाओं के उदाहरण दो। गड़ना, फिरना, फटना, लिखना इन क्रियाओं को सकर्मक बना कर वाक्यों में प्रयोग करो।

संज्ञा, सर्वनाम, विशेषण, विकारी शब्दों की भांति क्रिया भी विकारी शब्द है। क्रिया में निम्नलिखित रीति से

विकार होता है।

१. काल। २. लिंग। ३. वचन। पुरुष, प्रयोग, वाच्य, प्रकार।

जिस से क्रिया के करने या होने का समय सूचित हो, व्याकरण में उसे काल कहते हैं।

क्रिया के तीन काल हैं :—

भूतकाल (Past tense) बीते हुए समय को भूतकाल कहते हैं। जैसे :—राम गया।

वर्तमान काल (Present tense) चलते समय को वर्तमान काल कहते हैं। जैसे :—राम जाता है।

भविष्यत काल (Future tense) आने वाले समय को भविष्यत काल कहते हैं। जैसे :—राम जाएगा।

क्रिया के लिंग, वचन, और पुरुष।

(क) संज्ञा की तरह क्रिया के भी दो लिंग होते हैं।
पुलिंग जैसे :—लड़का पढ़ता है।
स्त्रीलिंग जैसे :—लड़की पढ़ती है।

(ख) संज्ञा की क्रिया के भी दो वचन होते हैं :—
एक वचन जैसे :—लड़का खेलता है।
बहु वचन जैसे :—लड़के खेलते हैं।

पुरुष वाचक सर्वनाम की भांति क्रिया के भी तीन पुरुष होते हैं।

उत्तम पुरुष। जैसे :—मैं जाता हूँ।

मध्यम पुरुष । जैसे :—तू जाता है ।
अन्य पुरुष । जैसे :—वह जाता है ।

(पुलिंग)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पुरुष	मैं जाता हूँ	हम जाते हैं
मध्यम पुरुष	तू जाता है	तुम जाते हो
अन्य पुरुष	वह जाता है	वे जाते हैं ।

(स्त्री लिंग)

पुरुष	एक वचन	बहु वचन
उत्तम०	मैं जाती हूँ	हम जाती हैं ।
मध्यम०	तू जाती है	तुम जाती हो ।
अन्य०	वह जाती है	वे जातीं हैं ।

दूसरा पाठ

क्रिया के वाच्य Voice

वाच्य क्रिया का वह रूप है, जिस से जाना जाए कि क्रिया कर्ता के विषय में कुछ कहती है या कर्म के विषय में अथवा भाव क्रिया का अर्थ, के विषय में अर्थात् वाक्य में क्रिया के द्वारा की गई बात का मुख्य विषय कर्ता या कर्म है अथवा भाव । क्रिया के वाच्य तीन होते हैं । कर्तृ वाच्य Active । कर्म वाच्य Passive । भाव वाच्य Impersonal । कर्तृ वाच्य में कर्ता प्रधान होता है और क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष कर्ता के अनुसार होते हैं । जैसे :—बच्चे हंसते हैं । लड़कियां फुट बाल खेलती हैं ।

स्मरण—रहे कि कर्तृ वाच्य में कर्ता विभक्ति रहित होता है। सकर्मक तथा अकर्मक दोनों प्रकार की क्रियाओं से कर्तृ वाच्य बनता है। कर्म वाच्य में कर्म प्रधान होता है और क्रिया के लिंग, वचन तथा पुरुष कर्म के अनुसार होते हैं। जैसे :—हम से तमाशा देखा गया। लोगों से बात सुनी गई। स्मरण रहे कि कर्म वाच्य केवल सकर्मक क्रियाओं से बनता है। भाव वाच्य में भाव प्रधान होता है और क्रिया सदा प्रथम पुरुष, पुलिंग तथा अन्य पुरुष से आती है। जैसे :—रोगी से बैठा नहीं जाता। बूढ़े से उठा नहीं जाता। भाव वाच्य अकर्मक क्रियाओं से बनता है।

द्विकर्मक धातु। द्विकर्मक धातुओं में क्रिया का प्रधान कर्म ही मुख्य होता है। गौण कर्म में कोई परिवर्तन नहीं होता।

भाव वाच्य प्रायः निषेध के अर्थ में आता है। (द्विकर्मक धातु) द्विकर्मक धातुओं में क्रिया का प्रधान कर्म ही मुख्य होता है। गौण कर्म में कोई परिवर्तन नहीं होता।

जैसे—डाक्टर रोगी को दवा पिलाता है। (कर्तृ वाच्य) डाक्टर से रोगी को दवा पिलाई जाती है। (कर्म वाच्य) यहां रोगी को गौण कर्म है। उसमें कोई परिवर्तन नहीं है। (वाच्य परिवर्तन) (क) सकर्मक क्रिया कर्तृ वाच्य से कर्मवाच्य में बदलती है। रीति कर्म-वाच्य में कर्ता के साथ से चिन्ह लगाया जाता है और क्रिया के साथ जाना धातु आती है।

जैसे :—

कर्तृ-वाच्य	कर्म-वाच्य
थानेदार ने चोर को पकड़ा।	चोर थानेदार से पकड़ा गया।

मैं कहानी सुनता हूँ — कहानी मुझ से सुनी जाती है।
बालक कुत्तों को लड़ाते हैं — कुत्ते बालकों से लड़ाये जाते हैं।
अकर्मक क्रिया कर्तृ-वाच्य से भाव-वाच्य में बदलती है। और कर्ता के साथ से आता है। जैसे :—

कर्तृ-वाच्य	कर्म-वाच्य
आदमी उठता नहीं	आदमी से उठा नहीं जाता।
रोगी उठता नहीं	रोगी से उठा नहीं जाता।
लंगड़े दौड़ते नहीं	लंगड़ों से दौड़ा नहीं जाता।

क्रिया का प्रयोग

क्रिया का प्रयोग तीन प्रकार से होता है :—
(१) कर्तरि प्रयोग। (२) कर्मणि प्रयोग। (३) भावे प्रयोग।
कर्तरि प्रयोग यहां क्रिया के लिंग, वचन, तथा पुरुष-कर्ता के अनुसार हो, उसे कर्तरि प्रयोग कहते हैं। इसमें कर्ता निर्विभक्तिक रहता है।

जैसे—देव दौड़ा, सीता हंसी, मैं गाता हूं। कर्मणि प्रयोग, जब क्रिया लिंग, वचन, तथा पुरुष कर्म के अनुसार आयें तब उसे कर्मणि प्रयोग कहते हैं। इसमें कर्म विभक्ति रहित होता है और कर्ता-विभक्ति सहित जैसे :—मोहन ने पत्र लिखा। अजीत कौर ने पुस्तक पढ़ी। पवन से कहानी सुनी गई। भावे-प्रयोग में क्रिया सदा पुलिंग एक वचन और अन्य पुरुष में होती है। अजीत कौर ने चोर को पकड़ा। बढ़ई ने वृक्षों को काटा, रोगी से उठा नहीं जाता, बूढ़े से चला नहीं जाता। ऊपर के वाक्यों में क्रियाओं के प्रयोग कर्ता तथा कर्म इन दोनों के अनुसार नहीं है, अपितु क्रियायें स्वयं प्रधान हैं। अतः ये

भावे-प्रयोग है। क्रिया का प्रकार (Mood) :—क्रिया के कुछ ऐसे रूप हैं, जिनसे क्रिया के विधान करने की रीति का बोध होता है। इसे क्रिया का प्रकार या अर्थ कहते हैं।

जैसे—मोहन जाता है, निश्चित अर्थ, शायद अजीत और जाये, संभावना, शीला अब तू जा, आज्ञा। इससे ज्ञात होता है कि क्रिया के मुख्य प्रकार तीन हैं।

(१) निश्चयार्थ, (2) संभावनार्थ, (३) आज्ञार्थ।

क्रिया के जिस रूप से निश्चित विधान का बोध हो उसे निश्चयार्थ कहते हैं।

जैसे—अंजली सोती है। मैं पत्र लिखूंगा, क्रिया के जिस रूप से संभावना पाई जाये उसे संभावनार्थ कहते हैं। स्मरण रहे कि संभावना में अनुमान, इच्छा, कर्तव्य, सन्देह और संकेत के अर्थ का बोध होता है।

जैसे:—शायद कल बादल बरसे (अनुमान) तुम्हें पूर्ण सफलता मिले (इच्छा) कर्मचारी अपना काम करे (कर्तव्य) वह वहां होगा या नहीं, कौन कह सकता है। (सन्देह)। यदि तुम समय पर वहां पहुँचते तो गाड़ी पर सवार हो जाते। (संकेत) कदाचित् वह आज शाम को ही आ जाये (संभावना) क्रिया के जिस रूप से आज्ञा, प्रार्थना, उपदेश, प्रश्न तथा अनुमति का बोध हो उसे आज्ञार्थ कहते हैं।

जैसे—रमेश अब तू खेल (आज्ञा) श्रीमान् आइये बैठिये, (प्रार्थना) सदा सत्य बोलो। (उपदेश) तुम क्या चाहते हो, (प्रश्न) अब जाओ (अनुमति)।

तीसरा पाठ

भूत-काल के अवान्तर-भेद

भूत-काल के भेद छे हैं :—

सामान्य भूत (Indefinite Past)
आसन्न भूत (Present)
पूर्ण भूत (Past perfect)
अपूर्ण भूत (Imperfect Past)
सन्दिग्ध-भूत (Doubtful)
हेतु-हेतु मद्भूत (Conditional)

सामान्य भूत—क्रिया के जिस रूप से काम का करना या होना सामान्यता बीते हुए समय में पाया जाये, उसे सामान्य भूत कहते हैं। धातु के आगे पुलिंग में आ (या) अथवा ए और स्त्रीलिंग इ अथवा ई चिन्ह लगाते हैं।

जैसे:—वह उठा, राम गया। लड़के गये। अजीत कौर बोली। आसन्न भूत क्रिया के जिस रूप से काम का आसन्न में समाप्त होना पाया जाये उसे आसन्न भूत कहते हैं। यहां सामान्य भूत-काल की क्रियाओं के आगे हूं, है, हो, या हैं जोड़ा जाता है।

जैसे—मैंने रोटी खाई है। उसने पाठ पढ़ा है। मैं उठा हूँ। वे आये हैं। तुम गये हो, सामान्य-भूत और आसन्न-भूत में अन्तर। सामान्य भूत में निश्चित ज्ञान नहीं होता है अपितु आसन्न-भूत में निश्चित ज्ञान होता है। पूर्ण-भूत—क्रिया के जिस रूप से काम का बहुत देर पहले समाप्त होना पाया

जाये उसे पूर्ण भूत कहते हैं। बनावट सामान्य भूत-काल की क्रिया के रूपों के आगे यथा स्थान था, थे, थी चिन्ह लगाने से पूर्ण भूत के रूप बनते हैं।

जैसे– हमने तमाशा देखा था। उसने कहानी सुनी थी। वे गये थे। अपूर्ण-भूत क्रिया के जिस रूप से काम का भूत काल में होना तो पाया जाये पर उसके समाप्त होने का बोध न हो उसे अपूर्ण-भूत कहते हैं। गाड़ी चलती थी। गाड़ी चल रही थी। वे गीत गाते थे। अपूर्ण भूत क्रिया के दो रूप दो तरह से बनते हैं। धातु के आगे पुलिंग में ता, था, ते, थे और स्त्रीलिंग में ती, थी चिन्ह लगाने से। धातु के पुलिंग में रहा था, रहे थे, और स्त्रीलिंग में रही थी, चिन्ह लगाने से। सन्दिग्ध भूत क्रिया के जिस रूप से भूत-काल में काम के होने का सन्देह प्रकट हो उसे सन्दिग्ध भूत कहते हैं।

जैसे–बच्चे ने दूध पिया होगा। यहां पिया होगा, सन्दिग्ध भूत की क्रिया है। सामान्य भूत के रूपों के आगे हूंगा, होंगे, हूंगी आदि चिन्ह लगाकर सन्दिग्ध भूत के रूप बनाये जाते हैं। हेतु-हेतु मद्भूत क्रिया के जिस रूप से यह पाया जाये कि भूत-काल में हो सकने वाली क्रिया किसी कारण वश न हो सकी उसे हेतु-हेतु मद्-भूत कहते हैं यदि वह परिश्रम करता तो अवश्य पास होता। यदि कमलेश आती तो पाठ पढ़ती। बनावट धातु के आगे पुलिंग में ता ते लगाने से और स्त्रीलिंग में तो, ती लगाने से हेतु-हेतु मद्भूत के रूप बनते हैं।

चौथा पाठ

वर्तमान-काल के तीन भेद होते हैं—

सामान्य वर्तमान (Present indefinite)
अपूर्ण वर्तमान (Continuous)
सन्दिग्ध वर्तमान (Doubtful)

सामान्य वर्तमान क्रिया के जिस रूप से काम का होना सामान्यतया चलते समय में पाया जाये उसे सामान्य वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे—राम पढ़ता है। अजीत कौर गाती है।

अपूर्ण वर्तमान—क्रिया का वह रूप जिस से जाना जाये कि क्रिया अभी हो रही है, समाप्त नहीं हुई अपूर्ण वर्तमान कहलाता है।

जैसे—चक्की चल रही है। घोड़े दौड़ रहे हैं।

सन्दिग्ध वर्तमान—क्रिया के जिस रूप से चलते समय में काम के होने का सन्देह पाया जाये उसे सन्दिग्ध वर्तमान काल कहते हैं।

जैसे—राम पानी पीता होगा। भविष्यत् काल के भेद, भविष्यत काल के दो भेद हैं। सामान्य भविष्यत् (Indefinitefuture) सम्भाव्य भविष्यत् (Conditional) सामान्य भविष्यत क्रिया के जिस रूप से काम का करना या होना सामान्यतया आने वाले समय में पाया जाये उसे सामान्य भविष्यत् कहते हैं।

जैसे—हम दूध पियेंगे। बालक मैदान में दौड़ेंगे।

सम्भाव्य भविष्यत् क्रिया के जिस रूप से काम के करने या होने की सम्भावना आने वाले समय में पाई जाये उसे सम्भाव्य भविष्यत् कहते हैं।

जैसे—शायद महात्मा जी कल पधारें।

पांचवां पाठ

क्रियाओं की रूपवली सकर्मक जाना, धातु कर्तृवाच्य

(सामान्य-भूत)

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
उ० पु० मैं गया	हम गये	मैं गई	हम गईं
म० पु० तू गया	तुम गये	तू गई	तुम गईं
अ० पु० वह गया	वे गये	वह गई	वे गईं

आसन्न भूत

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
उ० पु० मैं गया हूँ	हम गये हैं	मैं गई हूं	हम गई हैं
म० पु० तू गया है	तुम गये हो	तू गई है	तुम गई हो
अ० पु० वह गया है	वे गये हैं	वह गई हैं	वे गई हैं

पूर्ण-भूत

पुलिंग		स्त्रीलिंग	
एक वचन	बहुवचन	एक वचन	बहुवचन
मैं गया था	हम गये थे	मैं गई थी	हम गई थीं
तू गया था	तुम गये थे	तू गई थी	तुम गई थीं
वह गया था	तुम गये थे	वह गई थी	वे गई थीं

अपूर्ण भूत

(पुलिंग)

	एक वचन	बहु वचन
उत्तम पु०	मैं जाता था	हम जाते थे
मध्यम पु०	तू जाता था	तुम जाते थे
अन्य पु०	वह जाता था	वे जाते थे

(स्त्री लिंग)

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाती थी	हम जाती थीं
म० पु०	तू जाती थी	तुम जाती थीं
अ० पु०	वह जाती थीं	वे जाती थीं

सन्दिग्ध भूत

(पुलिंग)

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं गया हूंगा	हम गये होंगे
म० पु०	तू गया होगा	तुम गए होंगे
अ० पु०	वह गया होगा	वे गए होंगे

(स्त्री लिंग)

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं गई हूंगी	हम गई होंगी
म० पु०	तू गई होगी	तुम गई होगी
अ० पु०	वह गई होगी	वे गई होंगी

हेतु हेतु मद् भूत

(पुलिंग)

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाता	हम जाते
म० पु०	तू जाता	हम जाते
अ० पु०	वह जाता	वे जाते

(स्त्री लिंग)

उ० पु०	मैं जाती	हम जातीं
म० पु०	तू जाती	तुम जातीं
अ० पु०	वह जाती	वे जातीं

सामान्य वर्तमान पुलिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाता हूँ	हम जाते हैं
म० पु०	तू जाता है	तुम जाते हो
अ० पु०	वह जाती है	वे जाते हैं

(स्त्री लिंग)

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाती हूँ	हम जाती हैं
म० पु०	तू जाती है	तुम जाती हो
अ० पु०	वह जाती है	वे जाती हैं

अपूर्ण वर्तमान पुलिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जा रहा हूँ	हम जा रहे हैं

म० पु०	तू जा रहा है	तुम जा रहे हो
अ० पु०	वह जा रहा है	वे जा रहे हैं

स्त्री लिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जा रही हूँ	हम जा रही हैं
म० पु०	तू जा रही है	तुम जा रही हो
अ० पु०	वह जा रही है	वे जा रही हैं

सन्दिग्ध वर्तमान पुलिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाता हूंगा	हम जाते होंगे
म० पु०	तू जाता होगा	हम जाते होंगे
अ० पु०	वह जाता होगा	वे जाते होंगे

स्त्री लिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाती हूँगी	हम जाती होंगी
म० पु०	तू जाती होगी	तुम जाती होगी
अ० पु०	वह जाती होगी	वे जाती होंगी

सामान्य भविष्यत् पुलिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाऊंगा	हम जायेंगे
म० पु०	तू जायेगा	तुम जाओगे
अ० पु०	वह जाएगा	वे जायेंगे

स्त्री लिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाऊंगी	हम जायेंगी
म० पु०	तू जायेगी	तुम जाओगी
अ० पु०	वह जाएगी	वे जायेंगी

सम्भाव्य भविष्यत् पुलिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाऊं	हम जायें
म० पु०	तू जाए	तुम जाओ
अ० पु०	वह जाए	वे जायें

स्त्री लिंग

	एक वचन	बहु वचन
उ० पु०	मैं जाऊं	हम जायें
म० पु०	तू जाये	तुम जाओ
अ० पु०	वह जाए	वे जाएं

सम्भाव्य भविष्यत् के रूप दोनों लिंगों में समान होते हैं।

सकर्मक लिखना कर्म वाच्य

पुलिंग (कर्म)	स्त्री लिंग (कर्म)
सामान्य भूत काल	
मुझ से पत्र लिखा गया।	मुझ से कहानी लिखी गई।
आसन्न भूत काल	
मुझ से पत्र लिखा गया है।	मुझ से कहानी लिखी गई है।
पूर्ण भूत काल	
मुझ से पत्र लिखा गया था।	मुझ से कहानी लिखी गई थी।

अपूर्ण भूत काल

मुझ से पत्र लिखा जाता था। मुझ से कहानी लिखी जाती थी।

सन्दिग्ध भूत काल

मुझ से पत्र लिखा गया होता। मुझ से कहानी लिखी गई होती।

हेतु हेतु मद् भूत काल

मुझ से पत्र लिखा जाता। मुझ से कहानी लिखी जाती।

सामान्य वर्तमान काल

मुझ से पत्र लिखा जाता है। मुझ से कहानी लिखी जाती है।

अपूर्ण वर्तमान काल

मुझ से पत्र लिखा जा रहा है। मुझ से कहानी लिखी जा रही है

सन्दिग्ध वर्तमान काल

मुझ से पत्र लिखा जाता होगा। मुझ से कहानी लिखी जाती होगी

सामान्य भविष्यत् काल

मुझ से पत्र लिखा जाएगा। मुझ से कहानी लिखी जायेगी।

सम्भाव्य भविष्यत् काल

मुझ से पत्र लिखा जाए। मुझ से कहानी लिखी जाये।

अकर्मक बैठना भाव वाच्य

भाव वाच्य में क्रियाओं के रूप तीन पुरुषों में समान होते हैं। इस में लिंग भेद नहीं होता। भाव वाच्य क्रिया सदा पुलिंग एक वचन तथा अन्य पुरुष में होती है। जैसे :—

उत्तम पुरुष—मुझ से बैठा नहीं जाता।

मध्यम पुरुष—तुझ से बैठा नहीं जाता।

अन्य पुरुष—उस से बैठा नहीं जाता।

भाव वाच्य में सभी [illegible] की तरह हैं।

अभ्यास

क्रिया में रूपान्तर किन-किन कारणों से होती है। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

क्रिया के कितने काल हैं प्रत्येक का नाम लिख कर उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

वाच्य से क्या तात्पर्य है हिन्दी में कितने वाच्य हैं। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

क्रिया के लिंग वचन और पुरुष कितने होते हैं। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।

क्रिया के कितने प्रकार हैं प्रत्येक के लक्षण उदाहरण लिखो।

भूत काल के भेद उदाहरण द्वारा करो।

छटा पाठ

संयुक्त क्रियायें :- जब दो या दो से अधिक क्रियाओं के संयोग से नूतन क्रिया बनती है तो उसे संयुक्त क्रिया कहते हैं। जैसे :—बादल गर्जने लगा। यहां गर्जने लगा क्रिया, गर्जन और लगना दो क्रियाओं के संयोग से बनी है। यह संयुक्त क्रिया है। स्मरण रहे कि संयुक्त क्रियाओं में पहली क्रिया मुख्य होती है और दूसरी सहायक। सहायक क्रिया मुख्य क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करती है। निम्नलिखित क्रियायें सहायक रूप में आती हैं।

सकना, चुकना, लगाना, उठाना, करना, होना, लेना, रहना, पाना, चाहना, आना, जाना।

संयुक्त क्रियायें भिन्न भिन्न अर्थों में प्रयुक्त होती हैं। आरम्भ बोधक क्रिया लगाना क्रिया के संयोग से बनती हैं। जैसे :—खिलाड़ी दौड़ने लगा। विद्यार्थी पढ़ने लगा शक्ति बोधक क्रिया सकना क्रिय के संयोग से बनती हैं। जैसे :—वह खेल सकता है। हम दौड़ सकते हैं।

समाप्ति बोधक क्रिया धातु के चुकना लगाने से बनती है।

जैसे—विद्यार्थी पढ़ चुके हैं। बच्चे दूध पी चुके हैं। विवशता बोधक क्रिया पड़ना या होना के संयोग से बनती है।

जैसे :—किसान को अधिक काम करना पड़ता है। मज़दूरों को आठ घण्टे काम करना होगा। पूर्णता बोधक क्रिया डालना के संयोग से बनती है।

जैसे—बिल्ली ने चूहे को मार डाला ? इच्छा बोधक क्रिया चाहना के योग से बनती है।

जैसे—अब लड़के जाना चाहते हैं। अवकाश बोधक क्रिया देना क्रिया के संयोग से बनती है।

जैसे—हमें अब जाने दो। नित्यता बोधक क्रिया करना जोड़ने से बनती है।

जैसे—कल से हम खेला करेंगे। सत्यता बोधक क्रियायें चलना, जाना और रहना लगाने से बनती हैं।

जैसे—बहादुरो आगे २ बढ़ते चलो। काम करते जाओ। ईश्वर से सदा डरते रहो। तत्काल बोधक क्रिया देना या डालना

क्रिया लगानें से संयुक्त क्रिया बनती है।

जैसे—मैं अभी बता देता हूँ। मैं अभी लिख डालता हूं।

सातवां पाठ

नाम धातु (Denominative verbs)

जब संज्ञा, सर्वनाम या विशेषण धातु के समान प्रयोग में आते हैं तो उन्हें नाम धातु कहते हैं और उनसे बनी क्रियायें नाम धातु क्रियायें कहलाती हैं।

जैसे—गरीबों को न दुखाओ यहां दुखाओ नाम धातु क्रिया हैं, क्योंकि यह दुःख संज्ञा से बनी है। नाम धातु बनाने के नियम। कुछ संज्ञायें सर्वनाम और विशेषण नां, लगाने से नाम धातु बनते हैं। जैसे :—

नाम	नाम धातु क्रिया	नाम	नाम धातु क्रिया
रंग	रंगना	बदल	बदलना
लाज	लजाना	फटकार	फटकारना
दुहरा	दुहराना	दाग	दागना
खर्च	खर्चना	गुज़र	गुज़रना
अपना	अपनाना	गांठ	गांठना

कुछ नामों के आगे आ, या, ला, प्रत्यय लगा कर धातु क्रियायें बनाते हैं। जैसे—

नाम	नाम धातु क्रिया	नाम	नाम धातु क्रिया
लाज	लजाना	साज	सजाना
शर्म	शर्माना	गर्म	गर्माना
बात	बतियाना	हाथ	हथियाना

ला प्रत्यय

झूठ   झूठ लाना

अनुकरण वाचक शब्द भी नाम धातु बन जाते हैं।

भिन भिन   भिन-भिनाना   छन छन   छन-छनाना,
बड़ बड़   बड़-बड़ाना,   हर हर   हर-हराना,

पूर्व कालिक क्रिया :—

पूर्व कालिक क्रिया उसे कहते हैं जो मुख्य क्रिया से पहले आई हो इसका चिन्ह 'कर' होता है, जो धातु के आगे लगाया जाता है। जैसे–बालक खाना खाकर स्कूल जाते हैं। यहां खाकर पूर्व कालिक क्रिया है।

आठवां पाठ

प्रेरणार्थक क्रियायें (Causal Verbs)

क्रिया के जिस रूप से यह जाना जाये कि उस का कर्ता स्वयं काम को करके किसी दूसरे को कार्य करने की प्रेरणा करता है। उसे प्रेरणार्थक क्रिया कहते हैं कर्ता दो प्रकार का होता है—(१) प्रेरिक कर्ता, (२) प्रेरित कर्ता। प्रेरक कर्ता जो कर्ता दूसरे पर काम करने की प्रेरणा करता है। प्रेरित कर्ता जिस पर कार्य करने की प्रेरणा की जाती है।

जैसे—बच्चा सोता है अकर्मक, मां बच्चे को सुलाती है (सकर्मक) मां बच्चे को नौकरानी द्वारा सुलवाती है। प्रेरणार्थक, मां प्रेरक कर्ता है और दासी प्रेरित कर्ता। पहले अकर्मक क्रियाओं से सकर्मक बनाते हैं और पुनः उनसे प्रेरणार्थक। जैसे :—

अकर्मक	सकर्मक	प्रेरणार्थक
उठना	उठाना	उठवाना
बदलना	बदलाना	बदलवाना
समझना	समझाना	समझवाना
रोना	रुलाना	रुलवाना
देना	दिलाना	दिलवाना

कुछ सकर्मक धातुओं के प्रेरणार्थक रूप द्विकर्मक बनते हैं। जैसे :—

सकर्मक	प० प्रे०	द्विकर्मक प्रे०
पढ़ना	पढ़ाना	पढ़वाना
खाना	खिलाना	खिलवाना
नहाना	नहलाना	नहलवाना
पीना	पिलाना	पिलवाना

मूल धातु के अन्त में आ जोड़ने से पहली प्रेरणा बनती है और वा जोड़ देने से दूसरी प्रेरणा। जैसे:—

मूल धातु	प० प्रेरणा	द्वि० प्रेरणा
चल	चलाना	चलवाना
गिर	गिराना	गिरवाना
जग	जगाना	जगवाना
सो	सुलाना	सुलवाना

एक वर्ण वाली धातुओं के आगे ला और लवा जुड़ता है आदि स्वर ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

खा	खिलाना	खिलवाना
पी	पिलाना	पिलवाना
सो	सुलाना	सुलवाना

दो वर्णों वाली धातुओं का आदि दीर्घ स्वर ए औ के विना ह्रस्व हो जाता है। जैसे—

जीत	जीताना	जितवाना
डूब	डुबाना	डुबवाना
लेट	लिटाना	लिटवाना
बोल	बुलाना	बुलवाना

तीन वर्णों वाली धातुओं के दूसरे वर्ण को बोलने में नहीं आता।

बदल	बदलाना	बदलवाना
चमक	चमकाना	चमकवाना

कुछ धातुओं के प्रेरणार्थक रूप विकल्प से बनते हैं।

कह कहाना या	कहलाना	कहवाना या	कहलवाना
बैठ बिठाना या	बिठलाना	बिठवाना या	बिठलवा न

इ अन्त धातुओं के ए अन्त और ऊ अन्त धातु को ओ अन्त कहते हैं।

दिखना	देखना	मुड़ना	मोड़ना
फिरा	फेरना	घुलता	घोलना
जुड़ना	जोड़ना	छूटना	छोड़ना
फटना	फाड़ना	टूटना	तोड़ना
बिकना	वेचना	रहना	रखना

अभ्यास

(१) निम्नलिखित परिभाषाओं को उदाहरण देकर स्पष्ट करो। नाम धातु क्रिया, प्रेरणार्थक क्रिया, पूर्व-कालिक क्रिया, संयुक्त क्रिया।

(२) प्रेरणार्थक बनाओ :—कहना, सुनना, फटना, छूटना, खाना, पीना, गाना, देखना।

(३) नामधातु क्रियायें बनाओ :—दुःख, रंग, छन छन, फटकार, शर्म।

चौथा अध्याय

पहला पाठ

क्रिया विशेषण अव्यय (Adverb)

जो शब्द क्रिया में विशेषता प्रकट करता है, उसे क्रिया विशेषण कहते हैं। वह धीरे-धीरे चलता है जहां धीरे शब्द क्रिया विशेषण है क्योंकि वह क्रिया के अर्थ में विशेषता प्रकट करता है। स्मरण रहे क्रिया विशेषणों के भी विशेषण होते हैं।

जैसे वह बहुत धीरे चलता है। इस वाक्य में बहुत शब्द क्रिया विशेषण हैं और धीरे का भी विशेषण है। क्रिया विशेषण अविकारी होती हैं अर्थात् यह भी बतलाते नहीं इन को अव्यय भी कहते हैं। क्रिया विशेषण के चार भेद हैं।

काल वाचक (adverb of time)

स्थान वाचक (adverb of place)

परिमाण वाचक (Adverb of Quantity)
रीति वाचक (Adverb of Manner)

काल वाचक जिन क्रिया विशेषणों से क्रियाओं का काल सूचित हो अर्थात् जिस से पता चले कि क्रिया कब हुई।

जैसे रमेश कल गया था। इस वाक्य में कल काल वाचक क्रिया विशेषण है। कुछ काल वाचक क्रिया विशेषण। आज, कल, परसों, अत्र, कब, जब, अभी, जभी, तभी, सभी, सर्वदा, तुरंत, नित्य, प्रतिदिन, निरन्तर, लगातार, अब, तक, घड़ी पहले, पीछे, दिन भर, प्रातः, स्थान वाचक—जिन क्रिया विशेषणों से क्रियाओं के स्थान या दिशा का बोध हो।

जैसे—दिनेश यहां बैठा है। इस वाक्य में यहां स्थान वाचक क्रिया विशेषण है। कुछ स्थान वाचक क्रिया विशेषण यहां, वहां, कहां, जहां, इधर, उधर, किधर, जिधर, जहां, तहां, ऊपर, नीचे, सामने, दूर, निकट, पास, बाहर, भीतर, सर्वत्र, आर-पार, आगे, पीछे, इस ओर, परिमाण वाचक जिन क्रिया विशेषणों से क्रियाओं के परिमाण (माप) का बोध हो।

जैसे—सफलता चहते हो तो कुछ करो। इस वाक्य में कुछ परिमाण वाचक क्रिया विशेषण है। इस से बोध होता है कि क्रिया कितनी हुई! कुछ परिमाण वाचक क्रिया विशेषण। वहुत, कुछ, अत्यन्त, बिलकुल, खूब, लगभग, इतना, उतना, पर्याप्त, जरा, थोड़ा, रीतिवाचक जिन क्रिया विशेषणों से क्रिया के करने या होने की रीति का बोध हो उन्हें रीति वाचक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे—सिपाही धड़ाधड़ बढ़ते गये इसमें धड़ाधड़ रीति-

वाचक क्रिया विशेषण है इससे प्रतीत होता है कि क्रिया कैसे हुई। कुछ रीति वाचक धीरे, धीरे, शीघ्र, एका एक अचानक, ज्यों, त्यों, आप ही, आप, जैसे, कैसे, ऐसे, वैसे इस प्रकार निषेध में वह न बोलेगा, हम चोरी नहीं करते। न साधारण निषेध में नहीं निश्चित निषेध में और मत मनाही के अर्थ में, निश्चय में—बादल अवश्य बरसेगा आप ठीक कहते हैं। अनिश्चय में महात्मा जी शायद आ जायें। वे कदाचित आ जायें। वे कदाचित चले जायें। हेतु में वह किस लिये बोल रहा है। स्वीकृति में हां आप आ जायें। क्रिया विशेषणों की बनावट। बनावट के विचार से क्रिया विशेषण के दो भेद हैं मूल, यौगिक, मूल क्रिया विशेषण वे हैं जो बिना किसी दूसरे शब्द से बनते हैं।

जैसे—झट, धीरे, सामने, पास, यौगिक जो क्रिया विशेषण किसी दूसरे शब्द के योग से बनते हैं। उसे यौगिक क्रिया विशेषण कहते हैं।

जैसे—संज्ञा से दिन भर, रात भर, बलपूर्वक, सवेरे, सर्वनाम से—यह यहां, ऐसे, ऊपर, इधर, इतना, यहां, जिधर, जितना, विशेषण से—धीरे, पहले, दूसरे।

जैसे—शब्दों की द्विरुक्ति से, साफ साफ, हाथों हाथ, भिन्न-भिन्न शब्दों के मेल से आज कल सांझ सवेरे, हर घड़ी।

अभ्यास

क्रिया विशेषण किसे कहते हैं। उसके कितने भेद हैं। उदाहरण सहित लिखो। निम्नलिखित क्रिया विशेषण किस प्रकार के हैं?

एका एक, अचानक, भीतर, अब, ऊपर, सामने, निम्नलिखित क्रिया विशेषण किन २ शब्दों से बनते हैं उदाहरण देकर कष्ट करो।

दूसरा पाठ

सम्बन्ध बोधक, अव्यय (Preposition)

जो शब्द संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध वाक्य के दूसरे शब्दों से प्रकट करते हैं उन्हें सम्बन्ध बोधक कहते हैं।

जैसे–हवा के बिना प्राणी जीवित रह नहीं सकते। इस वाक्य में विना सम्बन्ध बोधक अव्यय है। यह हवा संज्ञा का सम्बन्ध प्राणी संज्ञा से मिलाता है। सम्बन्ध बोधक अव्ययों का प्रयोग। सम्बन्ध बोधक अव्ययों का प्रयोग तीन प्रकार से होता है। विभक्ति सहित:—कई सम्बन्ध बोधक अव्यय विभक्ति सहित संज्ञा के आगे आते हैं।

जैसे—स्त्री के समान संसार में कोई बन्धु नहीं। विद्या से रहित पुरुष का मनशून्य है। नीचे कुछ ऐसे सम्बन्ध बोधक अव्यय दिये जाते हैं :—

आगे	मकान के आगे	सामने	मेरे सामने
पीछे	स्कूल के पीछे	ऊपर	वृक्ष के ऊपर
नीचे	मकान के नीचे	ओर	बन की ओर
भीतर	भवन से भीतर	मध्य	जम्मू के मध्य
तुल्य	अजीत कौर के तुल्य,	पहले	वर्ष के पहले
		तले	छाया के तले
		बाहर	स्कूल से बाहर

पास	नदी के पास
सदृश	तुम्हारे सदृश

विभक्ति रहित कुछ सम्बन्ध बोधक अव्यय विभक्ति रहित संज्ञा के आगे आते हैं।

जैसे—कृष्ण सहित। रानी सहित। घर तक, इत्यादि।

उभय बिध—सम्बन्ध बोधक ऐसे भी हैं, जिन के पहले विभक्ति सहित और विभक्ति दोनों ही तरह की संज्ञायें आती हैं।

जैसे—पति बिना या पति के बिना, चपरासी द्वारा या चपरासी के द्वारा आज्ञा के अनुसार या आज्ञानुसार। कहीं २ पर सम्बन्ध बोधक अव्ययों के आगे भी विभक्ति चिन्ह आता है।

जैसे—सामने की दुकान में कौन रहता है? घर के आस-पास गन्दगी मत फैलाओ।

सम्बन्ध बोधक की रचना

कुछ सम्बन्ध बोधक भी संज्ञा, विशेषण, आदि शब्दों से बनते हैं।

जैसे—संज्ञा से :—बदले पलते, वास्ते, विशेषण से—तुल्य समान, सरीखा, क्रिया से—करके, लिये, मारे, क्रिया विशेषण से—यहां, पीछे, आगे। प्रश्न सम्बन्ध बोधक किसे कहते हैं उदाहरण दे कर स्पष्ट करो। सम्बन्ध बोधक का प्रयोग कितने प्रकार से होता है? पांच ऐसे सम्बन्ध बोधक अव्यय लिखो जिन के साथ विभक्ति चिन्ह लगा हो।

समुच्चय बोधक, (Conjunction) (योजक) जो अव्यय दो शब्दों वाक्य खण्डों या वाक्यों को मिलाते हैं उन्हें समुच्चय बोधक कहते हैं।

जैसे—गाय और घोड़ा दोनों लाभदायक पशु हैं। प्रातःकाल भ्रमण करना या थोड़ा बहुत पढ़ना मेरे दोनों काम हैं। वह बीमार हैं इस लिये उसे अवकाश दिया जाये। पहले वाक्य में और गाय—घोड़ा इन दोनों वाक्यों को जोड़ता हैं। प्रातः भ्रमण करना थोड़ा बहुत पढ़ना ये वाक्य खण्ड है। इन्हें या मिलाता है।

सम्बन्ध बोधक और समुच्चय बोधक में यह भेद है कि सम्बन्ध बोधक संज्ञा या सर्वनाम का सम्बन्ध क्रिया से मिलाते हैं और समुच्चय बोधक दो शब्दों दो वाक्यों या दो वाक्य खण्डों को केवल जोड़ते हैं या अलग करते हैं।

जैसे—राजा रानी समेत आया—सम्बन्ध बोधक, राजा और रानी आये समुच्चय बोधक। समुच्चय बोधक के भेद—समुच्चय बोधकों का प्रयोग कई तरह से होता है। संयोजक एक शब्द या एक वाक्य को दूसरे शब्द या वाक्य से जोड़ते हैं।

जैसे—फल तथा फूल। मोहन आया और सोहन गया संयोजक और, एवं, तथा, विभाजक एक शब्द या वाक्य को दूसरे शब्द या वाक्य से अलग करते हैं।

जैसे—तुम काम करो या यहां से चले जाओ। विभाजक, या, वा, अथवा, कि, नहीं, तो, चाहे, विरोध दर्शक—से दो बातों में विरोध प्रकट होता है। मोहन बुद्धिमान है पर वह काम नहीं करता। विरोध दर्शक पर, परन्तु, बल्कि, प्रत्युत,

परिणाम दर्शक—जिस से प्रकट हो दूसरा वाक्य पहले वाक्य का परिणाम है। जैसे—वह बीमार है इस लिये उसे अवकाश दिया जाये। कारण वाचक जो पहले वाक्य का कारण दूसरे वाक्य से प्रकट करें। जैसे—हम स्कूल नहीं जायेंगे क्योंकि आज वहां अवकाश है। कारण वाचक क्योंकि कारण, इस लिये संकेत वाचक जब पहले वाक्य में कोई संकेत प्रकट हो और अगले वाक्य में उस का फल प्रकट हो। जैसे—बड़ों का कहना मानोगे तो अवश्य सफल हो जाओगे। संकेत वाचक, यदि, जो, तब यद्यपि, तथापि, स्वरूप वाचक पहले शब्द के अर्थ को दूसरा शब्द प्रकट करता है। जैसे—गदाधारी अर्थात भीम ने शत्रुओं का गर्व चूर किया।

अभ्यास

समुच्चय बोधक किसे कहते हैं उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो। समुच्चय बोधक प्रयोग कितने प्रकार से होता है।

विस्मयादि बोधक (द्योतक) (Interjection)

जिस शब्द से हमारे मन के विस्मय, हर्ष शोक आदि भाव शीघ्रता से पैदा होते हैं उन को विस्मयादि बोधक कहते हैं या द्योतक कहते हैं। जैसे—अहा यह गाना कैसा अच्छा है। ओहो मकान में आग कैसे लगी! हाय उस के नेत्रों का सहारा चल बसा, पहले वाक्य में अहा! से हर्ष प्रतीत होता है। दूसरे वाक्य में

ओहो से आश्चर्य और तीसरे वाक्य में हाय ! शोक ! विस्मया आदि बोधक भाव अनेक हैं—विस्मय है ! ऐं ! ओ हो ! हर्ष वाह वा ! अहा ! ओ हो ! शोक हा ! हाय ! ऊह ! आह ! क्रोध—हट ! क्यों ! अबे ! स्वीकृति—हां—ठीक ! जी हां ! अच्छा ! सम्बोधन हे ! रे ! अरे ! अजी ओ ! तिरस्कार-छि ! धत ! धिक ! कभी कभी संज्ञा विशेषण क्रिया, क्रिया विशेषण, आदि भी विस्मयादि बोधक की तरह प्रयोग में आते हैं।

जैसे—संज्ञा-राम राम ! ऐसा नहीं हो सकता। विशेषण अच्छा तुम नहीं बताते। क्रिया—हट ! मूर्ख दूर हो ! क्रिया विशेषण—क्यों। ऐसा काम कौन करेगा ! वाक्यांशधन्य महाराज।

अभ्यास

विस्मयादि बोधक किसे कहते हैं उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो निम्नलिखित विस्मादि बोधकों का प्रयोग करके दिखाओ। हाय ! अह ! वाह वा ! चुप ! अरे ! क्यों !

तीसरा पाठ

पद परिचय

वाक्य में आये शब्दों का परिचय, भेद आदि का बताना पद परिचय कहलाता है। प्रत्येक शब्द के पद परिचय में निम्न लिखित बातें बताई जातीं हैं—संज्ञा का पद परिचय।

संज्ञा—प्रकार, पुलिंग ,वचन, तथा कारक जैसे—सीता ने लोगों को कहा कि सचाई की सदा जीत होती है। सीता ने व्यक्ति वाचक संज्ञा, स्त्री लिंग, एक वचन, कर्ता कारक, कहा क्रिया का कर्ता है। लोगों को जाति वाचक संज्ञा, पुलिंग, बहु वचन, कर्म कारक कहा क्रिया का कर्म है। सचाई की—भाव वाचक संज्ञा, स्त्री लिंग, एक वचन, सम्बन्ध कारक।

सर्वनाम—भेद लिंग, वचन, तथा कारक। जैसे—उसे कौन बुलाता है। जो करेगा सो भरेगा। उसे पुरुष वाचक सर्वनाम, अन्य पुरुष, पुलिंग, एक वचन कर्म वाचक के स्थान पर आया है। जो सो सम्बन्ध वाचक, पुलिंग, एक वचन, कर्ता कारक पुरुष के स्थान पर आया है। कौन प्रश्न वाचक, पुलिंग, एक वचन, कर्ता कारक, पुरुष के स्थान पर आया है।

विशेषण का पद परिचय

विशेषण का पद परिचय संज्ञा की तरह होता है। इस में केवल विशेषण अधिक बताया जाता है। वाक्य—भले पुरुषों का संग सुखदायक होता है। भले गुण वाचक विशेषण पुलिंग, बहु वचन, सम्बन्ध कारक इस का विशेष्य पुरुष है। क्रिया का पद परिचय—क्रिया के परिचय में निम्न बातें बतानी चाहिए क्रिया का भेद वाक्य लिंग, वचन काल, पुरुष, कर्ता तथा कर्म। वाक्य जो बालक परिश्रम करते हैं, अवश्य सफल होते हैं। करते हैं—सकर्मक क्रिया, कर्तृ वाच्य पुलिंग, बहु वचन, सामान्य वर्तमान काल, अन्य पुरुष निश्चयार्थ इस का कर्ता बालक है। अव्ययों का पद परिचय क्रिया विशेषण, के पद

परिचय में क्रिया विशेषण का भेद तथा वह क्रिया जिस की वह विशेषता प्रकट करता है बताना चाहिए। जैसे—हाथी धीरे-धीरे चलता है। धीरे रीति वाचक क्रिया विशेषण चलता है क्रिया की विशेषता प्रकट करता है।

पांचवां अध्याय

उपसर्ग

जो शब्दांश संज्ञादि शब्दों से पहले जुड़ कर उन के अर्थों को बदल देते हैं उन्हें उपसर्ग कहते हैं। जैसे—यश—अपयश, यहां अप उपसर्ग है, जो यश के अर्थ को बदल देता है।

शब्द	उपसर्ग	सोपसर्ग	शब्द
आदर (मान)	निर	निरादर	अपमान
पुत्र (बेटा)	सु	सुपुत्र	अच्छा बेटा
”	कु	कुपुत्र	बुरा पुत्र
जय (जीत)	परा	पराजय	हार
देश	वि	विदेश	दूसरा देश
स्थान	प्र	प्रस्थान	कूच करना
गुण	अव	अवगुण	बुराई
डर	नि	निडर	निडर
नाम	बद	बदनाम	

हार = माला या पराजय — संहार = जान से मार देना
आहार = खाना — उपहार = भेंट
विहार = सैर — परिहार = त्याग

हिन्दी में तीन प्रकार के उपसर्गों का उपयोग होता है। संस्कृत उपसर्ग, हिन्दी उपसर्ग, विदेशी उपसर्ग।

संस्कृत उपसर्ग प्र=अतिशय, गति, व्यवहार। जैसे:—प्रबल, प्रस्थान, प्रयोग, परा=पीछे, उल्टा, जैसे:—पराजय, पराभव, अप=बुरा, विरुद्ध। जैसे:—अपमान, अपकर्ष, अपशब्द। वि=विशेष, भिन्न, जैसे:—विज्ञान, विख्यात, विदेश, सम=अच्छा, साथ, पूर्ण, जैसे—संतोष, संगम, सम्मान, सु=अच्छा, सहज, अधिक, जैसे—सुपुत्र, सुकर्म, सुगम, सुशिक्षित, प्रति=सामने, हर एक, विरुद्ध, जैसे—प्रत्यक्ष, प्रत्येक, प्रतिकूल, अति=अतिरिक्त, अति दीन, उप=उपवन, उपमान, उपकूल, नि=निधन, निरोध निपात, अनु=अनुरूप अनुज, अनुचर, अव=अवगति, अवगुण, अवतार, अभि=अभ्यागत, अभिमुख, अधि=अधिपति, अध्यक्ष, अधिकार, आ=आजीवन, आगमन, आकर्षण, दुस्=दुस्तार, दुष्कर्ष, दुर=दुर्गम दुराचार निस्=निष्कर, निश्चल, निश्चय, निर्=निर्बल, निर्गुण, निरपराध, उत=उत्कण्ठा, उत्कर्ष।

संस्कृत के कुछ विशेषण तथा अव्यय भी उपसर्गों की तरह प्रयुक्त होते हैं। जैसे—अ=अभाव, अधर्म, अनीति, अज्ञान, अन=निषेध, जैसे अनलान, अनभिज्ञ, अनादर। स=सहित, सचष्ट, साकार, सजीव, सजग कु=बुरा, जैसे कुकर्म, कुपथ, कुपुत्र, सह=साथ, जैसे—सहपाठी, सहचारी, सहज, सहोदर, पुरा=पहले, जैसे पुरातन, पुरातत्व, पुनरावृत्ति, सत्=अच्छा, जैसे—सत्कर्म, सत्पात्र, सज्जन अन्तर। अन्तर=भीतर, जैसे—अन्तर्नाद, अन्तरात्मा, अन्तः करण, अन्तःपुर। अधस=नीचे, जैसे—अधोगति, अधःपतन। पुनः=फिर जैसे—

पुनर्विवाह, पुनरुक्ति, पुनर्जन्म। वहिर=वाहिर, जैसे—वहिर्मुख, वहिर्गमन, वहिष्कार।

हिन्दी उपसर्ग अ = अभाव, जैसे—अज्ञान, अलग, अचेत, अध=आधा, अधपका, अधकचा। औ=हीन, औगुण, औघट, औतार। भर=पूर्णता, जैसे—भरपूर, भरपेट, भरसक। नि=रहित, जैसे—निर्बल, निडर, निकम्मा। कु=बुरा, जैसे—कुपूत, कुमार्ग, कुचाली। सु=अच्छा, जैसे-सुपूत, सुजान, सुडौल।

विदेशी भाषाओं के उपसर्ग—खुश=अच्छा, खुश मिज़ाज, खुशबू, खुशदिल, खुश क़िस्मत। ब=विना, जैसे=वेचारा, वेतरह, वेईमान, बा=साथ, जैसे—बातमीज़, बाकायदा। बद=बुरा, बदनाम, बदमाश, बदबू। न=अभाव, जैसे—नापसन्द, नालायक, नाचीज़, नाराज़। गैर=भिन्न, गैरहाजिर, गैर मुल्क। कम=थोड़ा, कमजोर, कम बख्त, कम कीमत। सर=मुख्य, जैसे—सरदार, सरताज, सरकार, सरहद। हर=प्रत्येक, हर रोज, हर माह, हर साल।

———

दूसरा पाठ

प्रत्यय (Suffix)

जो शब्दांश किसी शब्द के पीछे लग कर उसके अर्थ को परिवर्तित कर देते हैं उन्हें प्रत्यय कहते हैं। जैसे—मिलना से मिलन सार, यहां सार प्रत्यय है। जिसने मिलान धातु के अर्थ को बदल दिया है। हिन्दी में प्रत्यय दो प्रकार के होते हैं—(क) कृत प्रत्यय, (ख) तद्धित प्रत्यय। (क) कृत प्रत्यय

(VERBAL SUFFIX) धातु के अन्त में जिन शब्दांशों के आने से अन्य शब्द बनते हैं उन्हें कृत प्रत्यय कहते हैं। कृत प्रत्यय पांच प्रकार के होते हैं :—

१. कर्तृवाचक। २. कर्मवाचक। ३ करण वाचक। ४. भाव वाचक। ५. क्रिया वाचक। कर्तृ वाचक प्रत्यय वो हैं जिनसे धातुओं के अन्त में जुड़ने पर क्रिया करने वाले का बोध हो। जैसे—तैरना से तैराक और खेलना से खिलाड़ी। यहां तैरना से आक, और खेलना से आड़ी प्रत्यय लगा कर कर्तृ वाचक कृदन्त शब्द बनाये गये हैं। नीचे कुछ कर्तृ-वाचक प्रत्यय और उनसे बने कृदन्त शब्द दिये जाते हैं :—

क्रिया का सामान्य रूप	प्रत्यय	कृदन्त शब्द
बुझना	अक्कड़	बुझक्कड़
टिकना	आऊ	टिकाऊ
लड़ना	आकू	लड़ाकू
झगड़ा	आलू	झगड़ालू
अड़ना	इयल	अड़ियल
लूटना	एरा	लुटेरा
चाटना	ओरा	चटोरा
भागना	ओड़ा	भगोड़ा
पालना	अक	पालक

कर्म वाचक प्रत्यय—जिनसे धातु के अन्त में लगने पर कर्म का बोध होता है। जसे—बिछौना, ओढ़नी, सूंघनी।

करण वाचक प्रत्यय—जिनसे धातु के अन्त में लगने पर क्रिया के साधन का बोध करायें। जैसे—झाड़न, बेलन, बुहारी।

फांसी, कतरनी।

भाव वाचक प्रत्यय—वे हैं जो धातु के अन्त में लगने पर भाव अर्थात् धातु के अर्थ को प्रकट करते हैं। जैसे—लिखना से लिखाई।

क्रिया का सामान्य रूप	प्रत्यय	भाव वाचक शब्द
घेरना	आ	घेरा
भूलना	अ	भूल
लड़ना	आई	लड़ाई
उड़ना	ड़ान	उड़ान
मिलना	आप	मिलाप
बना	आवट	बनावट
बुलाना	आवा	बुलावा
पीना	आस	प्यास
घबराना	आहट	घबराहट
हंसना	ई	हंसी
समझाना	औता	समझौता
बचना	त	बचत
बढ़ना	तो	बढ़ती
चलना	न	चलन

क्रिया वाचक प्रत्यय वे हैं—जो धातु के अन्त में लगने पर (भूत) या वर्तमान कालिक कृदन्त बनाते हैं। प्रत्यय=ता, ती, हुआ, हुई।

जैसे—दौड़ता घोड़ा, दौड़ता हुआ घोड़ा, चलती गाड़ी, चलती हुई गाड़ी, ये वर्तमान कालिक कृदन्त हैं। गया वक्त,

सोया हुआ बच्चा, लूटा हुआ माल, लूटी हुई दौलत, ये भूत-कालिक कृदन्त हैं। तद्धित प्रत्यय, धातु को छोड़ संज्ञा विशेषण आदि शब्दों के पीछे जो प्रत्यय आते हैं उन्हें तद्धित प्रत्यय कहते हैं। तद्धित प्रत्यय लगने से जो शब्द बनते हैं उन्हें तद्धितान्त कहते हैं। तद्धित प्रत्यय अनन्त हैं। नीचे कुछ दिये जाते हैं—

कर्तृ वाचक (तद्धितान्त शब्द)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
लोहा	आर	लुहार
पूजा	आरी	पूजारी
दुःख	इया	दुखिया
तेल	इ	तेली
सांप	एरा	संपेरा
टोपी	वाला	टोपीवाला
लकड़ी	हारा	लकड़हारा

(भाव वाचक तद्धितान्त)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
भला	आई	भलाई
पंच	आयत	पंचायत
चोर	ई	चोरी
चिकना	आहट	चिकनाहट
ठण्ड	क	ठण्डक
सुन्दर	ता	सुन्दरता
पुरुप	त्व	पुरुषत्व
बच्चा	पन	बचपन
सुन्दर	य	सौन्दर्य

(गुण वाचक तद्धितान्त शब्द)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
मैल	आ	मैला
झगड़ा	आलू	झगड़ालू
मास	इक	मासिक
स्वदेश	ई	स्वदेशी
रंग	इला	रंगीला
बाज़ार	ऊ	बाजारू
लाड	ला	लाड़ला

(सम्बन्ध वाचक तद्धितान्त)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
ससुर	आल	ससुराल
मामा	एरा	ममेरा
भ्राता	जा	भतीजा
बहिन	ओई	बहनोई

(ऊनवाचक तद्धितान्त)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
बूढ़ा	इया	बुढ़िया
पहाड़	ई	पहाड़ी
खाट	ओला	खटोला
मुख	ड़ा	मुखड़ा
खोज	ली	खुजली
छाता	री	छतरी

(स्थान वाचक तद्धितान्त)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त

हिन्दुस्तान	ई	हिन्दुस्तानी
अमृतसर	इया	अमृतसरिया
दिल्ली	वाला	दिल्ली वाला

(अपत्य वाचक)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
पाण्डु	व	पाण्डव
कुरू	अ	कौरव
दशरथ	दाशरथि	
दयानन्द	ई	दयानन्दी
गंगा	एय	गांगेय

(कुछ संस्कृत तद्धितान्त)

शब्द	प्रत्यय	तद्धितान्त
श्री	मान्	श्रीमान्
श्री	मती	श्रीमती
धन	वान्	धनवान्
दया	आलु	दयालु
दुःख	इत	दुखित
भारत	इय	भारतीय
नीति	इक	नैतिक
गुरू	अ	गौरव

उपसर्ग और प्रत्यय में क्या भेद हैं उदाहरण दे कर स्पष्ट करो हिन्दी में कितने प्रकार के उपसर्ग प्रयुक्त होते हैं।

तीसरा पाठ

सन्धि (JOINING LETTERS)

अति समीप होने के कारण जब दो वर्ण आपस में मिलते हैं तो उस मेल को सन्धि कहते हैं। सन्धि तीन प्रकार की होती है—स्वर सन्धि। व्यंजन सन्धि। विसर्ग सन्धि। स्वर के मेल से जो सन्धि होती है, उसे स्वर सन्धि कहते हैं।

जैसे—हिम + आलय, हिमालय। सन्धि होने पर स्वरों में विकार हो जाता है। व्यंजन से परे जो व्यंजन में विकार होता है उसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। जगत् + नाथः, जगन्नाथः। त् को न हो गया है। विसर्ग सन्धि विसर्ग से परे जो विसर्ग में विकार होता है उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं जैसे—निष्फल में निः + फल, विसर्ग को ष हो गया है। स्वर सन्धि। दीर्घ सन्धि—अ, इ, उ, ऋ, ह्रस्व अथवा दीर्घ आ, ई, ऊ, ॠ, ग परे ह्रस्व अथवा दीर्घ अ इ उ ऋ हो तो दोनों को मिला कर सवर्ण दीर्घ हो जाता है इसे दीर्घ सन्धि कहते हैं जैसे—पुरुष + अर्थ पुरुषार्थ, परम + आनन्द, परमानन्द। विद्या + अर्थी = विद्यार्थी महा + आत्मा = महात्मा। रवि + इन्द्रः = रवीन्द्रः। मुनि + ईश्वर = मुनीश्वरः। मही + इन्द्रः = महीन्द्रः। नदी + ईशः = नदीशः। भानु + उदयः = भानूदयः। सिन्धु + उर्मि = सिन्धूर्मि। वधु + उत्सवः = वधूत्सवः। भु + उर्ध्वम् = भूर्ध्वम्। पितृ + ऋण = पितृण। मातृ + ऋण = मातृण। स्मरण रहे कि दीर्घ ॠ का प्रयोग हिन्दी में नहीं होता। अतः हिन्दी में ऐसे उदाहरण नहीं मिलते ये केवल संस्कृत के प्रयोग हैं। गुण सन्धि—ए, ओ, अरु, नियम अ या आ के परे इ या ई हो तो दोनों को मिला कर ए उ

या ऊ हो तो दोनों को मिला कर ओ ऋ हो तो दोनों के स्थान में अर होता है—इसे यण सन्धि कहते हैं। जैसे—सुर+इन्द्र=सुरेन्द्र। परम+ईश्वर=परमेश्वर। महा+इन्द्र=महेन्द्र। रमा+ईश=रमेश। चन्द्र+उदय=चन्द्रोदय। समुद्र+उर्मि=समुद्रोर्मि। महा+उत्सवः=महोत्सवः। गंगा+उर्मि=गंगोर्मि। राज+ऋषि=राजर्षि। महा+ऋषि=महर्षि।

वृद्धि सन्धि, (ऐ औ) नियम अ या आ के आगे ए या ऐ आवे तो दोनों के स्थान में ऐ और ओ या औ हो जाता है, इसे वृद्धि सन्धि कहते हैं। जैसे—ने+अन=नयन। गै+अकः=गायकः। भो+अन=भवन। पौ+अकः=पावकः। सन्धि छेद करो—अत्यावश्यक, कवीश्वरः, सूर्यास्ता हितोपदेशः, प्रीत्यर्थ, भारतेन्दु, सूक्ति, सप्तर्षि, मन्वन्तर, दर्घायु, विद्यालय, देवेन्द्र, महौषधि, स्वागतम्, रमेश, महोत्सव, परमानन्द, तथैव, मामाज्ञा।

व्यंजन सन्धि—व्यंजन से परे स्वर या व्यंजन आने पर पहले व्यंजन में विकार हो जाता है और वह अगले वर्ण में जा मिलता है. इसे व्यंजन सन्धि कहते हैं। कभी (र) दोनों व्यंजनों में विकार हो जाता है। पहले को तीसरा, क च ट प के आगे यदि कोई स्वर वर्ग का तीसरा, चौथा वर्ण अथवा य र ल व में कोई वर्ण आ जाये तो क् को ग्, च् को ज्, ट् को ड् और प् व् हो जाता है। वाक्+ईश=वागीश, दिक्+गज=दिग्गज, वाक्+दान=वागदान। वाक्+धारा=वाग्धारा। अच्+अन्तः=अजन्तः। षट्+दर्शन=षड्दर्शन। षट्+रिपु =षड्रिपु। अप्+ज=अब्ज। पहले को पांचवां क् त् प् के

आगे यदि कोई अनुनासिक व्यंजन हो तो उस के स्थान में उसी वर्ग का पांचवां वर्ण हो जाता है। जैसे—वाक्+मय=वाङ्मय, जगत+नाथ=जगन्नाथः, षट्+मास=षण्मास, अप्+मय=अम्मय। त् को त् के आगे यदि कोई स्वर वर्ग का तीसरा, चौथा अक्षर अथवा य र व में से कोई वर्ण आ जाये तो त् को द् हो जाता है। जैसे सत्+अचारः, जगत्+ईश=जगदीश, भगवद्+भक्ति=भगवद्भक्ति, सत्+धर्म=सद्धर्म, भविश्यत्+वाणी=भविष्यत् वाणी। त या द् को चवर्ग, टवर्ग ल त या द् के आगे यदि चवर्ग हो तो टवर्ग और ल हो तो ल हो जाता है।

सत्+चरित्र=सच्चरित्र, विपद्+जाल=विपज्जाल, सत्+जन—सज्जन, शरत+चन्द्र=शरच्चन्द्र, तत्+टीका=तट्टीका, उत्+डयन=उड्डयन, उत्+लासः=उल्लासः, तत् लीन=तल्लीन।

श को छ त् या द् के परे श आवे तो त् या द् के स्थान च और श के स्थान में छ हो जाता है और ह हो तो त् को द् और ह के स्थान में ध हो जाता है जैसे—

सत्+शास्त्र=सच्छास्त्र, उत्+श्वास=उच्छ्वास, तत्+शरीर=तच्छरीर, तत्+हित=तद्धित, उत्+हार=उद्धार, शरद्+शशी=शरच्छशी।

छ से पहले च, छ से पूर्व यदि कोई स्वर हो तो उस के पहले च जुड़ जाता है। जैसे—

स्व+छन्द=स्वच्छन्द, आ+छादन=आच्छादन, वि+

छेद=विच्छेद, परि+छेद=परिच्छेद ।

म को अनुस्वार या अनुनासिक म, के आगे यदि कोई स्पर्श—वर्ण हो तो म के स्थान में अनुस्वार अथवा उसी वर्ग का अनुनासिक हो जाता है । सम्+कल्प=संकल्प, सम्+चय=संचय या सञ्चय, सम+तोष=संतोष या सन्तोष, म को केवल अनुस्वार, म के आगे यदि कोई अन्तःस्थ या ऊष्म वर्ण हो तो म के स्थान में केवल अनुस्वार होता है । जैसे—

सम+योग=संयोग, सम+वाद=संवाद, सम+रक्षण=संरक्षण, सम+हार=संहार, सम+सार=संसार, सम+श्य=संशय ।

न् को ण्, ऋ र या ष के परे यदि न् हो तो न के स्थान में ण् हो जाता है चाहे बीच में कोई स्वर, कवर्ग पवर्ग अथवा ह य व में से कोई वर्ण हो जैसे—

ऋ+न=ऋण, कर+न=कर्ण, कृष+न=कृष्ण, कृष+न=कृषण, व्याकर+अन=व्याकरण, भूष+अन=भूषण ।

स को ष, आ छोड़ कर किसी भी स्वर के परे यदि स हो तो उसे ष हो जाता है । जैसे—

वि+सम=विषम, नि+सेध=निषेध, सू+समा=सुषमा, सु+सुप्त=सुषुप्त ।

सन्धि छेद करो—दिगम्बर, जगदुपकार, उद्घातम, उच्छेद यावज्जीवन, शिवच्छाया, अभिषेक, सच्चित, संयम, प्रणाम, महद्धन, जगज्जाल ।

विसर्ग सन्धि

विसर्ग से परे स्वर या व्यञ्जन के आने पर विसर्गों में जो

जो विकार होता है, उसे विसर्ग सन्धि कहते हैं। विसर्ग सन्धि के नियम नीचे दिये जाते हैं :—

विसर्ग को श ष स विसर्ग से परे च ज हो तो विसर्ग को श ट ठ हो तो ष और त थ हो जाता है। जैसे—

नि+चल=निश्चल, दु+चरित्र=दुश्चरित्र, नि+छल= निश्छल, धनु+टंकार=धनुश्टंकार, नमः+ते=नमस्ते, दु+ तर=दुस्तर।

विसर्ग को ष, विसर्ग पूर्व इ य उ ही और परे क ख प फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग को ष हो जाता है। जैसे—

निः+कलंक=निष्कलंक, दुः+कर्म=दुष्कर्म, वहिः+कार= वहिष्कार निः+पाप=निष्पाप दुः+पाप=दुष्पाप, नि+फल= निष्फल। विसर्ग को क्ष, ष् या स् हो तो विसर्ग को विकल्प से परे वर्ण हो जाता है। जैसे—

दुः+शासण=दुश्शासन, या दुशासव, निः+सन्देह= निःसन्देह या निसन्देह। विसर्ग से पहले अ हो और परे क ख प फ में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग में से कोई वर्ण हो तो विसर्ग में विकार नहीं होता। जैसे—

प्रातः+काल=प्रातः काल रजः+कण=रजः कण, पयः+ पान, अधः+पतन=अधः पतन। विसर्ग को स, नमः और पुरः के आगे विसर्ग हो तो स हो जाता है, यदि परे कवर्ग या पवर्ग का कोई वर्ण हो। जैसे—

नमः=कार=नमस्कार, पुरः+कार=पुरस्कार।

(विसर्ग का लोप)

यदि विसर्ग से पहले अ हो परे अ से भिन्न कोई स्वर हो तो विसर्ग का लोप हो जाता है। जैसे—

अतः एव=अतएव, विसर्ग को ओ, यदि विसर्ग से पहले अ हो और परे अ या कोई घोष व्यंजन हो तो अः को ओ हो जाता है अगले अ के स्थान में ऽ यह चिन्ह रह जाता है।

यशः + अभिलाषी = यशोऽभिलाषी, मनः+अभिराम = मनोऽभिराम, अधः+गति = यधोगति, सरः+ज = सरोज तेजः+मय = तेजोमय, अधः+लिखित = अधोलिखित, तेजः राशि=तेजोराशि, मनः हर+ मनोहर

विसर्ग क को या यदि विसर्ग यदि विसर्ग से आ के बिना कोई स्वर हो और परे कोई घोष वर्ण हो तो विसर्ग को र हो जाता है। जैसे—

नि+कार=निराकार=दुःउप+योग = दुरुपयोग, निः+धन निर्धन, दु+आशा=दुराशा, निः+बल=निर्बल, दु+भाग्य= दुर्भाग्य, निः+मल=निर्मल, दु+लभ=दुर्लभ, परन्तु यदि र व स से परे र हो तो र का लोप हो कर उस से पहले स्वर दीर्घ हो जाता है जैसे—

निर्+रस=नीरस, निर्+रोग=नीरोग, सन्धि छेद करो—

यशोदा, दुर्गुण, निश्चिन्त, निस्सार, तमोगुण, दुर्जन, आशीर्वाद, निर्भर, पुरश्चरण, मनस्ताप। सन्धि किसे कहते हैं। उस के कितने भेद हैं उदाहरण सहित लिखो।

छटा अध्याय

(समास)

जब परस्पर सम्बन्ध रखने वाले दो या दो से अधिक शब्द अपने कारक चिन्हों को छोड़ कर आपस में मिलते हैं, तब उन के भेद को समास कहते हैं, और उन मिले हुये शब्दों को समस्त पद कहते हैं। इन मिले हुए शब्दों का सम्बन्ध प्रकट कर दिखाने की रीति को विग्रह कहते हैं।

जैसे—समस्त पद।

समस्त पद	विग्रह
माता पिता	माता और पिता
विद्या सागर	विद्या का सागर
महात्मा	महान है आत्मा जिस की
दोपहर	दो पहरों का समूह
तन मन धन	तन और मन और धन,

समस्त पद में केवल अन्तिम पद के साथ ही लिंग और वचन के अनुसार विभक्तियां आती हैं पर उस से पूर्व सभी पदों की विभक्तियों का लोप हो जाता है। इन विभक्तियों के लोप होने पर भी उन का अर्थ बना रहता है।

जैसे—समस्त पद	विग्रह
वनवास के लिये	बन में वास के लिये
राह खर्च का	राह के लिये खर्च का
माता पिता से	माता और पिता से
सूर्य वंश में	सूर्य के वंश में

समास करने पर सन्धि के नियमों का भी प्रयोग होता है। जैसे—हिम+आलय=हिमालय।

प्रश्न+उत्तर=प्रश्नोतर।

कभी कभी समस्त पद के पहले शब्दों में भी परिवर्तन हो जाता है।

जैसे—समस्त पद	विग्रह
घुड़ सवार	घोड़े का सवार
दुध मुंहा	दूध है मुंह में जिस के

समास के खण्ड। समस्त पद जिन पदों के मिलने से बनता है, उन्हें खण्ड कहते हैं।

जैसे—राज पुत्र=राजा का पुत्र इस समस्त पद में दो खण्ड हैं।

पहला खण्ड राज है और दूसरा खण्ड पुत्र है।

राम लक्ष्मण सीता (राम और लक्ष्मण और सीता) इस समस्त पद में तीन खण्ड हैं। 'राम पहला खण्ड हैं, लक्ष्मण, दूसरा और सीता तीसरा।

समासों के भेद :—

किसी समास में पहला खण्ड प्रधान होता, किसी में दूसरा खण्ड किसी में और सभी खण्ड प्रधान होते हैं किसी समास में कोई खण्ड प्रधान नहीं होता, अपितु यह किसी दूसरे पद का विशेषण बन जाता है। इसी खण्डों की प्रधानता या अप्रधानता के विचार से समास के मुख्य भेद चार हैं। द्वन्द, समास तत्पुरुष, समास अव्ययी भाव समास बहुव्रीहि

समास। द्वन्द :—जिस समास में सभी खण्ड प्रधान हों और विग्रह करने पर (और) अथवा (व) निकले उसे द्वन्द समास कहते हैं। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
भाई बहिन	भाई और बहिन
रात दिन	रात और दिन
पाप पुण्य	पाप और पुण्य
सुख दुःख	सुख और दुःख
धर्माधर्म	धर्म अथवा अधर्म,

द्वन्द समास के कुछ उदाहरण :—

मां-बाप, सेठ साहुकार, रुपया पैसा, सच झूठ, दूध दही, गाय भैंस।

तत्पुरुष समास जिस में दूसरा खण्ड प्रधान हो उसे तत्पुरुष कहते हैं। तत्पुरुष समास में क्रिया का सम्बन्ध दूसरे खण्ड से रहता है। जैसे

समस्त	विग्रह
राज कुमार	राजा का कुमार
राज महल	राजा का महल

तत्पुरुष समास में विग्रह करने पर कर्ता और सम्बोधन को छोड़ कर शेष सब कारकों की विभक्तियों का लोप हो जाता है। जिस कारक की विभक्ति का लोप होता है, समस्त पद उसी कारक के नाम से पुकारा जाता है। इस विचार से तत्पुरुष के छे भेद हैं—कर्म तत्पुरुष जिस के पूर्व खण्ड में

कारक की विभक्ति का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
स्वर्ग गत	स्वर्ग को गया
चिड़ी मार	चिड़ी को मारने वाला
शरणा गत	शरण को आगत
गिरह कट	गिरह को काटने वाला
माखन चोर	माखन को चुराने वाला

करण तत्पुरुष—पूर्व खण्ड में करण कारण की विभक्ति का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
ईश्वर दत्त	ईश्वर द्वारा दिया हुआ
तुलसी कृत	तुलसी द्वारा किया हुआ
आंखों देखा	आंखों से देखा हुआ
रेखांकित	रेखा से अंकित

सम्प्रदान तत्पुरुष—पूर्व खण्ड में सम्प्रदान कारक की विभक्ति लोप होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
रसोई घर	रसोई के लिये घर
देश भक्ति	देश के लिये भक्ति
युद्ध भूमि	युद्ध के लिये भूमि
हवन सामग्री	हवन के लिये सामग्री
हथ कड़ी	हाथ के लिये कड़ी

अपादान तत्पुरुष—पूर्व खण्ड में अपादान कारक की विभक्ति का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
जन्मान्ध	जन्म से अन्धा
धर्म विमुख	धर्म से विमुख
देश निकाला	देश से निकाला
पथ भ्रष्ट	पथ से भ्रष्ट
जन्म रोगी	जन्म से रोगी

सम्बन्ध तत्पुरुष—पूर्व खण्ड में सम्बन्ध कारक की विभक्ति का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
सेनापति	सेना का पति
बैल गाड़ी	बैलों की गाड़ी
राज सभा	राज की सभा
राम कहानी	राम की कहानी

अधिकरण तत्पुरुष=पूर्व खण्ड में अधिकरण कारक की विभक्ति का लोप होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
नगर वास	नगर में वास
प्रेम मग्न	प्रेम में मग्न
कार्य्य कुशल	कार्य्य में कुशल
शरणागत	शरण में आया हुआ

अन्य दो प्रकार से भी तत्पुरुष समास बनता है :—

नञ तत्पुरुष—अभाव या निषेध के अर्थ में शब्द से पहले आ या [अन्] लगा कर जो समास करते हैं, उसे नञ

तत्पुरुष कहते हैं। जैसे:—

समस्त पद	विग्रह
अज्ञान	न ज्ञान
अन्याय	न न्याय
अनाचार	न आचार
अनजान	न जानने वाला
अविद्यार्थी	न विद्यार्थी

तत्पुरुष समास के अन्य दो भेद।

१. कर्म धारय समास :—

जिस में विशेषण और विशेष्य तथा उपमाने और उपमेय का मेल हो उसे कर्म-धारय कहते हैं।

समस्त पद	विग्रह	
नील कमल	नीला जो कमल	विशेषण
महाजन	महान जो जन	विशेषण
घनश्याम	घन जैसा श्याम	उपमान
चन्द्र मुख	चन्द्र जैसा मुख	उपमेय

स्मरण रहे कि कर्म धारय समास के विग्रह करने पर दोनों खण्डों में कर्ता कारक की विभक्ति रहती है।

द्विगु समास :—जिस में पहला पद संख्या वाचक हो, उसे द्विगु समास कहते हैं। जैसे :—

समस्त पद	विग्रह
त्रिलोकी	तीन लोकों का समाहार
त्रिभुवन	तीनों भुवनों का समाहार

समस्त पद	विग्रह
चौमासा	चार मासों का समाहार
पुंसेरी	पांच सेरों का समाहार

याद रहे कि द्विगु समास के समस्त पद का विग्रह करने पर उससे वस्तुओं के (समाहार का) या समूह का बोध होता है। द्विगु समास के कुछ उदाहरण नीचे दिये जाते हैं। अष्टाध्यायी, पंचवटी, चौराहा, त्रिकाल, दोपहर, नवग्रह, अठवारा, पंचरात्र, षड्रस, सप्त-सिन्धु।

अव्ययी भाव समास में पहला खण्ड प्रधान होता है। यह प्रायः अव्यय होता है। अव्ययी भाव, समास का समस्त पद अव्यय ही वन जाता है और क्रिया विशेषण के रूप में प्रयुक्त होता है।

समस्त पद	विग्रह
यथा शक्ति	शक्ति के अनुसार
आ-जीवन	जीवन पर्यन्त
भरपेट	पेट भर कर
प्रति दिन	हर दिन
यथा स्थान	स्थान के अनुसार

संज्ञाओं और अव्ययों की द्विरुक्ति से भी अव्ययी भाव समास बनता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह
हाथों हाथ	हाथ हाथ से
दिनों दिन	दिन दिन से
धीरे धीरे	धीरे धीरे
बीचो बीच	बीच बीच में

धड़ा धड़—धड़ धड़

बहुव्रीहि समास जिस समास में कोई भी पद प्रधान न हो और जो किसी संज्ञा की विशेषता को प्रकट करें, उसे बहुव्रीहि समास कहते हैं। क्योंकि बहुव्रीहि समास का समस्त विशेषण बन जाता है।

जैसे—कमल नयन=कमल जैसे नयन जिसके (वह पुरुष) यहां न कमल न नयन, अपितु यहां पुरुष प्रधान है। याद रहे कि बहुव्रीहि समास में के विग्रह में जो शब्द को कर्ता और सम्बोधन को छोड़कर अन्य सब विभक्तियों से अर्थ का बोध होता है। जैसे—

समस्त पद	विग्रह	विशेष्य
पीताम्बर	पीत हैं अम्बर जिस के	(कृष्ण)
जितेन्द्रिय	जीती गई है इन्द्रियां जिससे	(योगी)
दत्तधन	दिया गया है धन जिसे	(ब्राह्मण)
निर्विकार	निकल गया है विकार जिससे	(सदा)
पतझड़	झड़ते हैं पत्ते जिस में	(ऋतु)

बहुव्रीहि के कुछ उदाहरण:-नील कण्ठ, धशानन, चक्रपाणि, मन्द बुद्धि, निर्जन, अनन्त, तिरंगा, अलोना।

अभ्यास

१. समास किसे कहते हैं। उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो।
२. विग्रह से तुम क्या समझते हो। हिन्दी में समास के कितने प्रकार हैं उदाहरण द्वारा बतायें।

सप्तम अध्याय

पहला पाठ

शब्द भण्डार

इस अध्याय में कुछ ऐसे शब्दों का संग्रह किया गया है, जिसके शुद्ध ज्ञान से छात्रों को शुद्ध बोलना लिखना आ सकता है। पर्यायवाची शब्द, समानार्थवाची शब्द आकाश=नभ, गगन, व्योम, अन्तरिक्ष, अम्बर। राजा=नृप, भूपति, महीप, पार्थिव, नृपति, नरेश, भूपति। सूर्य्य=रवि, भास्कर, दिनकर, दिनेश, आदित्य, मार्तण्ड, प्रभाकर, दिवाकर। चन्द्रमा=शशी, सुधाकर, रजनीश, कलानिधी, हिमकर, इन्द्र, विधु, मयक। बादल=जलद, धन, पयोध, नारद, जलधर, मेघ, अम्बुद। आग=अग्नि, अनल, पावक, हुताशन, कृशानु, दहन। कमल=पंकज, सरोज, अरविन्द, पद्म, जलज, अम्बुज। जल=सलिल, उदक, वारि, नीर, पानी, अम्बु, घनरस। घर=भवन, गृह, निकेतन, सदन, गेह, धाम, आलय, ओक। रात=रजनी, निशा यामिनी, विभावरी, रात्रि, निशीथनी। वायु=समीर, अनिल, मारुत, पवन, हवा। स्त्री=वनिता, नारी, कान्ता, रमणी, दारा, वामा, ललना, महिला, अबला, कामिनी। फूल=सुमन, पुष्प, कुसुम, प्रसून, पुहुप। तालाब=सरोवर, पुष्कर, सर जलाशय, तड़ाग। बिजली=चपला, चंचला, विद्युत, दामिनी। इन्द्र=सुरमति, सुरेश, देवपति, शक्र, पुरन्दर, सुरेन्द्र। पृथिवी=भूमि, मही, धरा, धरित्री, वसुन्धरा। पर्वत=शैल, महीधर, अचल, गिरी,

नग, भूधर। बुद्धि=धिषण, मति, धी, मनीषा, मेध, प्रज्ञा। पुरुष=मानव, नर, आदमी, मनुस, जन, मनुष्य। नदी=वहिनी, तरंगिनी, सरिता, अपगा, सरित। पुत्र=सुत, तनय, बालक, आत्मज, बेटा। घोड़ा, तुरंग, वाजि, सैन्धव, अश्व। सोना=कनक, कंचन, स्वर्ण। समुद्र=सिन्धु, जलधि, रत्नाकर, पयोधि, सागर, उदधि। सिंह=हरिः, मृगेन्द्र, केसरी, शेर, मृगराज, नाहर। बर्फ=हिम, तुषार, निहार, तुहिन। आंख=नयन, लोचन, चक्षु, दृग, नेत्र, अक्षि। शरीर=देह, तन, तनु, काय, विग्रह। राक्षस=निशाचर, असुर, दानव, दनुज, मुनज़ाद। कपड़ा=वस्त्र, वसन, अम्बर, चीर। चतुर=निपुण, प्रवीण, पटु, कुशल, दक्ष, सयाना। गंगा=भागीरथी, जान्हवी, सुरसरि, त्रिपथगा। दिन=दिवस, बासर, अहः। दुष्ट=खल शठ, दुर्जन, पापर। दुःख=कष्ट, क्लेश, विपद, अवसाद, व्यथा। वृक्ष=तरु, पेड़, विटप, पादप, द्रुम। पक्षी=खग, विहग, विहंगम, नभचर, पंछी। अपमान=अपमान, निरादर, तिरस्कार, अवज्ञा, अवहेलना। शत्रु=वैरी, रिपु, अरि, विरोधी, विपक्षी।

दूसरा पाठ

(विपरीतार्थक शब्द)

विरोधी शब्द Opposite Words.

शब्द	विपरीतार्थक	शब्द	विपरीतार्थक
आय	व्यय	जय	पराजय

शब्द	विपरीतार्थक	शब्द	विपरीतार्थक
लाभ	हानि	संयोग	वियोग
अनुकूल	प्रतिकूल	आदर	निरादर
ऊंच	नीच	शुभ	अशुभ
उपकार	अपकार	मधुर	कटु
धनी	निर्धन	संयोग	वियोग
जय	पराजय	मान	अपमान
यश	अपयश	सुख	दुःख
स्वदेश	विदेश	हर्ष	शोक
आयात	निर्यात	जड़	चेतन
साकार	निराकार	कीर्ति	अपकीर्ति
स्वतंत्र	परतन्त्र	सुगम	दुर्गम
आकाश	पाताल	उत्कर्ष	अपकर्ष
आज्ञा	अवज्ञा	कृतघ्न	कृतज्ञ
शीतल	उष्ण	उदय	अस्त
आशा	निराशा	मीठा	कड़वा
क्रय	विक्रय	अन्त	आदि
एक	अनेक	उत्थान	पतन
स्वर्ग	नरक	दयालु	निर्दय
उन्नति	अवनति	पाप	पुण्य
गुरु	लघु	लेना	देना
सुगन्ध	दुर्गन्ध	अनन्त	अनादि
शत्रु	मित्र	जीवन	मरण
स्वस्थ	अस्वस्थ	मुख्य	गौण
कोमल	कठोर	सार्थक	निरर्थक

शब्द	विपरीतार्थक	शब्द	विपरीतार्थक
नूतन	पुरातन	शीत	उष्ण
उत्कृष्ट	निष्कृष्ट	सरस	नीरस
सज्जन	दुर्जन	प्राकृतिक	कृत्रिम
पूरा	अधूरा	सुमति	कुमति
प्रत्यक्ष	परोक्ष	सुगन्ध	दुर्गन्ध
राजा	रंक	सुकर	दुष्कर
स्थिर	अस्थिर	अनुराग	बिराग
ऋणी	उऋणी	मलिन	निर्मल
ज्ञान	अज्ञान	सुलभ	दुर्लभ
रोगी	निरोग	सरस	निरस
प्रकाश	अन्धकार	उत्तम	अधम
हर्ष	शोक	आचार	अनाचार
निन्दा	स्तुति	उदार	कृपण
विद्या	अविद्या	गुण	अवगुण
आर्य	अनार्य	विनीत	उद्धत
नास्तिक	आस्तिक	सम	विषय
सुकर्म	कुकर्म	सुपुत्र	कुपुत्र
सूक्ष्म	स्थूल	सद्गुण	दुर्गुण
नवीन	प्राचीन	सच	झूठ
स्थावर	जंगम	स्वस्थ	अस्वस्थ
जड़	चेतन	विष	अमृत
मनुष्यता	पशुता	निकट	दूर
उदय	अस्त	जय	पराजय

शब्द	विपरीतार्थक	शब्द	विपरीतार्थक
सदय	निर्दय	कुटिल	सरल
अधिक	न्यून	विधवा	सधवा
भला	बुरा		

तीसरा पाठ

समान रूप भिन्नार्थक शब्द

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
अनिल	वायु	अनल	आग
अन्य	और	अन्न	अनाज
अणु	छोटा भाग	अनु	पीछे
सुत	पुत्र	सूत	सारथि
पाणि	हाथ	पानी	जल
कौर	ग्रास	कोर	किनारा
झूठ	असत्यवादी	जूठा	अपवित्र
तरणी	नौका	तरुणी	युवती
प्रसाद	कृपा	प्रासाद	महल
दीप	दिया	द्वीप	भूखण्ड
अपेक्षा	निस्बत	उपेक्षा	अनादर
मति	बुद्धि	मत	राय
नक्र	मगरमच्छ	नरक	बुरा स्थान
बली	बलवान	बलि	भेंट
अंस	कन्धा	अंश	भाग

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सम्मान	आदर	समान	बराबर
लक्ष्य	उद्देश्य	लक्ष	लाख
कपाट	किवाड़	कपट	छल
अशक्त	असमर्थ	आसक्त	मोहित
गृह	घर	ग्रह	नक्षत्र
अचला	पृथ्वी	अचल	पर्वत
पथ	रास्ता	पथ्य	परहेज
मूल	जड़	मूल्य	कीमत
बिस	कमल की डंडी	विष	ज़हर
प्राकार	चार दिवारी	प्रकार	ढंग
प्रणाम	नमस्कार	परिणाम	नतीजा
गोत्र	वंश	गात्र	शरीर
अलि	भौरा	आलि	सखी
उधार	ऋण	उद्धार	तारना
आकर	खान	आकार	शकल
सर	तालाब	शर	तीर
पुरुष	मनुष्य	परुष	कठोर
नग	पर्वत	अचला	पृथिवी
अचल	पर्वत	अचला	पृथिवी
चरम	अन्तिम	चर्म	चमड़ा
छत्र	छाता	छात्र	विद्यार्थी
निधन	मृत्यु	निर्धन	धनहीन
प्रमान	सबूत	परिमाण	अन्दाजा

शब्द	अर्थ	शब्द	अर्थ
सम्मति	राय	समिति	सभा
उपकार	भला करना	अपकार	बुरा करना
मूल	जड़	मोल	कीमत
जलाना	दग्ध करना	जिलाना	जीवत करना
लोटना	लेटना	लौटाना	वापिस करना
सकल	सारा	शकल	टुकड़ा
वसन	वस्त्र	व्यसन	बुरी आदत
जलद	बादल	जलज	कमल
प्रण	वचन	प्राण	जान
तरंग	लहर	तुरंग	घोड़ा
आधि	मानसिक रोग	व्याधि	शरीरिक रोग

चतुर्थ पाठ

एक शब्द बहुतों के स्थान पर

आस्तिक=जो ईश्वर को मानने वाले हों।
नास्तिक=जो ईश्वर को न मानता हो।
साकार=जिस का आकार हो।
निराकार=जिस का आकार न हो।
सप्ताहिक=सप्ताह में होने वाला।
मासिक=मास में होने वाला।
वार्षिक=वर्ष में होने वाला।

प्रत्यक्ष=जो आंखों के सामने हो।
परोक्ष=जो आंखों के सामने न हो।
नागरिक=जो नगर में रहे।
ग्रामीण=जो ग्राम में रहे।
दुराचारी=जिस का आचार अच्छा न हो।
सदाचारी=जिस का आचार अच्छा हो।
कृतज्ञ=किये हुए उपकार को मानने वाला।
कृतघ्न=किये हुए उपकार को न मानने वाला।
फलाहारी=फल खाने वाला।
अवध्य=जो मारने योग्य नहीं।
अनन्त=जिस का अन्त न हो।
अनादि=जिस का आदि न हो।
नीरस=जिस में रस न हो।
दुर्गम=जिस स्थान पर जाना कठिन हो।
अजेय=जो जीता न जाये।
सजातीय=एक जाति के पुरुष।
अथाह=जिस की थाह न प्राप्त हो।
त्रिलोकी=तीनों लोकों का समूह।
पूजनीय=पूजा के योग्य। लोभी=जो लोभ करे।
अमर=जो न मरे। अधीर=जिसे धैर्य न हो।
दूरदर्शी=जो दूर की सोचे।
अद्वितीय=जिस के समान दूसरा न हो।
औषधालय=यहां औषधियां रखी हों।
वैयाकरण=व्याकरण को जानने वाला।
अदृश्य=जो दिखाई न दे।

मुमुक्षु=मोक्ष को चाहने वाला।
स्वार्थी=स्वार्थ को सिद्ध करने वाला।
आत्मघाती=जो अपनी हत्या आप करे।
अवैतनिक=जो वेतन विना काम करे।
असाध्य=जो सिद्ध न हो सके।
कुमार्गी=बुरे मार्ग पर चलने वाला।
अपार=जिस का पार न हो।
अवर्णनीय=जिस का वर्णन न हो।
अकथनीय=जो कहीं न जा सके।
निष्कपट=जिस में कपट न हो।
प्रशंसनीय=प्रशंसा के योग्य।
पूज्य=जो पूजा के योग्य हो।
ऐतिहासिक=इतिहास से सम्बन्ध रखने वाला।
जलचारी=जल में चलने वाला।
निस्सन्तान=जिसकी सन्तान न हो।
चतुर्भुज=जिस की चार भुजाएं हों।
निर्लज्ज=जिस में लज्जा न हो।

पांचवां पाठ

(विशेषण रचना)

ADJECTIVES

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
कुल	कुलीन	गर्मी	गर्म

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
ग्राम	ग्रामीन	गांव	गंवार
नगर	नागरिक	विष	विषैला
लोक	लौकिक	भारत	भारतीय
शीत	शीतल	स्नेह	स्नेही
राजा	राजकीय	दया	दयालु
नमक	नमकीन	घृणा	घृणित
भय	भयानक	धर्म	धार्मिक
सप्ताह	सप्ताहिक	नीचे	नीच (निचला)
स्थान	स्थानीय	एक	अकेला
पोल	पोला	लज्जा	लज्जालु
पांच	पांचवां	क्रोध	क्रोधी
रंग	रंगीला	वेद	वैदिक
भार	भारी	सन्तोष	सन्तोषी
डर	डरावना	डर	डरपोक
महत्व	महान्	पर्वत	पर्वतीय
आढ़त	आढ़तिया	ऋण	ऋणी
मूर्खता	मूर्ख	सूर्य्य	सौर
दर्शन	दार्शनिक	पिता	पैतृक
विदेश	विदेशी	भड़क	भड़कीला
यूरोप	यूरोपीय	पक्ष	पाक्षिक
तीन	तीसरा	अभिमान	अभिमानी
इच्छा	इच्छुक	संचय	संचित
मोह	मुग्ध	स्थान	स्थानीय
द्वेष	द्वेषी	शूरता	शूर

शब्द	विशेषण	शब्द	विशेषण
घर	घरेलू	वीरता	वीर
मन	मनस्वी	ऊपर	ऊपरी
दुःख	दुःखी	गुण	गुणी
लोभ	लोभी	जिज्ञासा	जिज्ञासु
बुद्धि	बुद्धिमान	तप	तपस्वी
बल	बलवान	जुआ	जुआरी

छटा पाठ

(भाव वाचक संज्ञाएं)

Abstrict Nouns

शब्द	भाव वाचक	शब्द	भाव वाचक
युवा	यौवन	ढीठ	ढिठाई
भूखा	भूख	भक्त	भक्ति
वैद्य	वैद्यक	करना	कार्य
चिकित्सक	चिकित्सा	निराला	निरालापन
पराधीन	पराधीनता	बुद्धिमान	बुद्धिमानता
कठोर	कठोरता	ठहरना	ठहराव
अपना	अपनापन	काटना	कटौती
अच्छा	अच्छाई	सुझाना	सुझाव
विषण्ण	विषाद	बाल	बालपन
महान्	महत्व	रांड	रंडेपा

शब्द	भाव वाचक	शब्द	भाव वाचक
रोना	रुलाई	चंचल	चंचलता
काला	कालिख	पुकारना	पुकार
निर्बल	निर्बलता	शर्मिन्दा	शर्मिन्दगी
प्यासा	प्यास	बाबू	बाबू गिरी
वकील	वकालत	नीचा	निचाई
चिल्लाना	चिल्लाहट	गम्भीर	गम्भीरता
नेता	नेतृत्व	विरुद्ध	विरोध
प्रभु	प्रभुता	फैलना	फैलाव
बड़ा	बड़ाई	सुजन	सौजन्य
पुरुष	पुरुषत्व	कठिन	कठिनता
उलझना	उलझन	गिरना	गिरावट
सीना	सिलाई	भूलना	भूल
मितव्ययी	मितव्ययता	मितव्ययी	मितव्ययता
मानना	मनौती	भीरू	भीरुता
मुस्कराना	मुस्कराहट	दिखाना	दिखावा
स्त्री	स्त्रीत्व	गधा	गधापन
चतुर	चतुरता	उचित	औचित्य
चौड़ा	चौड़ाई	झुकना	झुकाव
गुण्डा	गुण्डागर्दी		

अष्टम अध्याय

पहला पाठ

(वाक्य विचार)

(वाक्य) उस शब्द समूह को कहते हैं जिस से एक पूरा विचार प्रकट हो।

जैसे—संसार में हिमालय सब से ऊंचा पहाड़ है। सम्राट अशोक चक्रवर्ती सम्राट था। प्रातःकाल की हवा चित्त को आनन्दित करती है। ये तीनों वाक्य हैं, क्योंकि इन से एक पूरा विचार प्रकट होता है। (उप वाक्य) जब कोई पूरा आशय दो या दो से अधिक वाक्यों से ज्ञात हो तब प्रत्येक वाक्य को उपवाक्य कहते हैं। मोहन ने कहा कि मैं पिता के आदेश से स्कूल को जाऊंगा। यहां दो उप वाक्य हैं मोहन ने कहा, पहला उप वाक्य है, जो प्रधान है। इस का पूरा आशय तब तक पूर्ण रीति से स्पष्ट नहीं होता, जब तक कि दूसरा उप-वाक्य मैं पिता के आदेश से स्कूल को अवश्य जाऊंगा, न बोला जाये। यह आश्रित वाक्य है।

(वाक्यांश)

जिस शब्द समूह से पूरा आशय प्रकट न हो कर केवल एक विचार का अंश जाना जाता है उसे वाक्यांश कहते हैं। जैसे सच बोलना एक उत्तम गुण है। इस वाक्य में सच बोलना यह वाक्यांश है। (उद्देश्य और विधेय)।

(क) जिस के बारे में कुछ कहा जाता है, उसे प्रकट करने

वाले शब्द को उद्देश्य कहते हैं।

जैसे—रमेश पत्र लिखता है। आग जलती है घोड़ा दौड़ता है। इन वाक्यों में रमेश, आग, घोड़ा, ये उद्देश्य हैं क्योंकि इन के विषय में कुछ न कुछ कहा गया है।

(ख) उद्देश्यों के विषय में जो कुछ कहा जाता है उसे प्रकट करने वाले शब्द को विधेय कहते हैं।

जैसे कि ऊपर के वाक्यों में पत्र लिखता है, जलती हैं। दौड़ता में, ये क्रमशः रमेश, घोड़ा, आग के बारे में कहा गया है। इस लिये ये विधेय हैं। (उद्देश्य) साधारणतया उद्देश्य में संज्ञा के समान प्रयुक्त होने वाले शब्द आते हैं।

संज्ञा जैसे—सूर्य चमकता है। (सर्वनाम) जैसे—हम खाते है। विशेषण—जैसे—परिश्रमी सदा सफल होते हैं। वाक्यशं—जैसे—हाथ पर हाथ रख कर बैठे रहना उचित नहीं। (उद्देश्य का विस्तार) कभी उद्देश्य अकेला आता है कभी विशेषणादि शब्द लगाकर उस का विस्तार किया जाता है। (विशेषण से) भले बालक सदा आदर पाते हैं। सम्बन्ध कारक से=पुलिस की टुकड़ी ने भीड़ को तितर-बितर कर दिया। समानाधिकरण से= सुदर्शन चक्रधारी श्री कृष्ण ने कहा। वाक्यांश से=आकाश में उड़ता हुआ हवाई जहाज़ पक्षी मालूम होता है। यहां पक्षी उड़ते हैं विधेय हैं। (विधेय का विस्तार) यदि क्रिया अकर्मक हो हवा शीतल है। कर्म से=यदि क्रिया सकर्मक हो गया दूध देती है। क्रिया विशेषण से बैल धीरे-धीरे हल चलाते हैं। करण कारक से=किशोर पैंसिल से लिखता है।

सम्प्रदान कारक से=पिता बच्चों के लिये खिलौना लाया। अपादान कारक से=सवार घोड़े से गिर पड़ा। अधिकरण कारक से=समुद्र में बड़ी २ मछलियां पाई जाती हैं। पूर्व-कालिक क्रिया से=लड़के पाठ पढ़ कर बाहिर निकले। क्रिया-द्योतक कृदन्त से=प्रकाश होते ही चिड़िया चह-चहाने लगी।

अभ्यास

वाक्य और उप वाक्य में क्या भेद है। वाक्यांश किसे कहते हैं उदाहरण द्वारा स्पष्ट करो उद्देश्य कहते हैं उद्देश्य का विस्तार कितनी रीतियों से होता है।

दूसरा पाठ

(वाक्य भेद)

वाक्य रचना के अनुसार वाक्य के तीन भेद होते हैं। (सरल वाक्य) मिश्रित वाक्य। संयुक्त वाक्य।

सरल वाक्य (Simple Sentence)

जिस वाक्य में एक उद्देश्य और एक विधेय हो उसे सरल वाक्य कहते हैं।

जैसे—चिड़िया चह-चहाती है। इस वाक्य में चिड़िया उद्देश्य और चह-चहाती है विधेय इस लिये यह सरल वाक्य है।

संयुक्त वाक्य (Compound Sentence)

जिसे वाक्य में दो या दो से अधिक मुख्य उप वाक्य मिले

हों, उसे संयुक्त वाक्य कहते हैं।

जैसे—मोहन आया और मोहन गया। इस में दो मुख्य वाक्य हैं। यह अलग भी रह सकते हैं, या किसी समुच्चय बोधक अव्यय से मिलाये भी जा सकते हैं।

मिश्रित वाक्य (Complex Sentence)

जब एक प्रधान वाक्य और उस से सम्बन्ध रखने वाले एक या एक से अधिक आश्रित वाक्य मिलें हों, उसे मिश्रित वाक्य कहते हैं।

जैसे—नेता ने कहा कि लोग अब सच्चाई के लिये लड़ना सीखें, यहां नेता ने कहा प्रधान वाक्य और लोग अब सच्चाई से लड़ना सीखें आश्रित वाक्य है। (आश्रित वाक्य तीन प्रकार के होते हैं)।

(१) संज्ञा वाक्य।

(२) विशेषण वाक्य।

(३) क्रिया विशेषण वाक्य।

(१) संज्ञा वाक्य, प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम के स्थान पर जो उप वाक्य आता है, उसे संज्ञा वाक्य कहते हैं। यह प्रधान वाक्य की क्रिया के कर्ता कर्म पूरक, या संज्ञा का समानाधिकरण होता है।

जैसे—कौन नहीं जानता कि शिवा जी नीति कुशल थे? इस में शिवा जी नीति कुशल थे, जनता का कर्ता है। कौन कहता है कि तुम कवि हो। तुम कवि हो कहता है क्रिया का कर्म है। तुम को यह कब उचित है कि बन में रहो। यह

आश्रित वाक्य है, जो प्रधान वाक्य के यह सर्वनाम के स्थान पर आया है।

(२) विशेषण वाक्य, जो आश्रित वाक्य प्रधान वाक्य की किसी संज्ञा या सर्वनाम की विशेषता प्रकट करता है, उसे विशेषण वाक्य कहते हैं।

जैसे--जो विद्वान पुरुष होता है, उसे सभी चाहते हैं। इस वाक्य में जो विद्वान पुरुष होता है, यह आश्रित वाक्य है, जो प्रधान वाक्य के उसे सर्वनाम की विशेषता प्रकट करता है।

(३) क्रिया विशेषण वाक्य। जो उप वाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया की विशेषता प्रकट करे, उसे क्रिया विशेषण वाक्य कहते हैं।

जैसे--जब दिन निकला, तब हम बाहर सैर को गये। इसमें जब दिन निकला यह क्रिया विशेषण वाक्य प्रधान वाक्य की क्रिया गये, की विशेषता को प्रकट करता है।

अभ्यास

वाक्य के कितने भेद है ? उदाहरण देकर स्पष्ट करो

तीसरा पाठ

(वाक्य विग्रह)

वाक्य के अलग अंगों को अलग-अलग करके उनके परस्पर सम्बन्ध बताने की स्तिती को वाक्य विग्रह कहते हैं। (वाक्य विग्रह की रीति) सरल वाक्य के विग्रह में निम्नलिखित बातें बतानी चाहिए।

(१) उद्देश्य (कर्ता)।

(२) उद्देश्य का विस्तार।

(३) विधेय।

(४) विधेय का विस्तार, इसमें कर्म पूरक, क्रिया विशेषण का निर्देश करना चाहिए।

(१) जिन के द्वारा क्रिया का विस्तार हो।

(२) संयुक्त वाक्य के विग्रय में उप वाक्यों को अलग-अलग दिखाकर उनके योजन दिखाने चाहिएं। शेष सरल वाक्य की तरह विग्रह करना चाहिए।

(३) मिश्रित वाक्य के विग्रह में पहले प्रधान वाक्य और आश्रित वाक्य का निर्णय करके पुनः आश्रित वाक्यों के भेद को अलग-अलग बताना चाहिए। शेष विग्रह सरल वाक्य की तरह होता है।

सरल वाक्य विग्रह

वाक्य	उद्देश्य कर्ता	कर्ता का विस्तार	विधेय	क्रिया पूरक	कर्म	विधेय कर्म विस्तार	क्रिया का विस्तार
१ महात्म बुद्ध ने पथ भ्रष्ट लोगों को सत्-पथ दिखाया।	बुद्ध	महात्मा	दिखाया	×	लोगों को, पथ	पथ-भ्रष्ट सत्	×
२ उस हिरन ने पानी में अपने सींगों को देखा।	हिरण ने	उस	देखा	×	सींगों को	अपने	पानी में
३ तुम्हारा भाई कृष्ण श्रेणी में सर्व प्रथम बालक है।	कृष्ण	तुम्हारा भाई	है	सर्व प्रथम बालक	×	×	श्रेणी में

मिश्रित वाक्य का विग्रह

वाक्य	उपवाक्यों के भेद	योजक	उद्देश्य		विधेय				
			कर्ता	कर्ता विस्तार	क्रिया	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	विधेय का विस्तार
१ महात्मा गान्धी ने कहा।	प्रधान वाक्य		गांधी ने	महात्मा	कहा	×	×	×	×
कि लोग सदा सच बोलें।	आश्रित वाक्य	कि	लोग	×	बोलें	सच	×	×	सदा
२ जो लोग परिश्रम से अपना काम करते हैं	आश्रित वाक्य		लोग	जो	करते हैं	काम	अपना	×	परिश्रम से
वे अन्त में अवश्य सफल होते हैं।	प्रधान वाक्य		वे	×	होते हैं	×	×	सफल	अवश्य अन्त में

संयुक्त वाक्य-विग्रह

वाक्य	वाक्य भेद	संयोजक	उद्देश्य		विधेय				
			कर्ता	कर्ता का विस्तार	क्रिया	कर्म	कर्म का विस्तार	पूरक	विधेय का विस्तार
१. मानी पुरुष मर जाते हैं, पर वे अपने बचनों को नहीं छोड़ते।	मुख्य उपवाक्य	पर	पुरुष	मानी	मर जाते हैं				
	समानाधिकरण		वे	×	छोड़ते	बचनों को	अपने		नहीं
२. मैंने उसे बहुत समझाया और उसे बहुत लाभदायक बातें बताईं	सरल वाक्य	और	मैंने	×	समझाया	उसे		×	बहुत
	समानाधिकरण उपवाक्य		मैंने		बताईं	उसे		×	
			(लुप्त)	×		बातें	लाभदाय		

अभ्यास

निम्नलिखित वाक्यों का विग्रह करो :—

सिंह मर जाता है, पर वह कभी घास नहीं खाता है। सब जानते हैं कि भले संग का फल भला होता है। भारत में ऐसा कौन है जिस ने महात्मा गान्धी का नाम न सुना हो? कौन कहता है कि तुम चोर हो?

मैं देव को भली भांति जानता हूँ जो लाला किशोरी लाल का पुत्र है।

उसने कोई बुरा कर्म नहीं किया, इस लिये वह निर्भय खड़ा है।

चौथा पाठ

विराम चिन्ह

किसी भाषा को ठीक २ समझाने के लिये आवश्यक है कि वाक्यों को ठीक रीति से पढ़ा तथा समझाया जाये। जहां जितना बल डालना हो डाला जाए। इस स्थिति को विराम कहते हैं और विराम चिन्ह अलग अलग हैं। उन का ठीक रीति से प्रयोग न करने से अर्थ का अनर्थ हो जाता है। इस लिए विराम चिन्हों का ठीक २ ज्ञान परम आवश्यक है। नीचे मुख्य विराम चिन्ह दिये जाते हैं।

नाम	चिन्ह
पूर्ण विराम	।
अल्प विराम	,
अर्ध विराम	;
प्रश्न चिन्ह	?
अवतरण चिन्ह	" "
आश्चर्य चिन्ह	!
कोष्टक	( )
निर्देशक चिन्ह	—
योजक चिन्ह	-
लाघव चिन्ह	०
त्रुटि चिन्ह	^
अपूर्ण विराम चिन्ह	:—
सम्बोधन	!

१. पूर्ण विराम (।) इस का प्रयोग निम्न लिखित स्थानों में होता है :—प्रत्येक पूर्ण वाक्य के अन्त में, जैसे—अकेला चना भाड़ नहीं फोड़ सकता।

२. अल्प विराम (,) अल्प विराम नीचे लिखे स्थानों में आता है :—जहां थोड़ा ठहरना हो और एक ही प्रकार के बहुत से पद हों तथा योजक न हो। जैसे—तन, मन, धन से देश की सेवा करो।

उस मेले में छोटे-बड़े, बच्चे-बूढ़े, ऊंच-नीच, और साधु-असाधु सब तरह के लोग थे।

३. अर्ध विराम (;) यह चिन्ह अल्प विराम की अपेक्षा

अधिक विराम और एक वाक्य का दूसरे वाक्य के साथ दूर का सम्बन्ध प्रकट करने के लिये प्रयुक्त होता है, जैसे—सूर्य्य निकला; अन्धेरा मिटा।

४. प्रश्न चिन्ह (?) यह प्रश्न सूचक वाक्य के अन्त में लगाया जाता है जैसे—भाइया, क्या तुम देश के लिये आत्म बलिदान दोगे ?

५. अवतरण चिन्ह (" ") किसी की उक्ति को उसी रूप में उतारने के लिये :—सच है "अन्त भले का भला"।

६. आश्चर्य चिन्ह (!) विस्मयादि बोधक शब्दों के आगे लगता है जैसे—वाह वा ! आप ने खूब कहा।

७. निर्देशक चिन्ह (—) इस का प्रयोग वार्तालाप में यहां किसी की उक्ति प्रारम्भ हो जैसे :—परशु राम—यह धनुष किसने तोड़ा है ?

८. कोष्टक चिन्ह [( )] किसी शब्द का अर्थ स्पष्ट करने के लिये जैसे—तुम ने इस समस्या (गहरे प्रश्न) पर क्या विचारा ?

९. योजक चिन्ह (-) समस्या शब्दों के बीच में योजक चिन्ह लगाया जाता है जैसे- भाई-बहन, तन मन धन।

१०. लाघव चिन्ह (०) प्रसिद्ध शब्दों के संक्षिप्त करने के लिये लाघव चिन्ह लगाया जाता है जैसे—पं० जवाहर लाल (पंडित के लिये)।

११. त्रुटि चिन्ह (,,) लिखते समय जो पद या अंश

रह जाये त्रुटि चिन्ह लगा कर जैसे—सर्दियों में हमारा स्कूल दस बजे खुलता है।

१२. अपूर्ण विराम चिन्ह (:—) जब किसी का वक्तव्य अलग निर्देश करना हो तो अपूर्ण विराम चिन्ह लगाया जाता है जैसे—निकेतन।

१३. सम्बोधन चिन्ह (!) किसी को पुकारने में सम्बोधन का चिन्ह लगता है। जैसे—हे देव।

नवम अध्याय

पहला पाठ

(अ) मुहावरे अर्थ सहित

अंगूठा चूसना=चापलूसी करना ।
अंगारे उगलना=क्रोध में कठोर वचन कहना ।
अकल का दुश्मन=महा मूर्ख ।
अकल चकराना=समझ में न आना ।
अगर मगर करना=टाल मटोल करना ।
अग्नि में घी डालना=क्रोध को अधिक बढ़ाना ।
अन्त पाना=भेद जानना ।
अंधेरे घर का उजाला=इकलौता बेटा ।
अन्धेर मचाना=अन्याय करना ।
अन्धे की लकड़ी=एक मात्र सहारा ।
अपनी खिचड़ी अलग पकाना=सब से अलग रहना ।
अपना मुंह खोल कर हट जाना=लज्जित हो जाना ।
अपना राग अलापना=अपने मतलब की बात करना ।
अपने मुंह मियां मिट्ठू बनना=अपनी प्रशंसा आप करना ।
अपने पांव पर कुल्हाड़ी मारना=अपनी हानि आप करना ।
अरमान निकालना=मन की इच्छा पूरी करना ।
आंख उठाना=हानि पहुँचाने की सोचना ।
आंख चुराना=समय पर सहायता न करना ।
आंख लगना=सो जाना ।
आंच न आने देना=हानि न पहुंचने देना ।

आंखें चार होना=आमने सामने होना।
आंखें नीची होना=लज्जित होना।
आंखों का कांटा होना=बुरा होना।
आंखों में धूल झोंकना=धोखा देना।
आंखों में समाना=बहुत प्रिय लगना।
आंखों पर परदा पड़ना=अति घमण्ड होना।
आंखों में चर्बी छा जाना=अभिमान करना।
आंसू पी कर रह जाना=अत्यन्त दुःख में चुप चाप होना।
आकाश पाताल एक करना=बहुत परिश्रम करना।
आकाश के तारे तोड़ना=असम्भव काम करना!
आकाश पाताल का अन्तर=बहुत बड़ा भेद।
आटा गीला होना=दुर्भाग्य में फंसना।
आटे दाल का भाव मालूम होना=नष्ट का अनुभव करना।
आठ आठ आंसू रोना=बहुत रोना।
आड़े हाथों लेना=खरी खरी सुनाना।
आसमान पर चढ़ाना=अत्यधिक प्रशंसा करना।
इति श्री करना=समाप्त करना।
इधर उधर की हांकना=गप्पें करना।
इने गिने=बहुत थोड़े।
ईंट का जवाब पत्थर से देना=दुष्ट से दुष्टता करना।

[उ,ऊ] उगल देना=सारा भेद खोल देना।
उठ जाना=मर जाना।
उलटे छुरे से मुंह मूंडना=बुरी तरह लूटना।
उंगली उठाना=निन्दा करना।

दबे पांव निकल जाना=चुप-चाप निकल जाना।

दाई से पेट छिपाना=जानने वाले से बात छिपाना।

दाहिना हाथ=बड़ा भारी सहायक।

दिमाग चाटना=अभिमान करना।

दिन फिरना=अच्छे दिन आना।

दिन दुगनी रात चौगुणी=खूब उन्नति होना।

दिल की दिल में रह जाना=आशा पूरी न होना।

दूज का चांद होना=देर के बाद मिलना।

दूध की मक्खी=छोड़ने योग्य वस्तु।

दो नावों पर पैर रखना=दोनों पक्षों का सहारा लेना।

[ध] धज्जियां उड़ाना=दुर्गति करना।

धुन का पक्का=लग्न का सच्चा।

धूप में बाल सफेद करना=बिना अनुभव किये।

धोखे की टट्टी=कपट भरी वस्तु।

[न] नया गुल खिलाना=नई घटना घटना।

नमक मिर्च लगाना=बड़ा चड़ा कर कहना।

नाक काटना=अपमान होना।

नाक पर मक्खी न बैठने देना=अहसान न मानना।

नाक रखना=इज्जत रखना

नाक रगड़ना=भि[illegible]ना।

—माफ साफ इन्क

नाम कमाना=प्रसिद्धि प्राप्त करना।

नाम डुबोना=यश खो देना।

नाव पार लगाना=कार्य पूरा कर देना।

नीला-पीला=क्रुद्ध होना।

[प] पगड़ी उछालना=अपमानित करना।